# नया मन्वन्तर

## सम्पादक मण्डल

(१) श्री प्र० ना० चिंचोरे, खैरागढ़

(२) श्री के० व्यं० गडकर, ग्वालियर

(३) श्री स० भा० देशपांडे, जबलपुर

(४) श्री अमरेशचंद्र चौबे, खैरागढ़

(५) श्री ना० वि० पाठक, भंडारा

विषय-प्रवेश, वृत्तांत लेख—ख्रिस्ताब्द : १९२०, १९२१, १९२२, १९२५, १९२६, १९२७, १९२८, १९२९, १९३०, १९३२।

# नया मन्वन्तर

पण्डित विष्णु नारायण भातखण्डे द्वारा लिखित
माधव संगीत महाविद्यालय, ग्वालियर की परीक्षा एवं निरीक्षणों के वृत्तान्त

## लेखानुक्रम एवं विषय-सूची


१. विषय-प्रवेश — सम्पादकीय

२. कक्षावार वृत्तान्त एवं सूचनाएँ — सन् १९२०

सामूहिक शिक्षा के लिये पाठ्यक्रम निर्धारण का प्रारम्भिक प्रयास। प्रथम वर्ष में सोलह रागों में ११२ चीजें, द्वितीय वर्ष में १४ राग सुडौल गायकी सहित, तृतीय वर्ष में २० राग गायकी की प्रौढ़ता सहित। चार-वर्षों में तीन सौ ख्याल, डेढ़ सौ ध्रुवपद, तान-आलाप, रागों की सूक्ष्म विशेषताएँ, विभिन्न अलंकार, लय तथा रागोचित विश्रांति-स्थान, रागों के श्लोक, दोहे, सरगम, लक्षणगीत मुखस्थ करना, तंबुरा तबला मिलाना, महफिलों में गायन करना आदि। विद्यालय का दैनिक कामकाज। प्रधानाध्यापक, शिक्षक तथा संचालकों के कर्तव्य। सिखाये हुए गीत किसी न किसी पुस्तक में होने ही चाहिये। गीत-मालिका की उपयुक्तता। शास्त्रीय विषयों पर व्याख्यान, साप्ताहिक बैठकें तथा अध्यापन सम्बन्धी विभिन्न सूचनाएँ।

३. हेडमास्टर महोदय को सूचनाएँ — सन् १९२१

संगीत के शास्त्र व कला पक्ष का समन्वय, पाठान्तर, पिछले अभ्यास की पुनरावृत्ति, गायकी में परिपक्वता, वैचित्र्य, रंजकत्व, सुघड़ कंठ का बनाना, तानबाजी के मोह को मर्यादित रखना, गायन में सजीवता निर्माण करना, ध्रुवपद शिक्षा दुर्लक्षित न करना, समय-समय पर लिखित व मौखिक जाँच कराना, शिक्षकों को कक्षा के पाठ कंठस्थ रहना आदि विषयों पर सुझाव।

४. वार्षिक परीक्षा के परिणाम, वृत्तान्त तथा आगामी सत्र के लिये सूचनाएँ — सन् १९२२

प्रौढ़ और मोहक गायकी, ख्याल गायन में स्वरोच्चार, शब्दोच्चार, मुखड़ा मिलाने की रीति का महत्व। तृतीय वर्ष के अन्त तक ३० राग ख्याल, ध्रुवपद, गायकी, शास्त्र-ज्ञान सहित होने चाहिये। ज्येष्ठ शिक्षक व आमंत्रित गायकों को सुनना। कक्षाकार्य क्रमवार लिख रखना। समझदार नागरिकों को आमंत्रित करना। अनपढ़ शिक्षकों की निरुपयोगिता। सरगमें व पल्टों का स्वरज्ञान में महत्व। मुख-विकृति की ओर ध्यान देना। ज्येष्ठ शिक्षकों से सहायता लेना। तृतीय वर्ष

से ख्याल-गायन की वास्तविक शिक्षा। गला तैयार करना। अभ्यास की पुनरावृत्ति विचारपूर्वक करना। स्वरोच्चार, शब्दोच्चार, पदच्छेद, आकर्षक महफ़िली ढंग का गायन चतुर्थ वर्ष में ही तैयार हो जाना चाहिये। अपना राग आधे घन्टे तक गाने की क्षमता। अभिनवरागमंजरी का महत्व। सिखाने योग्य सभी बातें छात्रों को पंचम वर्ष में मिल जानी चाहिये।

५. **अर्धवार्षिक निरीक्षण, कक्षावार वृत्तान्त व सूचनाएँ** अप्रैल, सन् १९२५

पिछले कार्य की आवृत्ति का महत्व। अंतिम परीक्षा तक ४५ रागों की शिक्षा। तवायफ स्कूल पर सेंट्रल स्कूल का नियन्त्रण। राज्य के कलाकारों से विद्यालय को लाभ प्राप्त करना। छात्रों की अनुपस्थिति पर प्रतिबंध। वार्षिक परीक्षा में बैठने के लिये छात्रों की योग्यता का निर्धारण। क्वालिटी विफोर क्वांटिटी। लयदारी, सम पर आने की कला, कणों की सफाई, विश्रांति-स्थान, अवग्रह बदलना। सीखे हुए रागों की आवृत्ति का महत्व। फुर्तीले विद्यार्थियों को गायकी की कला विशेष रूप से सिखानी चाहिये। पंचम वर्ष परीक्षा विद्यालय की शिक्षा का सर्वोत्तम नमूना होना चाहिये। यहाँ पर कड़ाई से जाँच-परीक्षा किये बिना परीक्षा में न बैठने दिया जाय। तवायफ स्कूल पर सुझाव।

६. **वार्षिक परीक्षा के परिणाम, वृत्तान्त व सूचनाएँ** नवम्बर, सन् १९२५

कक्षा में छात्र-संख्या की मर्यादा। छोटी आयु के छात्रों की शिक्षा अनुभवी शिक्षकों द्वारा दी जाय। कार्यालय के कामकाज से छात्रों का नुकसान न हो। प्रत्येक राग में एक सरगम, एक लक्षणगीत, एक बड़ा ख्याल, दो छोटे ख्याल, एक ध्रुवपद, एक धमार, श्लोक, दोहों सहित तैयार होना चाहिये। कक्षा व्यवस्था सुविधा का प्रश्न है, शिक्षकों की ज्येष्ठता का नहीं। परीक्षा उत्तीर्ण कर लेने पर भी ज्येष्ठ शिक्षकों की सहमति से ही प्रमाण-पत्र दिये जायें। स्टैण्डर्ड सदैव ऊँचा रहना चाहिये।

दरबारी गायक-वादकों की कला का विद्यार्थियों को लाभ। बड़ौदे में की हुई व्यवस्था। छात्र व शिक्षकों की शैक्षणिक यात्राएँ, विद्या का आदान-प्रदान, गुणी लोगों को सुनने से संगीत कला का उत्कर्ष। कूप-मण्डूकता नष्ट कराना। विनय एवं पात्रता बनाये रखना। वाद्य-संगीत की कक्षाएँ सुयोग्य विद्वानों से संचालित करना। सेन्ट्रल स्कूल की शाखाएँ स्थान-स्थान पर खोलना। निकट भविष्य में संगीत की युनिवर्सिटी। संगीत संस्कृति का अटूट अंग है। विद्यालय से प्रशिक्षित छात्र सुयोग्य शिक्षक होंगे। तवायफ स्कूल का पुनर्गठन।

७. **अर्ध-वार्षिक निरीक्षण का वृत्तान्त तथा विशेष सूचनाएँ** अप्रैल, १९२६

शिक्षकों की गैरहाजिरी से छात्रों का अपरिमित नुकसान। परीक्षा में योग्यतानुसार श्रेणियाँ घोषित करना। चीजों की संख्या बढ़ाने की अपेक्षा स्वरस्थान, शब्दोच्चार, स्वरोच्चार, गाने का ढंग, ताल साधन की ओर ध्यान देना चाहिए। तानों की सुसंगतता, उन्हें स्थायी से जोड़ना, शाला के शिक्षणक्रम तथा शिक्षापद्धति में एकसूत्रता, महफ़िली रंग के गायन को सुनाना तथा छात्रों से गवाना

चाहिए। उम्मीदवार गायकों की महफिलों द्वारा शिक्षा। नोटेशन केवल तालीम मात्र है। चीजें याद करना, गले घुमाने की अपेक्षा गायन की वास्तविक कला पर ध्यान जाना चाहिए। शनिवार की बैठकों का महत्व। वरिष्ठ शिक्षकों की अन्य शिक्षकों पर निगरानी। लिखित रूप से परीक्षा प्रारम्भ हो।

८. **वार्षिक परीक्षा का विवरण सूचनाओं सहित** **नवम्बर, १९२६**

विद्यालय की उपाधि का अन्यत्र आदर। परीक्षोत्तीर्ण छात्रों के भविष्य पर सुझाव। केवल स्वरज्ञान कराने में छात्रों को प्रवेश कक्षा में लम्बे समय तक रख छोड़ना अन्याय है। सभी छात्र यथाशीघ्र कोर्स को लगा देने चाहिए। तबले के बोल पहिचान कर गायन करने का अभ्यास नीचे की कक्षा से करना इष्ट होगा। कक्षा में कम छात्र संख्या शिक्षक का दोष है। हार्मोनियम से गायन की कक्षाओं में बाधा। सुयोग्य शिक्षकों के अभाव में सितार-शिक्षा प्रारम्भ न हो। दरबारी गायक-वादकों के पास विद्यालय के प्रशिक्षित छात्र कलात्मक शिक्षा प्राप्त करने हेतु भेजना। स्कालर्शिप की व्यवस्था। विद्यालय में दरबारी गायकों के प्रदर्शन उनकी इच्छा पर न छोड़ना। तवायफ स्कूल व सेन्ट्रल स्कूल में आदान-प्रदान।

९. **वार्षिक परीक्षा का विवरण सूचनाओं सहित** **नवम्बर, १९२७**

प्रारम्भिक कक्षाओं पर ज्येष्ठ शिक्षकों की निगरानी। अनुभवी व दक्ष शिक्षक विद्यालय में रखे जायँ। शिक्षकों के रिक्तस्थान पर प्रशिक्षित स्कालरों की नियुक्ति की जाय। योग्य शिक्षकों की पदोन्नति। खर्चीला तवायफ स्कूल। वाद्य-विभाग की पाठ्यपुस्तकें।

१०. **वार्षिक परीक्षा का वृत्तान्त, आगामी वर्ष की व्यवस्था सूचनाओं सहित**

**नवम्बर, १९२८**

छात्रों की अनुपस्थिति पर कड़ा प्रतिबन्ध। साथसंगत तबला शिक्षण का एक अंग। अभ्यासक्रम पुस्तक रूप से तैयार न करने वाले तथा इच्छानुसार शिक्षा देने वाले शिक्षकों के प्रमोशन रोक दिए जायँ, सेवा से पृथक् किया जाय। हार्मोनियम के लिए भी उच्च प्रतीक के गीत हों। नृत्य की भी पुस्तकें हों। सिंधिया स्वर्ण पदक तथा रौप्य पदक की व्यवस्था। वार्षिक जल्सों में प्रमाणपत्र वितरित हों। परीक्षाफल सरकारी गजट में प्रकाशित हो। विद्यालय की कार्य-बाहुल्यता व आफिशियल विजिटरों की नियुक्ति। तवायफ स्कूल पर सुझाव। कार्यालयीन पत्र-व्यवहार शिक्षण में एक बाधा। गायकी अच्छी तैयार होने पर ही प्रमाणपत्र दिए जायँ। स्कालर-शिक्षकों की नियुक्ति हितप्रद होगी।

११. **वार्षिक परीक्षा का वृत्तान्त तथा कक्षावार सूचनाएँ** **नवम्बर, १९२९**

शिक्षकों की वेतनवृद्धि, पदोन्नति। तबला, मृदंग कक्षा की व्यवस्था। विद्यालय की शाखाएँ, पोस्ट ग्रेज्युएट कक्षा की पूर्व तैयारी। राज्य के सभी विद्यालयों के लिए संगीत का पाठ्यक्रम। शिक्षकों की अनुपस्थिति। डेमास्ट्रेशन। ग्वालियर की गायकी का पुस्तकरूप से प्रकाशन। तबला, मृदंग, हार्मोनियम की पुस्तकें। ध्रुव-पद शिक्षा का महत्व।

१२. वार्षिक परीक्षा का वृत्तांत व कक्षावार सूचनाएँ नवम्बर, १९३०

प्रिपरेटरी कक्षाओं की दुर्दशा व सुझाव । छात्रों की उपस्थिति का निर्धारण । ठेके, बोल, परन का विशेष अभ्यास । कक्षा में शिक्षकों का कर्तव्य । तालाक्षर सुनकर गाने की आदत । तीसरी कक्षा में रागसंख्या अधिक नहीं है । नीचे की कक्षा दुर्लक्षित होने पर ऊँची कक्षा में शिक्षकों का काम अकारण बढ़ जाता है । गायकी अपूर्ण होने पर प्रमाणपत्र न दिया जाय । मराठा बोर्डिङ्ग की संगीत कक्षाएँ । सितार, तबला-पखावज की शिक्षा में पर्याप्त सुधार की आवश्यकता तथा राज्य के सितार-वादकों को विद्यालय का कार्य दिए जाने पर सुझाव ।

PANDIT VISHNU N. BHATKHANDE.
B. A., L.L. B.
HIGH COURT PLEADER (RETD.)

SHANTARAM HOUSE.
MALABAR HILL.

BOMBAY. NO. 6.

924
11-1-1926

ग्वाल्हेर

मेहेरबान रावसाहेब जी. व्ही. अंबार्डेकर,
सेक्रेटरी, माधव संगीत विद्

मी मुंबईहून शुक्रवार ता. 20 रोजीं निघून येथे
दुपारीं येऊन पोहोंचलों. ता. 23 सोमवार पासून विद्यालय
उघडावयाचें होतें परंतु त्या दिवशीं किंग आर्ज यांच्या मातुश्रीच्या
सर्वत्र सुटी देण्यांत आली होती, म्हणून परीक्षा दुसऱ्या दिवश
मंगळवार ता. 24 पासून सुरू करण्यांत आली. परीक्षा ता.
चालून, आज तागायत स्कूलच्या परीक्षेने संपली.
कोणत्या वर्गांतून किती किती मुलें बसलीं व त्यांनीं क
त्या रिपोर्टवरून दिसून येईल. एकंदरीत शाळे-
तीलने चालवलें आहे असें मला दिसून आलें. विद्यालय.
मागचे हे बरेच दिवस आजारी राहिल्यामुळें व पुढें ते बाहेर
गेल्या मुळांनी काम बरेंच मागे पडले होतें. त्यांचे ऐवजी
अग्निहोत्री यांनी उमेद धरून शाळेच्या बराच प्रयत्न केला
त्या वर्गापासून नामवंत सुरां बोर्ड तयार करण्याचा प्रबंध सुरू

दिसम्बर १९२५ की वार्षिक परीक्षा के वृत्तान्त की हस्तलिपि का पत्रांक तीन
(अपनी सद्यःस्थिति में खंडित अंश नष्ट हो चुका है)

मि. बळवंतराव यांनी साऱ्या वर्गांत धुनपदें सांगण्याचें काम चांगलें केलें आहे. त्यांच्या
पद्धतीमुळे मुलांचे तईचे ज्ञान फार चांगले दृष्टीस पडत आहे. सीनियर वर्गांत त्यांना
बोलं पडत असल्यामुळें व त्यांना त्याच तालांत सहज गावयाचें असल्य , मे वेळ
असतो, हे लक्षांत घेऊन चवथ्या व पांचव्या वर्षाच्या वर्गांत धुनपदाची
दोन शिकविली तरी चालेल. ते विद्यार्थी पास झाल्यावर हवें तर पुढचें
करतील

वर्गांतून सिअरीचें शिक्षण फार काळजीनें झालें पाहिजे आहे. प्रत्येक
सिअरी तयार करवून घेतली पाहिजे. मी अशी हि योजना आतां करणार आहें की फक्त
वरच्या तीन वर्गांत "सिअरी" ची परीक्षा लेखी घेतां यावी. दोन तासांचा पेपर देऊन त्यांची
उत्तरें लेखी मुलांनी द्यावयाची. अर्थात् वार्षिक परीक्षा आतां प्रमाणें "लेखी" व "तोंडी" कर-
ण्याचा बेत आला आहे. या योजनेनें मुलांचें ज्ञान पक्कें होऊन त्यांना या विषयावर लिहितां
येऊं लागेल

मास्तरांना जाव रजा हवी तेव्हां घेतां आल्यानें वर्गांचें फार नुकसान होतें हे अनुभवास येत
आहे. त्यांत एक दोन मास्तर एकदम रजेवर गेल्यानें तर शिक्षणांत फारच हयगय होते. योग्य
कारणांशिवाय रजा मास्तरांनी घेऊं नये व शाळेच्या कामाकडे दुर्लक्ष करूं नये, असे माझें मत आहे
अशा प्रकार या महामारीत झाल्यानें मुलांचें फारच नुकसान झालें आहे

वि. ना. भातखंडे

हे. मा. स्पो. म्युझिक स्कूल:

सदर रिपोर्टमधील सर्व मास्तरांनीं लक्षपूर्वक वाचून [illegible] [illegible] किंवा त्याप्रमाणें कामाची व्यवस्था [illegible]. [illegible] चांगली करावी. या संबंधी [illegible] [illegible] करणार आहे. - [illegible]

[illegible]

अप्रैल १९२६ के अर्धवार्षिक निरीक्षण वृत्तान्त की हस्तलिपि का पत्रांक सत्रह
पत्र का खंडित अंश नष्ट हो चुका है।

# नया मन्वन्तर

शिक्षा क्षेत्र में पण्डित भातखण्डे जी का सम्बन्ध मुख्यतः तीन विद्यालयों से आया। बड़ौदा शासकीय संगीत विद्यालय, ग्वालियर का माधव संगीत महाविद्यालय तथा लखनऊ का मैरिस कालेज आफ हिन्दुस्तानी म्यूजिक उन प्रमुख विद्यालयों में से हैं, जिन्होंने पण्डित जी से प्रेरणा पाई, पितृवत् वात्सल्य पाया। उनका वर्तमान स्वरूप पण्डित जी के ही घोर परिश्रम का फल है। ग्वालियर तथा लखनऊ के विद्यालयों को तो स्वयं पण्डितजी ने ही जन्म दिया था। अपनी आयु के सत्तावनवें वर्ष से लेकर तिहत्तरवें वर्ष तक इन विद्यालयों को साल में दो-तीन बार भेंट देना उनका निश्चित कार्यक्रम हो गया था। विद्यालय के प्रारम्भिक दिनों में तो महीनों तक ग्वालियर में उनका वास्तव्य रहता था। स्व० माधवराव सिंधिया के व्यक्तिगत मेहमान के रूप में सरकारी नौतालाव गेस्ट हाउस उनका निवास-स्थान था। और उनके आदर एवं आतिथ्य में कहीं भी न्यूनता न पड़ने देने के अधिकारियों को निश्चित आदेश थे। किसी भी प्रकार से उनका समय नष्ट न हो इस लिए एक पृथक् घोड़ागाड़ी (विक्टोरिया) उनके लिए सदैव तैयार रहती थी। पण्डितजी की संगीत से संबन्धित सभी सूचनाओं पर अविलम्ब अमल करने के अधिकारियों को आदेश थे। अपने राज्य की संगीत परम्परा को पुनरुज्जीवित करने की सिंधिया महाराज को इतनी तीव्र आकांक्षा थी, कि विद्यालय के छात्रों का गायन-वादन वे समय-समय पर सुनते रहते और पण्डितजी से परामर्श करते रहते। विद्यालय की समस्त व्यवस्था अपने निजी खर्च से वे कराते थे, जो उनके जीवन के अंतिम क्षणों तक बराबर चलती रही।

इधर पण्डितजी भी अपनी शारीरिक अस्वस्थता एवं व्यक्तिगत अड़चनों की यत्किंचित् परवाह न करते हुए एक 'मिशनरी' की भाँति विद्यालय में जाकर प्रत्येक छात्र एवं शिक्षक के कार्य का अवलोकन करते, सुझाव देते, आवश्यकता पड़ने पर निर्देश देते। अधिकृत रूप से विद्यालय का किसी भी प्रकार का भार वहन न करते हुए भी उसके वास्तविक संचालक की भाँति वे सभी कार्य देखते। उनकी इच्छा अन्तिम आदेश का रूप धारण कर लेती। अपने दैनिक कार्यक्रम में संगीत विषयक सभी छोटी-बड़ी घटनाओं का क्रमवार वृतान्त लिखकर उन पर अपने विचार निर्भीकता से प्रगट करना मानों उनका नित्यकर्म ही हो गया था। माधव संगीत महाविद्यालय के अपने इन निरीक्षणों का, परीक्षाओं का वृतान्त अति विस्तृत रूप से उन्होंने लिख रखा है। जिन्हें पढ़कर ऐसा प्रतीत होता है कि विद्यालय में प्रयुक्त नूतन शिक्षा प्रणाली के यशापयश का नैतिक उत्तरदायित्व उन्होंने अपने ऊपर उठा लिया था। शैक्षणिक आवश्यकताओं की पूर्ति के अतिरिक्त विद्यालय के प्रशासन का भार भी वे उठाते रहे और समय-समय पर पथ-प्रदर्श

करते रहे। संगीत की उन्नति के लिए अच्छे गायक, अच्छे श्रोता, अच्छे व्याख्याकार, अच्छे छात्र, अच्छे शिक्षक, अच्छे प्रशासक, संक्षेप में प्रचुर संख्या में सुशिक्षित एवं निरपेक्ष सेवक अविरत रूप से बनानेवाली किसी सुदृढ़ एवं विशाल संघटना का वे निर्माण करना चाहते थे। संगीत के उज्ज्वल भविष्य की आशाएँ उन्होंने इन्हीं शिक्षण संस्थाओं पर केन्द्रित की थीं। आधुनिक पद्धति के किसी विद्यालय को जिन बातों की आवश्यकता होती है, उन सभी साहित्य-उपकरणों से सुसज्जित करने में वे सदैव तत्पर रहते। उनके सामने संगीत विषयक ऐसी कोई भी समस्या नहीं थी; जिसका उन्होंने अचूक निदान न किया हो और उसका उपाय न बताया हो। अपने समय में संगीत विद्या प्राप्त करने के लिए जो-जो भी कठिनाइयाँ उन्हें उठानी पड़ी थीं, उन सब पर कुठाराघात करना वे चाहते थे। संगीत शिक्षा को विश्वविद्यालयीन अभ्यासक्रम का सम्मान वे दिलाना चाहते थे। किसी भी विद्या की उन्नति के लिए जिस बुनियादी साहित्य की आवश्यकता होती है, वह सब उन्होंने संगीत के लिए उपलब्ध करा दिया था। स्नातकस्तर के पंच-वर्षीय अभ्यासक्रम की सफलता का अनुभव कर लेने के उपरान्त स्नातकोत्तरीय अभ्यासक्रम की योजना भी उन्होंने बना रखी थी तथा इस हेतु पर्याप्त साहित्य एकत्रित कर लिया था। गायन विषय में यथेष्ट प्रगति हो जाने पर वाद्य संगीत को सुनियंत्रित करने का उन्होंने विचार किया। विद्यालय में सिखाए जाने वाले सभी विषयों की पाठ्यपुस्तकें होनी ही चाहिए, ऐसा नियम भी बना डाला। वाद्यविभाग के शिक्षकों से आग्रह किया गया, अधिकारियों द्वारा आदेश दिए गये, वेतन वृद्धि रोक दी गयी, सेवा से पृथक् करा देने की धमकियाँ भी दी गयीं। वाद्यविभाग के एक-दो विषयों को लेकर कुछ प्रारम्भिक पुस्तकें तैयार की गयीं, परन्तु भातखण्डे जी के समान किसी अन्य के बलिष्ठ हाथों के अभाव में गरीब के गरीब ही रह गये। वाद्यविभाग की पाठ्यपुस्तकें तैयार करने के लिए उनके पास समय का अभाव था। परन्तु फिर भी क्या और कैसे करना है, इसका उत्कृष्ट चित्र उन्होंने गायक-वादकों के सम्मुख खड़ा कर दिया था। ऐसा लगता है कि स्वयं वादकों ने ही इस कार्य में रुचि नहीं ली, अन्यथा अपने वाद्यों की क्रम-वार शिक्षा के विषय में वे आज तक इतने उदासीन क्यों रहते ? उन वाद्यों की सर्वमान्य पाठ्यपुस्तकें क्यों न बनाते ? यदि इस देश में खानदानी गतों का भंडार ख्यातनामा वादकों के पास सचमुच अब भी मौजूद है तो उसे लिपिबद्ध करा कर प्रत्येक राग में १५-२० भिन्न-भिन्न शैलियों की गतें प्रकाशित करना नितान्त आवश्यक है। अन्यथा परम्परागत गीतों का आधार लेकर नई गतें बनाई जायं, जो विद्यालयों के लिए सर्वमान्य व सहज प्राप्त हो सकें। पं० भातखण्डे जी के समान धैर्य से दृढ़ संकल्प किए बिना यह कार्य संभव नहीं है।

वादन-विभाग की कमजोरी के कारण गायन विषय का क्रमिक विकास रोके रखना वे नहीं चाहते थे। नूतन शिक्षा प्रणाली से परीक्षोत्तीर्ण स्नातकों का देश में जो सम्मान हो रहा था, समाज में संगीत के प्रति जो अभिरुचि उन्होंने देखी थी; उससे वे अत्यन्त संतुष्ट हो रहे थे। ग्वालियर में आकर प्रत्येक बार कुछ न कुछ नये सुधार सुझाते और उन्हें कार्यान्वित करने के तरीके बताते। यहाँ की शिक्षा पद्धति पर उन्हें अभिमान था। वे उसे देश का सर्वोत्कृष्ट संगीत विद्यालय मानते थे। 'संगीत विश्वविद्यालय, की मूल कल्पना पं०

भातखण्डे जी की ही थी, जिसका प्रथम उल्लेख सन् १९२५ में उन्होंने ग्वालियर में किया था तथा इस कल्पना को बार-बार दोहरा कर संगीत प्रेमियों में उत्साह का मंत्र फूंक दिया था। आज जब ऐसा विश्वविद्यालय देश को मिला है तो उसे सुदृढ़ बनाने में उनके वे विचार अवश्य उपयोगी सिद्ध होंगे।

संगीत जैसे विषय में सामूहिक शिक्षा के क्षेत्र में जो सज्जन आज अथक् परिश्रम कर रहे हैं, अपनी त्रुटियों का अनुभव करते हुए भी उनका अचूक निदान नहीं कर पाते हैं, अथवा कर्त्तव्यच्युत शिक्षकों को मार्गदर्शन करने में अपने को असमर्थ पाते हैं; उनके लिए पण्डित जी की लेखनी द्वारा लिखे हुए इन वृत्तान्तों का बहुत उपयोग होगा।

संगीत की स्नातकीय परीक्षा उत्तीर्ण हो जाने का अर्थ अत्यंत सीमित होता है। सुनियंत्रित पद्धति से शिक्षण पाये हुए ये स्नातक संगीत के अमर्यादित क्षेत्रों में किसी भी सांगीतिक विषय पर योग्य दिशा से कार्यारम्भ करने के लिए सत्पात्र हो जाते हैं। अच्छे-बुरे की परख करने की उनमें क्षमता आ जाती है। अतः किसी के प्रयत्न पर भी गलत रास्ते में भटक जाना उनके लिए पहले जैसा सहज नहीं होता। स्नातक यदि ध्येयवादी हो तो साधारण अधिकार वाले गायक की सहायता से भी अपनी उन्नति कर सकता है और वही स्नातक यदि ऊँचे खानदानी उस्ताद के पास गया तो पाँच वर्ष का काम एक ही वर्ष में पूर्ण कर सकता है। सारांश यह है कि, साधारणतया संगीत की भव्य अट्टालिका के प्रवेश द्वार तक पहुँचने योग्य होता है। परन्तु दुर्भाग्यवश इन स्नातकों के सम्मुख उनके शिक्षक एवं पालक ऐसा कुछ भी आदर्श नहीं रख पाते, जिसको प्राप्त करने की इच्छा उनमें जाग उठे। अधपके स्नातक जब स्वयं शिक्षक बन जाते हैं अथवा बना दिये जाते हैं, तब तो उन विद्यालयों की तथा वहाँ के बालकों की अवस्था और भी दयनीय हो जाती है। परिणाम स्वरूप अब ऐसे भी बहुत से संगीत प्रेमी हो गए हैं जो विद्यालयीन शिक्षण पर तनिक भरोसा नहीं रखते। आदर्श रहित शिक्षक अपने छात्रों को भी आदर्श विहीन बना देता है। अपनी साधना छोड़कर घमण्डी, कर्त्तव्यच्युत एवं निरंकुश बन जाता है। विद्यालय यदि शासकीय हो तो ऐसा योग्य शिक्षक नियम, उप-नियमों की छत्रछाया में और भी अधिक निरंकुश बन जाता है और यदि गैर सरकारी हो तो अनियमित रूप से मिलने वाले अल्पवेतन की पूर्ति के लिए दिन में क्लर्की करने के बाद शाम को थकावट के कारण, स्वभावतः अन्यमनस्क रहता है। ऐसे सभी विद्यालयों में आदर्श का अभाव एक बहुत विकट समस्या बन चुकी है। संगीत में सामूहिक शिक्षा के आद्यप्रवर्तक पण्डित भातखण्डे जी के वे विचार विद्यालयों के प्रशासक, शिक्षक एवं छात्रों के सम्मुख आदर्श प्रस्तुत कर सकने में प्रेरणादायी सिद्ध होंगे। जैसे-तैसे परीक्षा उत्तीर्ण कर लेना जिनका एकमात्र उद्देश्य हो गया है, उन्हें अपनी प्रत्येक कक्षा में क्या-क्या प्राप्त करना है, इसका अनुमान हो सकेगा।

उपाधि के प्रमाणपत्र प्राप्त कर लेने पर उस प्रमाणपत्र के गौरव का सदैव रक्षण करना प्रत्येक छात्र का कर्त्तव्य है। संगीत एक ऐसी विद्या है, जिसकी परीक्षा केवल एक बार होती है। परन्तु संगीतकार की परीक्षा जीवन पर्यन्त होती रहती है। उस परीक्षा में सफल होने के लिये उनमें संगीत के प्रति आंतरिक प्रेम निर्माण हो जाना चाहिये। शिक्षकों तथा छात्रों को अपने दायित्व का ज्ञान इन वृत्तान्तों से होगा, ऐसा विश्वास है। राजाभैया

को अपनी कला के प्रदर्शन से संतुष्ट कर उनका प्रशस्तिपत्र प्राप्त कर लेने पर ही उपाधिपत्र वितरित किए जाने का पं० भातखण्डे जी का नियम यह प्रदर्शित करता है कि संगीत में गुरु तथा शिष्यों के वैयक्तिक संबंधों की नैतिकता कितनी उच्च होनी चाहिये।

प्रत्येक छात्र के लिए विद्यालय के प्रारम्भिक दिन अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। प्रारम्भ के भटके हुए जीवन भर भटकते ही रहते हैं। इन्हीं दिनों में उनमें संगीत के प्रति अनुराग उत्पन्न हो जाने पर आगे के सभी कार्य शिक्षकों के लिए सुलभ हो जाते हैं। यदि प्रारम्भिक कक्षा के शिक्षक बुद्धिमान, परिश्रमी, कल्पक एवं विद्या में पारंगत न हों तो अच्छे छात्रों का निर्माण होना कदापि सम्भव नहीं। विभिन्न साधनों द्वारा संगीत के प्रति छात्रों का प्रेम बनाए रखना उनका प्रथम कर्त्तव्य है। बिना कुछ सोचे समझे अथवा बिना पूर्व तैयारी के कक्षा में पहुँच जाना महापाप है। शिक्षकों की पदोन्नति उनकी कार्यकुशलता पर, विद्यालय में उनकी उपयोगिता सिद्ध हो जाने पर निर्भर होनी चाहिए, न कि सेवा काल पर। पण्डित भातखण्डे जी के वे विचार इस दिशा में आज की परिस्थिति में तो अत्यन्त ही महत्व-पूर्ण हैं।

संगीत एक ऐसा विषय है जिसका ज्ञान विद्यालयों के शासीवर्ग को होता ही है, यह सर्वदा सम्भव नहीं। इन विद्यालयों की आवश्यकताएं जानकर वैसे साधन उपलब्ध करा देना, उनका प्रशासन एवं शिक्षण प्रभावी बनाने के लिये आवश्यकताओं की पूर्ति करा देना शासीवर्ग का कर्त्तव्य होता है। इस दिशा में पण्डित भातखण्डे जी के लेख सदैव अनु-करणीय हैं।

संगीत एक श्रवणविद्या है। उसकी उन्नति उसके कलाकारों को श्रवण करते रहने से होती है। इस सत्य को प्रगट करते समय खानदानी पेशेवर गायक-वादकों के गुणावगुणों के प्रति पंडित भातखण्डे ने सदैव सचेत रहने की आग्रहपूर्वक प्रार्थना की है। अपनी विद्या लोगों को सुनाने के लिए उन्हें बाध्य करना चाहिए, परन्तु विद्यालय के भविष्य से संबंधित कोई भी कार्य उनको सौंप देना विद्या का अहित करना है, ऐसा भी वे निर्भीकता से कहते थे। अपनी कलाकुशलता का मोहजाल बिछाकर शिक्षार्थियों को दिशामूल कर देने के सैकड़ों उदाहरण दिये जा सकते हैं। अपनी प्रतिष्ठा जमाने के लिए विद्या का अहित करने में भी ये लोग नहीं चूकते। इनके भुलावे में न पड़ने के संबंध में पं० भातखण्डे द्वारा प्रगट किया हुआ कटु सत्य आज भी विचारणीय है।

संगीत का सुखद वातावरण समाज की उन्नति का साधन बने, अतः जहाँ पर भी वह गाया बजाया जाता है उनका स्वरूप निर्मल, विशुद्ध एवं पवित्र भावनाएँ जाग्रत करने वाला होना चाहिए; ऐसा उनका आग्रह था। तवायफों के कोठों का संगीत भी समाज में मलिन विचारों का प्रादुर्भाव करने वाला नहीं होना चाहिए। उनके ये विचार आज की परिस्थिति में अक्षरशः अनुकरणीय हैं।

मुख्याध्यापक को विद्यालय के बहुविध विकास में सहायता देने के लिए विजिटर्स, सुपरवाइज़र्स, निरीक्षक, परीक्षक, सेक्रेटरी आदि विभिन्न प्रकार के अवैतनिक पदों का निर्माण कर सेवा भाव रखने वाले संगीतानुरागी एवं स्पष्टवादी सज्जनों की उन पदों पर

नियुक्ति करने के पं० भातखण्डे के सुझाव संगीत में लोकतांत्रिक प्रणाली की आवश्यकता सिद्ध करते हैं।

सारांश में संगीत विद्यालयों की उन्नति के लिए उन वृत्तान्तों का आज भी उतना ही महत्व है जितना कि उनके लिखने के समय में था। उन पर मनन, चिंतन करते हुए विद्या को योग्य दिशा में ले जाने के सभी साधन जुटाना आज की परिस्थिति में संगीत विश्वविद्यालय का प्रमुख कर्त्तव्य है। विद्यालयों में सुयोग्य एवं कार्यक्षम शिक्षकों का अभाव नित्य की चर्चा हो चुकी है। अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण की योजना बनाई जाय, दीर्घ-कालीन तथा अल्पकालीन प्रशिक्षण केन्द्र खोले जायँ, ऐसे सुझाव बार-बार प्रस्तुत किए जाते हैं। पं० भातखण्डे द्वारा लिखे हुए ये वृत्तान्त इस दिशा में अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होंगे। ऐसे प्रशिक्षण केन्द्रों में संगीत शिक्षा के मूलभूत उद्देश्यों को लेकर उच्च शिक्षा तक विद्यालयों को, उनके प्रबन्धकों को, अध्यापकों को क्या-क्या करना चाहिए; इसकी जानकारी पर आधारित एक पृथक् एवं क्रमवार अभ्यासक्रम तैयार किया जा सकता है।

संक्षेप में संगीत पर खर्च होने वाले एक-एक पैसे पर दृष्टि रखते हुए उसका अधिक से अधिक उपयोग किया जा सके, ऐसा सभी कुछ करने के लिए पं० भातखण्डे जी के उन विचारों पर गंभीरता से चिन्तन किया जाना इस गरीब देश के लिए आज तो अत्यावश्यक हो गया है। संगीत जगत् में पं० भातखण्डे जी के ये विचार निरंतर प्रेरणादायी सिद्ध होंगे, ऐसा विश्वास है।

इस कार्य के लिए इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ को उन लेखादि की फाइलें प्राप्त करा कर मध्यप्रदेश के शिक्षा-विभाग ने महान् उपकारी एवं प्रशंसनीय कार्य किया है। माधव संगीत महाविद्यालय, ग्वालियर के निरीक्षण एवं परीक्षा वृत्तान्तों की ऐसी कुल दस फाइलें विश्वविद्यालय ने चार वर्ष पूर्व जब प्राप्त कीं, तब उन फाइलों की अवस्था एकदम जीर्णशीर्ण थी। बहुत-से पत्रादि दीमक ने नष्ट कर दिए थे। उन्हें यथा-संभव पुनर्ग्रंथित कर खण्डित अंशों की पूर्ति की। वृत्तान्तों में स्थान-स्थान पर विभिन्न व्यक्तियों के नामों का उल्लेख था। संपादक मण्डल ने ऐसे प्रायः सभी नामों का उल्लेख न करते हुए लेखों की मौलिकता सुरक्षित रखने का श्रद्धापूर्वक प्रयत्न किया है। जहाँ पर भी नामों का निर्देश रखा गया हैं वह लेखों का भावार्थ समझने के लिए आवश्यक प्रतीत होने के कारण ही है। मूल लेख मराठी में हैं। उनके भाषान्तरण में यत्र-तत्र दोष रहे हों तो पाठक क्षमा प्रदान करेंगे—ऐसी आशा है।

मध्यप्रदेश में ग्वालियर पण्डित भातखण्डे जी की कर्मभूमि रही है। प्रदेश भर के संगीत का आज का हरा-भरा उद्यान भातखण्डे जी की ही योजनाओं का फल है। संगीत सम्राट् तानसेन ने मध्यप्रदेश को गौरवान्वित किया तो पण्डित भातखण्डे जी ने उसे शिक्षा के क्षेत्र में सबका अगुआ बना दिया। सारे राष्ट्र को उसका संगीत साक्षात् भरत के रूप में पुनः एक बार प्रदान किया। उनके इन अनन्त उपकारों से अंशतः ऋणमुक्त होने की इच्छा से शिक्षा-विभाग का सहाय्य लेकर किए हुए संगीत विश्वविद्यालय के ये अल्प प्रयास संगीत की उन्नति में सफल हों, यही एक मात्र अभिलाषा है।

—सम्पादक

## पं० भातखण्डे द्वारा लिखित परीक्षा एवं निरीक्षणों के वृत्तांत

# कक्षावार वृत्तान्त एवं सूचनाएँ

### सन् १९२०

**केवल शिक्षकों के लिए**

**प्रथम वर्ष** : इस विद्यालय के प्रथम वर्ष के अभ्यास में पच्चीस राग रक्खे गये थे। इतने सब राग यथायोग्य रीति से पूर्ण हो जावेंगे, ऐसी उम्मीद नहीं थी। परन्तु ऐसी संगीत प्रिय भूमि के बालकों में सुरीलापन सम्भव है, यह समझ कर केवल प्रयोग की दृष्टि से इतने राग अभ्यासक्रम में रख दिए थे। वर्ष के अन्त में ऐसा ज्ञात हुआ कि शिक्षकों ने बड़े प्रयत्न के उपरान्त सोलह राग तैयार करवाए। वे भी जैसे होने चाहिए वैसे नहीं हुए। प्रत्येक राग में दो सरगम, एक लक्षणगीत, एक गीत, दो ख्याल तथा एक ध्रुवपद—ऐसी सात-सात चीजें मुझे चाहिए थीं। सोलह रागों में इस प्रकार ११२ चीजें होनी चाहिए थीं। उतनी चीजें थोड़े ही विद्यार्थियों ने की हैं, ऐसा पाया गया। प्रथम वर्ष के अन्त में स्वरज्ञान अच्छा हो जाना चाहिए था। विद्यार्थियों का वह नहीं हुआ। विद्यार्थियों की उपस्थिति पर अधिक ध्यान देना चाहिए। प्रथम व द्वितीय कक्षा का काम ठीक नहीं हुआ। लड़कों के अभ्यास के विषय में निम्न कठिनाइयाँ बताई गईं :

(१) लड़कों का प्रधान विषय न होने के कारण वे ध्यान नहीं देते।
(२) शीत और ग्रीष्म काल में दो-दो मास तक पालकों ने उन्हें विद्यालय में नहीं आने दिया।
(३) नगर में प्लेग, इन्फ्लुएन्ज़ा इत्यादि रोग फैले थे।
(४) शिक्षकों की बीमारी और उनका छुट्टी पर जाना।
(५) शिक्षकों को पढ़ाने के अनुभव की कमी।

कुछ भी कारण हों सोलह राग पढ़ाए गए। छः महिने सुर लगाने में गए ऐसा भी बताया गया।

**द्वितीय वर्ष** : इस वर्ष नए राग चौदह ही लिए गए हैं। जबकि पाठ्यक्रम में बीस रक्खे गए थे। ज्येष्ठ विद्यार्थियों को स्वरज्ञान रागज्ञान अच्छा हुआ। परन्तु प्रत्येक राग में सात चीजें सभी लड़कों की तैयार नहीं थीं। ध्रुवपद संतोषजनक रीति से नहीं हुए। अभी तक लड़कों के गायन में रसिकता प्रतीत नहीं हुई। कुछ लड़कों ने चीजें अच्छी सुनाईं। पर ऐसे लड़कों का शास्त्रीय-ज्ञान कम दिखा। दूसरी कक्षा में विद्यार्थियों को कोई

भी स्वर पढ़ने आना चाहिए । बताया हुआ कोई भी स्वर-समुदाय तुरन्त गाकर दिखाना चाहिए । उपरोक्त दोनों बातें पर्याप्त मात्रा में ठीक प्रतीत हुई । मात्रा-विभागों के अनुसार सुडौल रीति से ख्याल कैसा गाना चाहिए, यह शिक्षकों ने स्वयं उत्तम गाकर विद्यार्थियों को सुनाना चाहिए । एक ही पंक्ति प्रत्येक बार विभिन्न प्रकार से कैसी गाई जाती है, यह भी सिखाना चाहिए । गायन में लड़कों को रुचि उत्पन्न हो यह अपना कर्त्तव्य है । उसे केवल नीरस मजदूरी न समझ कर उनका गायन रंजक प्रतीत होना चाहिए । दूसरी कक्षा के लड़कों की तैयारी अच्छी है ।

कौन-सा गीत किस लय में गवाना उचित है, यह शिक्षक पर निर्भर है । ख्याल की उचित लय शिक्षकों ने निश्चित करनी चाहिए । गायन आरम्भ करने के पहले सा, ग, प, सां कैसे लगाना यह लड़कों को बताना चाहिए । इस कक्षा में अब हाथ से ताली पीटकर, उँगलियों से मात्रा गिनने की आवश्यकता नहीं । वह सारा मन में हो जाना चाहिए । दूसरे वर्ष के लड़कों को शिक्षक ने योग्य मार्ग पर लगाना चाहिए । उनमें गुरुभक्ति निर्माण होनी चाहिए । गुरु के प्रति लेशमात्र भी अश्रद्धा मन में न होनी चाहिए ।

**तृतीय वर्ष** : इस वर्ष में शिक्षकों को बहुत महत्व के कार्य करने हैं ।

(१) शिक्षकों ने बहुत से स्वर-समुदाय गाना और विद्यार्थियों ने उनकी सरगम करना । एक लड़का गावे और दूसरा उसकी सरगम करे ।

(२) शिक्षकों ने सरगम के केवल अक्षर बताना और लड़कों ने वे सब गाकर दिखाना ।

(३) लड़कों के गाने में प्रौढ़ता लाना व उनका गाना श्रोताओं को रुचिकर लगे, ऐसा करना । उच्चार—"बोल कहना" यह एक बड़ी विद्या है ।

(४) शिक्षकों ने शीघ्र तान लेना और विद्यार्थियों से उसका अनुकरण करवाना । ऐसा करते समय जानबूझकर स्वयं गल्तियाँ करना और उनमें लड़कों से सुधार करवाना । ख्याल के वैशिष्ट्य पूर्ण अलंकारों की ओर लड़कों का ध्यान आकर्षित करना ।

(५) रागों का मिश्रण कर लड़कों से उन्हें पृथक्-पृथक् करवाना ।

(६) सप्ताह में एक बार शिक्षकों ने अच्छा गायन लड़कों को सुनाना और लड़कों ने उसे ध्यान पूर्वक सुनना ।

(७) लड़कों के गले तानों के लिए उपयुक्त कराना । उनको आकार की जोरदार तानें पढ़ाना । तानों की तैयारी में आरोह-अवरोह की तानें अच्छी जोरदार होने के लिए इकार, उकार का भी आवश्यकतानुसार प्रयोग किया जाय ।

(८) प्रथम सम्पूर्ण तानें पढ़ाई जायें और उन पर बने उतनी मेहनत ली जाय ।

(९) फिर उनके टुकड़ों को विभिन्न प्रकार से क़ैद लगाकर गवाना चाहिए ।

(१०) घर में मेहनत करने की प्रवृत्ति लड़कों में अपने आप निर्माण होनी चाहिए ।

(११) सा रे ग म प ध नी सां यह रेला कम से कम चार या पाँच थाटों में तैयार करवाना चाहिए । जैसे यमन, भैरव, भैरवी, बिलावल, काफ़ी इत्यादि । फिर छोटी-छोटी तानों की ओर ध्यान दिया जाय । तत्पश्चात् एक-एक स्वर आरोह-अवरोह में कम करके चार-चार पाँच-पाँच स्वरों के टुकड़े अच्छे तैयार करवा लिए जायें ।

## ग्वालियर संगीत विद्यालय के तृतीय वर्ष का पाठ्यक्रम

### नये राग २०

१—गौरी, २—पूर्या, ३—मारवा, ४—जेत, ५—मालवी, ६—तिलककामोद, ७—जयजयवंती, ८—अडाणा, ९—शाहाना, १०—सुहा, ११—सुघराई, १२—बिंदरावनी सारंग, १३—शुद्धसारंग, १४—मियाँ की मल्लार, १५—मेघमल्लार, १६—गौड़मल्लार, १७—विभास (मारवा थाट), १८—जोगिया, १९—देवगिरी, २०—जेतश्री ।

**विशेष सूचनाएँ शिक्षकों के लिए :**

क—श्लोक, सरगमें, दोहे, लक्षणगीत, गीत और ख्याल आदि शिक्षकों ने विद्यार्थियों से इस वर्ष भी करवाना है, ऐसा पृथक् कहने की आवश्यकता नहीं ।

ख—सिखाए हुए रागों में नये ख्याल व नए ध्रुवपद लाल स्वर में पढ़ाए जायँ । चार वर्ष में ३०० ख्याल व १५० ध्रुवपद करना है ।

ग—सप्ताह में एक बार शिक्षक ने अपना गायन छात्रों को सुनाना चाहिए तथा अपने साथ पीछे बैठाकर उन्हें गाने देना चाहिए । स्वयं छोटी-छोटी तानें गाकर उनका अनुकरण करने के लिए उन्हें उत्साहित करना चाहिए ।

घ—शास्त्र पर छोटे-छोटे व्याख्यान देना, विभिन्न विषयों पर प्रश्न पूछते रहना और इस प्रकार लड़कों का ज्ञान दृढ़ करना चाहिए ।

ङ—स्वयं छोटे-छोटे टुकड़े गाकर लड़कों से उसकी सरगम कराना । बोर्ड पर किसी राग का स्वरप्रस्तार लिखकर उसमें जानबूझकर की हुई त्रुटियाँ उनसे ठीक करवाना ।

च—किसी सरल राग का विस्तार टुकड़ों-टुकड़ों में गाकर उनकी पुनरुक्ति लड़कों से यथामति करवाना ।

छ—नया गीत प्रारम्भ में ही गाकर न दिखाते हुए केवल बोर्ड पर लिखकर स्वर-लिपि की सहायता से लड़कों से उसे गवाना चाहिए । त्रुटियों का सुधार उनसे ही करवाते हुए, उचित प्रसंग पर उन्हें प्रोत्साहित करते हुए सम्पूर्ण गीत उन्हें उत्तम रीति से गाकर सुनाना चाहिए ।

ज—रागों के छोटे टुकड़े गाकर उन्हें पहचानने के लिए लड़कों से कहना तथा उनके उत्तरों के कारण पूछना । गलतियाँ होने पर उन्हें समझाना ।

झ—लड़कों की हाजिरी रोज लेना । गैरहाजिर रहने पर पालकों की चिट्ठी मँगवाना ।

ञ—लड़कों का लिखित कार्य नियत करा दिया जाय और कक्षा में अंक देने का क्रम आरम्भ किया जाय ।

ट—वर्षान्त में इन अंकों, उपस्थिति तथा सुव्यवहार का परिणाम छात्रवृत्ति प्राप्त करने पर होगा, ऐसी समझायश विद्यार्थियों को स्पष्ट रीति से दी जाय ।

ठ—जिन ज्येष्ठ विद्यार्थियों की इच्छा शुक्रवार या शनिवार को शिक्षकों की बैठकों में आने की होगी, उनको बारी-बारी से विशेष आपत्ति न लेते हुए आने देना चाहिए ।

ड—लड़कों को तम्बूरा व तबला मिलाना सिखाना चाहिए ।

ढ—लड़कों को कभी-कभी अपने घर गाने के लिए बुलाकर पहले उन्हें गाने दिया जाय। ऐसे प्रसंगों पर दो-चार इष्टमित्रों को आमंत्रित किया जाय।

ण—प्रत्येक माह में भाऊसाहब परचुरे तथा रावसाहब भिड़े को कक्षा का कार्य दिखाने के लिए तीन-चार बार निमंत्रित कर लिखित अभिप्राय प्राप्त करना।

त—प्रति माह प्रत्येक कक्षा में क्या कार्य हुआ, उसकी तफसील उनके लिए विशेष रूप से तैयार किए हुए पुस्तक में लिखकर सचिव महोदय के हस्ताक्षर प्राप्त करना।

थ—कभी-कभी लड़कों के माता-पिता को शिक्षण दिखाने के लिए बुला कर लड़कों की अनुपस्थिति उनके ध्यान में लाना।

द—प्रत्येक शिक्षक ने कम से कम एक घंटा गाने का अभ्यास नियमित रूप से घर पर करना चाहिए। अपने विद्यार्थियों के मन में अपने प्रति सदैव आदर हो, यह बात ध्यान में रखनी चाहिए।

ध—नया राग सिखाते समय तत्सम्बन्धी जानकारी "हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति" में से पढ़ कर समझाना तथा प्रत्यक्ष उदाहरण गले से गाकर सुनाना।

न—बीच-बीच में नगर के समझदार व्यक्तियों को तथा सरदार, जागीरदारों को विद्यार्थियों का कार्य अवलोकन करने के लिए आमंत्रित कर उनका योग्य सम्मान करना तथा उनका लिखित अभिप्राय प्राप्त करना।

प—श्रीमंत सरकार के सामने लड़कों को उपस्थित करने का प्रसंग आने पर प्रत्येक बार नये-नये गीत रचकर सिखाना और गवाना चाहिए। ऐसे समय में भाऊसाहब व रावसाहब की सहायता लेनी चाहिए। ऐसे बहुत से गीत सदैव तैयार रखने चाहिए।

फ—तृतीय वर्ष में दस-बीस लड़के अच्छे ढंग से तथा सहज रीति से गा सकेंगे, ऐसी महत्वाकांक्षा शिक्षकों में होनी चाहिए। एक राग १५-२० मिनट गाते आना चाहिए, ऐसा ध्येय होना चाहिए।

ब—माह में कम से कम दो पत्र मुझे लिख कर सारी बातों से अवगत कराया जाय। परन्तु इस सम्बन्ध में मेरा ऐसा कोई आग्रह नहीं है। शिक्षक यदि चाहें तो मुझे लिख सकते हैं।

भ—कक्षा में भाषण देते समय सदा संगीतशास्त्र की चर्चा, उदाहरणार्थ—रागों की परस्पर भिन्नता, उनकी पकड़, उनके महत्वपूर्ण अंश, इतिहास इत्यादि विषयों पर ही होनी चाहिए। प्रति-दिन कुछ न कुछ नया सीखने की इच्छा विद्यार्थियों में बनी रहनी चाहिए। अनावश्यक ऐसी कुछ भी बातें न बोलनी चाहिये।

म—लड़कों के साथ कठोर शब्दों का प्रयोग न किया जाय। उनसे प्रेम का व्यवहार करते हुए ही शिक्षक का प्रभाव उन पर रहना चाहिए। विद्यालय में लड़के न आना मुख्यतः शिक्षकों की योग्यता-अयोग्यता पर ही निर्भर रहता है। लड़कों की बीमारी में स्वयं जाकर उनकी पूछताछ करने से प्रेम बढ़ता है और वे भी वैसा ही व्यवहार करने लगते हैं। इससे प्रेम बढ़ेगा।

य—मैं यहाँ उपस्थित हो जाने पर गत सभी महिनों की रिपोर्ट मेरे समक्ष रखनी चाहिए। सारांश अपने महाराज के विद्यालय की कीर्ति देश भर में जल्द से जल्द कैसी फैलेगी,

इसके प्रति जागरूक रहकर इसी में अपनी इति-कर्तव्यता समझनी चाहिए। अपने प्रयत्नों के परिणामों की ओर बाहर के अनेक लोगों का ध्यान लगा हुआ है। अपने को यहाँ यश मिलने पर वे अपने अनुयायी हो जावेंगे।

र—विद्यालय के सुधार संबंधी विचार प्रथमतः शिक्षकों की शुक्रवार की बैठक में करते हुए सूचनाएँ सचिव महोदय के सम्मुख रखनी चाहिए।

ल—प्रधानाध्यापक पर सारी शाला की जिम्मेदारी है। प्रत्येक कक्षा की शिक्षा, विद्यार्थियों की उपस्थिति तथा शिक्षकों के नियमित रूप से आने जाने पर उनका ध्यान रहना चाहिए। चाहे जिस कक्षा में किसी भी समय जाकर लड़कों को प्रश्न पूछने का अधिकार उनको है।

व—सभी कक्षाओं में ध्रुवपद पढ़ाना प्रधान अध्यापक की सुविधानुसार होगा। वह उनका प्रमुख विषय है।

श—विद्यालय रात्रि के ठीक आठ बजे तक खुला रहना चाहिए।

ष—प्रत्येक शिक्षक के पास अभ्यासक्रम के सभी गीत स्पष्ट लिखे हुए होने चाहिए। उनको कण्ठस्थ रखना इष्ट है। पूरे वर्ष का अभ्यास क्रम कार्यारम्भ के प्रथम सप्ताह में तैयार हो जाना चाहिए। सिखाए हुए अन्य गीत, ख्याल आदि किसी न किसी पुस्तक में होने चाहिए।

स—द्वितीय वर्ष के अन्त में कम से कम सौ ख्याल व पचास ध्रुवपद पढ़ाना चाहिए। गीतमालिका में आए हुए ख्याल-ध्रुवपद लड़कों के लिए घर पर समझकर याद करने में सुविधा होगी। तान, आलाप क्रमिक पुस्तक मालिका भाग २ के साथ सिखाने पर ठीक होगा। समझकर गला तैयार करने में उनका बहुत उपयोग होगा।

ह—ग्वालियर में बाहर से यदि कोई भी गायक-वादक आया, तो उसे आग्रह पूर्वक अपनी शुक्रवार-शनिवार की बैठक में बुलाकर उसका गायन रखने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। ऐसे प्रसंगों पर सचिव-महोदय को प्रथम सूचना देनी चाहिए। सभी निश्चित हो जाने पर ज्येष्ठ विद्यार्थियों को सुनने का अवसर देना चाहिए।

वि. ना. भातखंडे

परीक्षक

# हेडमास्टर महोदय के सूचनार्थ

## सन् १९२१

इस वर्ष (१९२१) की परीक्षा में निम्न बातें ध्यान में आईं। लड़कों ने थियरी का महत्व अभी भी ठीक प्रकार से नहीं समझा है। इसकी ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। रागों की परस्पर भिन्नता पर कक्षाओं में चर्चा करते हुए थियरी पक्की करानी चाहिए। पिछले दो वर्षों का काम लड़के भूलते जा रहे हैं। यह तो अत्यन्त असन्तोष-कारक सिद्ध होगा। इस वर्ष विशेष रूप से राग कम रखे गए थे। पिछला काम नित्य दोहराया जाकर तैयार होगा, ऐसी मुझे आशा थी।

लड़कों के गायन में अभी भी परिपक्वता उत्पन्न करने की ओर ध्यान नहीं दिया गया है। उसमें वैचित्र्य लाने की ओर ध्यान देना चाहिए। केवल स्वरलिपि पढ़कर रंजकत्व नहीं आता। आवाज लगाना, योग्य विश्रान्ति लेना, ख्याल में विभिन्न मुखड़ों सहित सम पर आना यह सब ज्ञात कराना आवश्यक होता है। गायकी की ओर अभी से ही ध्यान जाना चाहिए।

प्रथमतः आलाप तानें आकार में गवाकर, तत्पश्चात् गीत में जोड़ देने के लिए मैंने कहा था। ऐसा कम से कम अब तो प्रारम्भ करना ही चाहिए। गायन में जो निर्जीवता प्रतीत होती है वह दूर की जाय।

श्लोक तथा दोहे याद कराने की ओर ध्यान दिया जाय। उनका भावार्थ अच्छा मालूम होना चाहिए।

जल्द तान लेने के मोह में पड़ कर अनेक लड़कों ने अपने गले बिगाड़ डाले हैं। जबालंकार उत्तम रीति से साधे बिना तानें अच्छी तरह नहीं जमेगीं, ऐसा मैंने कहा ही था। इसी कारण से तानें इतनी द्रुत लेने की आवश्यकता नहीं। वह लेते समय कुछ लड़के बेसुरे होते हैं। इस ओर ध्यान दिया जाय।

ध्रुवपद सभी लड़कों के तैयार नहीं थे। ऐसा होना ठीक नहीं है।

अब प्रति माह अथवा दो माह के बाद लड़कों की परीक्षा लिखित व मौखिक ली जाय। इस परीक्षा का परिणाम रिकार्ड में रखा जाय। इनके अंक वार्षिक परीक्षा के समय विचारार्थ रहेंगे तथा उन पर छात्रवृत्ति भी निर्भर रहेगी।

तृतीय कक्षा में ध्रुवपद शिक्षण का दायित्व श्रीमान् हेडमास्टर महोदय पर रहेगा। ख्याल की शिक्षा दो ज्येष्ठ शिक्षकों द्वारा दी जाय। यही शिक्षक बीच-बीच में निम्न कक्षाओं में जाकर वहाँ ख्याल ध्रुवपदों की शिक्षा ठीक है अथवा नहीं, यह देखें।

शिक्षकों को अपनी कक्षा का अभ्यास कण्ठस्थ रहना चाहिए। यदि न हों तो इसी माह में ही तैयार कर लें। शिक्षकों का कोर्स तैयार है अथवा नहीं इस बात को हेडमास्टर देखें। जिनका तैयार न हो उन्हें चेतावनी दें।

कक्षाओं में जाकर वहाँ थियरी कैसी पढ़ाई जा रही है यह भी वे देखें तथा यदि संभव हो तो कक्षाओं में स्वयं व्याख्यान भी दें। साप्ताहिक गायन के दिनों पर ज्येष्ठ विद्यार्थियों को उनकी सुविधानुसार अवश्य बुलाया जाय तथा गायन में ध्यान रखने योग्य बातें उदाहरणों सहित समझाई जायें।

वि. ना. भातखंडे

Examiner

# वार्षिक परीक्षा के परिणाम एवं सूचनाएँ

## सन् १९२२

### वृत्तांत

इस वर्ष की वार्षिक परीक्षा के परिणाम, तत्संबन्धी मेरी सूचनाएं व मेरा मत प्रस्तुत करता हूँ, जो इस प्रकार है :—

इस वर्ष परीक्षा के लिए कुल पाँच कक्षाएँ उपस्थित थीं। जिनमें चतुर्थ वर्ष कक्षा के अर्थात् उच्च कक्षा के दो विभाग थे। जिनमें आठ और छः ऐसे कुल चौदह लड़के थे। इस कक्षा के लड़के सर्वसाधारण दृष्टि से अच्छे तैयार हैं, तथापि गायकी जितनी प्रौढ़ और मोहक होनी चाहिए उतनी प्रतीत नहीं हुई। लड़कों को अच्छा गायन सुनवाने की व्यवस्था की जाय, ऐसी सूचना मैंने अपनी पिछली रिपोर्ट में की थी। इस ओर शिक्षकों का पर्याप्त ध्यान गया हुआ प्रतीत नहीं होता। लड़कों को अभी भी ढंग से ख्याल गाना नहीं आता। उनके स्वरोच्चार व शब्दोच्चार की ओर पर्याप्त ध्यान दिया गया प्रतीत नहीं हुआ। तान लेने की रीति व उसे पूर्ण करते हुए मुखड़ा मिलाने की रीति मँजी हुई प्रतीत नहीं हुई। लड़के कक्षा में नियमित रूप से नहीं आते, ऐसा शिक्षकों का कहना है। यह दोनों कक्षाएँ चार वर्ष की अवधि को देखते हुए अधिक तैयार होनी चाहिए थीं, ऐसा मैं समझता हूँ।

तृतीय वर्ष की कक्षा के लड़के अपेक्षानुसार तैयार नहीं हो पाये। ख्याल व ध्रुवपद जितने चाहिए थे, उतने नहीं हो पाये। सम्पूर्ण अभ्यासक्रम श्लोक दोहों सहित मुखोद्गत नहीं था। तानों का काम बहुत पिछड़ा हुआ दिखाई दिया। तृतीय वर्ष अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। इस वर्ष की कक्षा में लड़कों के गले अच्छे तैयार होने चाहिए। स्वर स्थान, लय-ताल का ज्ञान उत्तम होना चाहिए था। इन बातों में बहुत त्रुटियाँ दिखाई दीं। जिस कारण ज्येष्ठ शिक्षकों के काम की जिम्मेदारी निष्कारण अधिक बढ़ गई। तृतीय वर्ष के अन्त तक लड़कों को तीस राग भलीभाँति आने चाहिए व उनके ख्याल सुनने योग्य होने चाहिए। लड़कों का शास्त्र-ज्ञान अच्छी तरह हो जाना चाहिए। इस कक्षा में लड़के बहुत ही कम होने के कारण कार्य अच्छी तरह हो सकता था।

(१) इन्फेन्ट क्लास (प्रिपरेटरी क्लास)···को दिया जाय। इस कक्षा में मुख्य उद्देश्य लड़कों को स्वरज्ञान करा देना है। जो लड़के तैयार होंगे उनको प्रथम कक्षा में भेज दिया जाय। यह कक्षा कैसी चल रही है, इस ओर हेडमास्टर ध्यान दें। इस कक्षा में नियमित अभ्यासक्रम की चीजें पढ़ाई गईं तो अच्छा ही है। इस कक्षा पर ज्येष्ठ शिक्षकों

की सदा दृष्टि रहनी चाहिए । और कक्षाध्यापक को उनकी सम्मति से चलना चाहिए। हेडमास्टर की देखरेख जितनी अधिक रहेगी, उतना अच्छा।

इस वर्ष हेडमास्टर महोदय को जान बूझकर पृथक् कक्षा नहीं दी है। इनका मुख्य कार्य सारे विद्यालय पर देखरेख रखना है। शाला अभ्यासक्रम पूर्ण होने की जिम्मेदारी उन पर है। किसी भी शिक्षक का कार्य अपूर्ण रहा तो उसका जवाब हेडमास्टर को देना पड़ेगा। इस देखरेख के अतिरिक्त हेडमास्टर साहब सब कक्षाओं में ध्रुवपद सिखावें। सभी कक्षाओं में उन्होंने प्रत्येक सप्ताह में एक बार जाकर ध्रुवपद पढ़ाना चाहिए। शिक्षकों की बैठकों के दिन उन्होंने निश्चित कर देना चाहिये। हेडमास्टर को विद्यालय का निरीक्षण प्रत्येक माह में करना चाहिए और उस समय भाऊसाहब को बुलाना चाहिए। निरीक्षण का वृत्तांत संक्षेप में लिख कर उस पर भाऊसाहब का अभिप्राय लेना चाहिए। वृत्तांत में कौन-सा काम हुआ और कौन-सा बाकी रहा; यह स्पष्ट रूप से और क्रमवार लिखा जाय।

शिक्षकों की शनिवार की बैठक पहले की ही तरह होती रहे। हेडमास्टर साहब बीमार हों तो भी अन्य शिक्षकों ने उपस्थित रहकर बैठक चालू रखनी चाहिए। इस बैठक में ऊपर की तीन कक्षाओं को उपस्थित रहने की आज्ञा दी जाय। ऐसी बैठकों का उद्देश्य लड़कों को मुख्य रूप से गाना सुनाना है। बाहर के प्रतिष्ठित लोग आयें तो कोई बात नहीं। लड़कों की शनिवार की बैठक में बाहर के समझदार व्यक्तियों को बुलाना इष्ट होगा। उनकी दी हुई उपयुक्त सूचनाओं की ओर शिक्षक अवश्य ध्यान दें। बाहर के अन्य गायकों की कला लड़कों को सुनने का लाभ जितना अधिक मिले, उतना अच्छा। इस ओर शिक्षकों का ध्यान अवश्य रहे।

प्रथम वर्ष के दो विभाग परीक्षा में सम्मिलित हुए थे। उनमें से एक कक्षा श्री·····की थी। इस कक्षा में यद्यपि सारा अभ्यास पूर्ण नहीं हो पाया फिर भी बहुत से लड़कों को स्वरज्ञान वा तालज्ञान हो गया था। किन्तु शास्त्र का ज्ञान थोड़े ही लड़कों को था। चीजें गाने की रीति जैसी चाहिए, वैसी सधी प्रतीत नहीं हुई। फिर भी लड़के होनहार देखे गए। सरगमों और चीजों में छोटी-छोटी तानें जोड़ी जातीं, तो अच्छा होता। अभ्यासक्रम पूरा न होने का कारण शिक्षकों की अनुपस्थिति प्रतीत होता है।

शिक्षकों की अनुपस्थिति के कारण लड़कों का नुकसान होना इष्ट नहीं। परन्तु हेडमास्टर ने वरिष्ठ अधिकारी के रूप में दूसरी योग्य व्यवस्था क्यों नहीं की, यह समझ में नहीं आता। इस कक्षा के अभ्यासक्रम का बहुत-सा भाग अभी भी शेष है।

प्रथम वर्ष का दूसरा विभाग श्री·····का था। इसमें लगभग बारह विद्यार्थी परीक्षा के लिये थे। इस विभाग का कार्य बहुत थोड़ा हुआ था। अभ्यासक्रम व शास्त्रीय ज्ञान कुछ नहीं दिखाई दिया। लड़कों का यह वर्ष व्यर्थ गया, ऐसा कहना पड़ेगा। यह कक्षा केवल इन कक्षाध्यापक के भरोसे पर नहीं चलेगी। लिखने-पढ़ने के अभाव में उनका कक्षा में शिक्षा देना सम्भव न होगा। इस कक्षा के कुछ विद्यार्थियों का स्वरज्ञान अच्छा था। उतना

दूसरे लड़कों का नहीं था। बहुत-से लड़कों के कण्ठ मधुर थे। यदि उनकी ओर योग्य ध्यान दिया गया तो उनमें से कुछ लड़के अच्छे गायेंगे।

प्रथम वर्ष कक्षा श्री·····को दी जाय। कक्षा में कुछ लड़कों के गले बहुत मधुर हैं और उनको स्वरज्ञान भी हो रहा है। इस कक्षा में प्रारंभ में दस थाटों के राग सिखाए जायँ। प्रत्येक राग में सरगम, लक्षणगीत, दो ख्याल और एक ध्रुवपद पढ़ावें। दूसरी क्रमिक पुस्तक में लिखा हुआ शास्त्रीय ज्ञान पढ़ावें। सरगमें सिखाते समय नये-नये स्वरों के पलटे बनाकर सिखावें और वे ही फिर आकार में गवा लें। लड़कों से प्रेम का वर्त्ताव रखें। वे शाला छोड़कर न जायँ, इस ओर ध्यान दिया जाय।

द्वितीय कक्षा के लड़के श्री·····के पास ही रहने दिये जायँ। उनके अभ्यासक्रम के राग तो सिखाए जा चुके हैं, परन्तु अभी अच्छी तरह तैयार नहीं हुए हैं। उनमें चीजें कम हुई हैं और कुछ लड़कों का स्वर व ताल ज्ञान अच्छा नहीं हुआ है। स्वर स्थानों पर अधिक परिश्रम की आवश्यकता है। इस ओर संबंधित शिक्षक को ध्यान देना चाहिये। अभ्यासक्रम पूर्ण हो जाने पर ज्येष्ठ शिक्षकों ने यह काम देख लेना चाहिये। चीजों का चयन ज्येष्ठ शिक्षकों द्वारा किया जाय। सरगम व चीजें पढ़ाते समय छोटी-छोटी तानें सिखाने का क्रम प्रारम्भ से ही रखा जाय। लड़कों को मुखविकृति की आदत नहीं लगनी चाहिए। बीच-बीच में ज्येष्ठ अध्यापकों को कक्षा में बुलाकर लड़कों का काम दिखाया जाय। जो सलाह वे दें, उसका उपयोग करना चाहिये। ज्येष्ठ शिक्षकों ने भी ऐसी सहायता देनी चाहिये।

द्वितीय वर्ष की कक्षा में ग्यारह लड़के थे। इन लड़कों ने अपना सारा अभ्यास क्रम उत्तम प्रकार से तैयार किया हुआ ज्ञात हुआ। लड़कों का स्वर व ताल का ज्ञान अच्छा प्रतीत हुआ। स्वरोच्चार व शब्दोच्चार ठीक थे। इस कक्षा में प्रायः सभी लड़के तैयार पाये गये।

तृतीय वर्ष कक्षा के लड़कों ने अपनी तैयारी उत्तम दिखाने पर उन्हें छः माह बाद अगली कक्षा में भेज देने में कोई बाधा नहीं। तृतीय वर्ष की कक्षा श्री·····के ही पास रखी जावे। इस कक्षा में नये राग ग्यारह पढ़ाना है। रागों के नाम व चीजें पहले ही निश्चित कर दी गई हैं। ख्याल-गायन की वास्तविक शिक्षा तृतीय वर्ष से ही होती है। इसलिये लड़कों को उत्तमोत्तम तानें, स्वरोच्चार व शब्दोच्चार यहाँ से ही पढ़ाये जायँ। इस कक्षा पर ज्येष्ठ-अध्यापकों ने ध्यान दिया तो हितकर होगा। राजाभैया की कक्षा में जो तानें पढ़ाई जायेंगीं, वैसी ही इस कक्षा में पढ़ाई जा सकीं तो अच्छा होगा। श्री भास्करराव ने राजाभैया की सलाह से तानें पढ़ाने का काम किया तो लड़के अच्छे गाने लगेंगे। तृतीय वर्ष के अंत तक लड़कों के गले अच्छे तैयार हो जाने चाहिये।

चतुर्थ वर्ष के लड़के प्रथम छः माह राजाभैया के पास व अन्तिम छः माह दाते-साहब के पास रहें। इन दोनों ज्येष्ठ शिक्षकों की गायकी का लाभ लड़कों को मिले, एतदर्थ यह योजना सुझाई है। इन लड़कों पर शिक्षकों को अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। उनके गले अभी तक अच्छे तैयार नहीं हुए हैं। प्रत्येक राग में दो ध्रुवपद, दो अथवा तीन ख्याल, लक्षणगीत, सरगम व अन्य गीत—इतनी सब चीजें होनी चाहिये।

चतुर्थ वर्ष के लड़कों के स्वरस्थान उत्तम होने चाहिये। गायकों के गुणावगुण उन्हें समझा देना चाहिये। पिछले वर्ष के अभ्यास की पुनरावृत्ति विचारपूर्वक करने का ध्यान में रखना चाहिये। चतुर्थ वर्ष के अन्त तक लड़कों की गायकी बहुत कुछ तैयार हो जाना इष्ट है। छः महीने के उपरान्त इस कक्षा में जो लड़के मन्दबुद्धि व आलसी प्रतीत हों, उन्हें पिछली अर्थात् तीसरी कक्षा में भेज देना चाहिये।

## आगामी शिक्षा सत्र के लिये सूचनाएँ

दो सीनियर क्लासों (चतुर्थ वर्ष कक्षा) में कुल चौदह विद्यार्थी हैं, ऐसा ज्ञात होता है। दोनों की एक कक्षा बना कर श्री दाते जी को सौंपी जाय। वह कक्षा उनके पास छः माह तक रहे। इस अवधि में शिक्षक उन लड़कों को उत्तम गायकी की शिक्षा दें। शिक्षक को उन विद्यार्थियों के सामने प्रतिदिन एक घंटा गाना व बचे हुए समय में विद्यार्थियों को गवाना चाहिये। उनके स्वरोच्चार, शब्दोच्चार व पदच्छेद की ओर ध्यान दिया जाय। प्रसिद्ध गायक जिस ढंग से अपनी चीजें महफ़िल में गाते हैं, उस ढंग के अनुकरण का प्रयत्न होना चाहिये। इस वर्ष यदि नये राग न लिए गये तो भी कोई बात नहीं। अब लड़कों का गायन लोगों को रुचिकर हो, ऐसा होना चाहिए। प्रसिद्ध ऐसे बीस ही राग चुनकर प्रत्येक राग में दो बड़े ख्याल व दो छोटे ख्याल तैयार कराये जायँ।

छः महीने के उपरान्त सीनियर क्लास बचे हुये आधे-वर्ष के लिये श्री राजाभैया को सौंपना चाहिये। उन्होंने भी श्री दाते के समान स्वयं गाकर लड़कों को गवाना चाहिये। लड़कों की तान मधुर व ढंगदार होनी चाहिये। इतना होने पर लोगों को प्रसन्न करने योग्य अपना राग ठीक आधे घण्टे तक गाने की क्षमता लड़कों में आनी चाहिये—यह उद्देश्य रखना है।

गायन की परीक्षा चीजों की संख्या पर नहीं, अपितु उनकी मोहकता पर होती है। यह तत्व शिक्षकों ने सदा मन में रखना चाहिए।

लड़कों से अभिनव-राग-मंजरी तैयार कराई गई तो अधिक उपयुक्त होगा। पंचम वर्ष अन्तिम कक्षा होने के कारण, लड़कों को जितनी भी बातें विद्यालय में सिखाने योग्य हैं; वह सब इस वर्ष उन्हें मिल जानी चाहिये। इन लड़कों की तैयारी पर अपनी पद्धति की एवं शिक्षकों की योग्यायोग्यता निश्चित होगी।

हेडमास्टर महोदय सब कक्षाओं को ध्रुवपद पढ़ावें व कक्षाएँ इस क्रम से लें :—

| | |
|---|---|
| सोमवार : रा० दाते साहब की कक्षा | ५ से ६ तक |
| मंगलवार : राजाभैया की कक्षा | ,, |
| बुधवार : भास्करराव की कक्षा | ,, |
| गुरुवार : गोखले साहब की कक्षा | ,, |
| शुक्रवार : बलवन्तराव की कक्षा | ,, |

प्रत्येक कक्षा में एक घण्टा शिक्षण देने के बाद बचे हुए समय में विभिन्न कक्षाओं में जाकर उनके कार्य को देखें। मुख्यतः उत्तम स्वर व शब्दोच्चारण का प्रारंभ इसी कक्षा से होता है। प्रत्येक शिक्षक के कार्य का उत्तरदायित्व उन पर ही है। उन्हें निरीक्षण के लिये समय मिले, इसीलिये नियमित कक्षा का कार्य नहीं दिया गया है।

दिनांक १३-४-२२

वि. ना. भातखंडे
परीक्षक

नौतलाब गेस्ट हाउस,
लश्कर
दि० २१ अप्रैल, १९२५

मेहरबान रावसाहब जी० व्ही० अंबडेंकर की सेवा में

मैं तारीख १४ अप्रैल १९२५ को यहाँ आया तथा दूसरे दिन से (ता० १५ से) कक्षा-निरीक्षण का कार्य आरम्भ किया। यह कार्य कल सायं पूर्ण हुआ। प्रत्येक कक्षा में कार्य किस प्रकार हुआ है तथा उस सम्बन्ध में क्या करना इष्ट है, यह मैंने स्थान-स्थान पर लिखा है। शिक्षकों को भी मौखिक निर्देश दिये हैं। सभी कक्षाओं में अभ्यास का आधा भाग तैयार किया हुआ मैंने देखा। उच्च कक्षाओं में गायकी अभी भी जैसी चाहिए, वैसी सधी नहीं। लड़के अल्पवयीन होने से उन्हें गायकी का रहस्य विदित नहीं हुआ तो कोई आश्चर्य नहीं। फिर भी शिक्षकों को वह उत्तम साध्य कराने की ओर यथा-सम्भव प्रयत्न करना इष्ट है। बारम्बार कक्षाओं में शिक्षक यदि स्वयं प्रत्यक्ष आलाप तानें अच्छी तरह गाकर दिखाते रहे तो बहुत लाभ होगा, ऐसा मैं समझता हूँ। कुछ कक्षाओं में ऐसा प्रतीत हुआ कि लड़के पिछली कक्षाओं का कार्य भूलते जा रहे हैं। सप्ताह में एक दिन पिछले कार्य की आवृत्ति की गई तो ठीक होगा। इस वर्ष अन्तिम परीक्षा के लिए पैंतालीस राग हो सकेंगे, ऐसा नहीं लगता। वस्तुतः यह कोई अच्छी बात नहीं है। परन्तु नीचे की कक्षाओं में गायकी की कमजोरी रहने से ऐसा हुआ, यह शिक्षकों का कहना है। एक दृष्टि से यह ठीक भी है। तथापि यथाशक्ति परिश्रम करके जितने राग हो सकें, उतने तैयार करा लेना आवश्यक है। अब श्री गुणे की कक्षा से ही अभ्यासक्रम के साथ-साथ गायकी का कार्य जारी रखने से बाद में काम में त्रुटि न रहेगी, ऐसी आशा है। आगामी छमाही के लिए मैं निम्नानुसार कुछ सूचनाएँ देना चाहता हूँ। उचित प्रतीत होने पर उन्हें कार्यान्वित करने की व्यवस्था की जाय।

(१) प्रारम्भिक कक्षा से दस उत्तम लड़के चुनकर उन्हें द्वितीय कक्षा में भेजा जाय। ऐसा करने का कारण संलग्न रिपोर्ट में बताया है।

(२) द्वितीय वर्ष की कक्षा से पाँच अच्छे लड़के तृतीय वर्ष की कक्षा में भेजे जायँ। कारण रिपोर्ट में है ही।

(३) तवायफ स्कूल के शिक्षक श्री.....को सप्ताह में कम से कम एक दिन सेन्ट्रल स्कूल में पढ़ाने के लिए भेजा जाय। उनके स्थान पर सेन्ट्रल स्कूल के शिक्षक ने जाकर तवायफ स्कूल की ज्येष्ठ लड़कियों को पाठ्यक्रम ख्याल गायकी सहित सिखाना चाहिये। वहाँ के शिक्षक हेडमास्टर साहब की आज्ञानुसार कक्षाओं में जाकर अपनी तैयार की हुई तानें व ठुमरियाँ सिखायेंगे। ऐसा करने से दोनों विद्यालयों का हित होगा।

मेरी ऐसी भी एक सूचना है कि, अपने यहाँ के प्रसिद्ध सरोदिये श्री हाफीज खाँ का आलाप व ठुमरियों का काम अपने ज्येष्ठ विद्यार्थियों को सुनने का अवसर सप्ताह में कम से कम एक बार मिलना चाहिए। अपना काम लड़कों के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए वे सहर्ष तैयार हैं। इतना ही नहीं वे अपना काम उन्हें सिखाना भी चाहते हैं, ऐसा मुझे ज्ञात हुआ है। उनके काम को सुनने से लड़कों की बहुत प्रगति होगी, ऐसा मुझे लगता है। यह प्रयोग करके देखा जाय, ऐसी मेरी सूचना है। विद्यालय की ओर से ऐसा कोई पत्र जाने पर श्री हाफीज खाँ समय निकाल कर लड़कों की मदद करेंगे, ऐसा मुझे विश्वास है। वे एक अच्छे वादकों में से हैं। उनका कौशल्यपूर्ण वादन सुनकर लड़कों का ज्ञान बढ़ेगा और हित भी होगा। अपनी ओर से उन्हें पत्र जाने पर उनका गौरव होगा। कोई विशेष आपत्ति न हो तो ऐसा पत्र लिखने की व्यवस्था की जाय।

विद्यार्थी शाला में नियमित रूप से उपस्थित नहीं रहते, ऐसी शिकायत शिक्षकों की ओर से हमेशा आती रहती है। इस विषय में विद्यार्थियों को अब धीरे-धीरे ताकीद देना उचित है। मैं ऐसी सूचना करता हूँ कि जो विद्यार्थी महिने में तीन से अधिक बार अनुपस्थित रहेगा, अर्थात् आगामी छः माह तक बिना उचित कारण के जिसकी अठारह से अधिक अनुपस्थिति होगी, उसे वार्षिक परीक्षा में बैठने की अनुमति न दी जाय। उपर्युक्त अनुपस्थिति की मर्यादा बढ़ाना आवश्यक प्रतीत हो तो वह आपकी व हेडमास्टर साहब की इच्छा पर निर्भर है। परन्तु ऐसा कुछ प्रतिबन्ध रखना अब इष्ट है। किसी प्रकार की रोक के अभाव में शिक्षकों के परिश्रम कभी-कभी व्यर्थ हो जाते हैं—यह सत्य है।

चतुर्थ व पंचम कक्षाओं की अक्टूबर माह में एक जाँच परीक्षा (प्रिलीमिनरी) लेने की प्रथा अब आरम्भ की जाय। इस परीक्षा में जो विद्यार्थी भली प्रकार उत्तीर्ण होंगे, उन्हें ही वार्षिक परीक्षा में सम्मिलित होने दिया जाय। अब लोगों में इस विषय की रुचि उत्पन्न हो रही है तथा शाला के प्रति आदर भी बढ़ रहा है। अतः ऐसे कुछ निर्बन्ध लगाना हित कर ही होगा। अन्य कालेजों में ऐसी परीक्षा सदैव ली जाती है।

वि. ना. भातखंडे

Examiner

## अर्धवार्षिक वृत्तांत

**कक्षा प्रिपेरेटरी** : इस कक्षा में लगभग पचास विद्यार्थी हैं । उनमें से बहुत से उपस्थित रहते हैं ऐसा देखा गया । कुछ थोड़े ही लड़कों के गले रास्ते पर आने लायक हुए हैं । उन्हें अब स्वरज्ञान भी हो रहा है, ऐसा प्रतीत हुआ । ऐसे लड़के इस कक्षा में दस बारह निकलेंगे । इनके विषय में मैं ऐसी सूचना करना चाहता हूँ कि इन लड़कों को उच्च कक्षा में जाने दिया जाय । वार्षिक परीक्षा के लिए अभी भी छः महीने हैं । इन लड़कों की प्रथम क्रमिक पुस्तक तैयार हुई है । परीक्षा में इनमें से सभी उत्तीर्ण हुए तो ठीक ही है। यदि न भी हुए तो उनका इसमें कोई नुकसान नहीं है । यह सूचना हेडमास्टर व कक्षा-अध्यापक को पसंद है । बाकी चालीस लड़कों के दो वर्ग किये जाकर पहले विभाग में साधारण सुरीले लड़के रखे जायँ । दूसरे विभाग में अनुपस्थित रहने वाले व एकदम कमजोर लड़के रखे जायँ । कुछ दिन तक इन दोनों विभागों में आधा-आधा समय बाँट लिया जाय । सुरीले लड़कों की ओर बीच-बीच में हेडमास्टर साहब ध्यान दें । जो भी संभव हो वह किया जाय । इस कक्षा का मुख्य उद्देश्य लड़कों को सुर में लाना व उन्हें थोड़ा-बहुत स्वरज्ञान करा देना, इतना ही है । यह काम बहुत कठिन नहीं है, ऐसा मैं समझता हूँ ।

**कक्षा प्रथम वर्ष** : इस कक्षा में पाठ्यक्रम की तैयारी अच्छी थी । प्रथम क्रमिक पुस्तक में दिए हुए दस रागों में आठ राग अब तक हो चुके हैं । लड़कों को स्वरज्ञान ठीक हुआ है । कुछ लड़के अनुपस्थित रहते हैं, ऐसी शिक्षकों की शिकायत है । इस अनुपस्थिति के संबन्ध में एक सूचना करने का बहुत दिन से मेरा विचार है ।

वर्ष के अन्त में जिनकी अनुपस्थिति बिना उचित कारण दिखाए निर्धारित दिनों से अधिक होगी, उन्हें वार्षिक परीक्षा में कदापि न बैठने दिया जाय । यह नियम वरिष्ठ कक्षाओं में तो अवश्य लगाया जाय ।

तीसरे, चौथे व पाँचवें वर्ष के लड़कों की अनुपस्थिति के कारण बहुत नुकसान हो रहा है । कभी-कभी तो शिक्षकों के किये हुए परिश्रम व्यर्थ हो जाते हैं ।

इस कक्षा के संबंध में ऐसी सूचना करना चाहता हूँ कि कक्षाध्यापक अपनी कक्षा से पाँच अच्छे लड़के चुनकर उन्हें ऊपर की अर्थात् द्वितीय वर्ष कक्षा में भेजें । तथा प्रिपरेटरी की नीचे की कक्षा से दस सुरीले लड़के अपनी कक्षा में प्रविष्ट करा लें । कौन से दस लड़के लिये जायँ, यह हेडमास्टर साहब बतायेंगे । अभी बचे हुए दो राग सब लड़कों के साथ इन्हें भी सिखाए जायँ तथा बाद में आवृत्ति के समय शेष आठ राग सभी लड़कों के साथ पुनः होंगे ही ।

यदि नये लड़के परिश्रम नहीं करते हैं अथवा नियमपूर्वक शाला में नहीं आते हैं तो उन्हें वार्षिक परीक्षा में बैठने की अनुमति न दी जाय । बस, इतना पर्याप्त है और ऐसा ही समझा कर लड़कों को ऊपर लिया जाय ।

इस कक्षा में छोटी-छोटी तानें सिखाने की छूट रखी है । यहाँ फिलहाल सिखाई हुई तानें कुछ क्लिष्ट हैं । तानें अधिक सुलभ, मधुर व लड़कों के गले फिरने के लिए उपयुक्त

किस प्रकार होनी चाहिए, यह उदाहरणों सहित कक्षाध्यापक को मैंने समझाया है। उस आधार पर और भी छोटी-बड़ी नयी तानें वे बनायेंगे तथा विद्यालय के रिकार्ड के लिए लिख कर देंगे। तानें कब, कहाँ व कैसी लेना, उनको गाकर बीच-बीच में चीज के बोलों का उच्चार कैसे करना; यह इस कक्षा से ही छात्रों को सिखाना है। गाते समय लड़कों के गले का माधुर्य नष्ट न हो, ऐसी सावधानी शिक्षकों ने रखनी चाहिए। तात्पर्य इस कक्षा का काम छः माह की दृष्टि से संतोषप्रद है।

**द्वितीय वर्ष** : इस कक्षा में लड़कों की संख्या अल्प है। कोर्स का काम उत्तम चल रहा है। गायकी सहित लड़कों के पाँच राग इसी प्रकार तैयार हुए हैं तथा वार्षिक परीक्षा तक शेष पाँच राग इसी प्रकार तैयार हो जावेंगे। श्लोक, दोहे, थियरी, आदि का आधा काम हो चुका है। इस कक्षा में प्रथम वर्ष की कक्षा से पाँच अच्छे लड़के लिए जायँ। कक्षाध्यापक इन्हें अपने लड़कों के साथ बचे हुए पाँच राग प्रथम सिखा दें। वे तैयार हो जाने पर पिछले पाँच रागों की आवृत्ति करते समय नये लड़कों की ओर विशेष ध्यान दें। जो लड़के कमजोर रहेंगे, उन्हें वार्षिक परीक्षा में बैठने की अनुमति न दी जाय। स्वरोच्चार व तानें उत्तम साध्य होने का प्रयत्न इस वर्ग से ही सावधानी से होना चाहिए। उल्टा-सीधा गला घुमाना, मुँह बिगाड़ना; यह दोष न रहने दिये जायँ। प्रत्येक तान सुलभता से व सफाई से निकले, इस ओर सावधानी रखी जाय। Quality before Quantity यह नियम गायन के शिक्षकों को ध्यान में रखना है। कक्षा का काम अच्छा चल रहा है।

**तृतीय वर्ष** : इस कक्षा में परीक्षा के लिए नौ छात्र उपस्थित थे। कक्षा में आधा अभ्यास क्रम तैयार हुआ है। गायकी का काम जितना चाहिए व जिस सफाई से होना चाहिए, अभी तैयार नहीं हुआ है। बहलावे व तानें गाकर योग्य रीति से पुनः सम पर आना, छात्रों को साध्य नहीं हुआ है। उसी प्रकार स्वरों के स्थान भी किंचित् आगे-पीछे होते हैं, इनकी ओर शिक्षक को विशेष ध्यान देना चाहिये। प्रत्येक राग का श्लोक अर्थ सहित तैयार हो व अभ्यासक्रम के सारे गीत कण्ठस्थ हों। पूर्व में सीखे हुए राग भूलते हुए दिखाई दिये। आठ दिन में एक बार आवृत्ति करते रहने से पिछला काम भी तैयार रहेगा। तानें, बहलावे बोर्ड पर एक-एक लिखकर अनेक बार शिक्षक ने गाकर दिखाना चाहिये व उन्हें लड़कों से उत्तम प्रकार से गवाना चाहिए। विभिन्न प्रकार से बार-बार सम पर आने की कला सिखानी चाहिए। एक तान उत्तम साध्य हुए बिना दूसरी न लेने दी जावे। लड़कों को लयदारी इसी वर्ष से सिखानी चाहिये। दो मात्रा के अक्षर एक मात्रा में गाना, विभिन्न कण सफाई से लगाना, गाते समय विश्रान्ति के स्थान, अवग्रह बदलना यह सभी बातें अच्छे शिक्षक को इसी वर्ष से कक्षा में सिखानी प्रारंभ करनी चाहिये। जो लड़के बिना किसी कारण के एक माह में तीन से अधिक बार अनुपस्थित रहेंगे, उन्हें निर्देश दिया जाय कि ऐसी अनुपस्थिति आगामी छः माह में चलती रहने पर वार्षिक परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जावेगी। इस नियम का सचमुच पालन किया जाय।

**कक्षा चतुर्थ वर्ष** : कक्षा में अभ्यासक्रम का आधा कार्य हुआ है। लड़कों की तैयारी ठीक चल रही है। गायकी का काम अभी भी कम है। परन्तु उसकी सारी जिम्मेदारी शिक्षक पर नहीं डाली जा सकती। गत वर्ष के शिक्षक महोदय की अस्वस्थता के कारण

गायकी का काम बहुत पिछड़ गया था। लड़कों को कम से कम पंद्रह रागों की गायकी आज तैयार चाहिए थी। परन्तु अब तक केवल सात रागों की ही तैयारी हुई है। आगामी छः मास में शेष तेरह राग पूर्ण किये जायँ तभी तो वार्षिक परीक्षा के लिए बीस राग तैयार हो सकेंगे। आवश्यकता होने पर शिक्षक महोदय के घर जाकर पिछले बचे हुये राग लड़कों को तैयार कर लेना चाहिये। कक्षाध्यापक अतिरिक्त समय में सिखाने के लिए तैयार भी हैं। अभी तक सिखाये हुए सात रागों की गायकी जितनी परिपक्व होनी चाहिए, उतनी नहीं हुई है। कुछ लड़के गाते समय ताल में भी गलतियाँ कर रहे थे। इस ओर शिक्षक ध्यान दें। कुछ लड़कों का पाठान्तर अच्छा नहीं था। चीज के बोल व स्वरों का अच्छा उच्चारण करने की ओर इस कक्षा से ही ध्यान देना चाहिए। छात्रों का गायन श्रोताओं को आनन्ददायक होना चाहिए। गायन सुघड़ होना चाहिए। हेडमास्टर साहब व राजाभैया ने समय-समय पर इस कक्षा में जाकर लड़कों के कसरत की ओर ध्यान देना चाहिए। कक्षा के विद्यार्थी फुर्तीले हैं। उन्हें अब गायकी की कला सिखानी चाहिये। सारांश इस कक्षा में कोर्स का काम ठीक चल रहा है।

**पंचम वर्ष** : इस कक्षा का काम अच्छा चल रहा है। कक्षा में सीनियर व जूनियर—ऐसे दो विभाग हो चुके हैं। सीनियर कक्षा में कुछ लड़के बहुत अच्छे हैं, जूनियर कक्षा में अभी भी बहुत से रागों की गायकी होनी है। मुझे लगता है, इन जूनियर विद्यार्थियों ने फाइनल परीक्षा में इसी वर्ष बैठने की जल्दी न करना हितप्रद होगा। फाइनल परीक्षा अर्थात् अपने विद्यालय की शिक्षा का अन्तिम व सर्वोत्तम नमूना है, ऐसी धारणा होने से इस परीक्षा में उत्तीर्ण होनेवाले विद्यार्थियों को गायकी सहित पचास राग आने चाहिए। उनके गायन में महफिल के गायन की प्रौढ़ता होनी चाहिए। लड़कों की तानें अस्खलित, मधुर एवं श्रोताओं को तत्काल लुभानेवाली होनी चाहिए। केवल कोर्स कण्ठस्थ हो जाने से काम बन गया, ऐसा नहीं समझना चाहिए। सभाढीठता एवं सभा को रिझाने की कला, यह दो बातें साध्य हो जानी चाहिए।

इस कक्षा के लिए मैं ऐसी सूचना करना चाहता हूँ कि आगामी अक्तूबर माह में एक जाँच परीक्षा हेडमास्टर व राजाभैया ने लेनी चाहिए तथा उसमें जो अच्छे उत्तीर्ण होंगे, उन्हें ही नवंबर की फाइनल परीक्षा में बैठने की अनुमति प्रदान की जाय। यह जाँच परीक्षा अच्छी कड़ी ली जाय। आगामी छः माह में जिन विद्यार्थियों की अठारह से अधिक अनुपस्थिति होगी उन्हें परीक्षा में न बैठने दिया जाय। श्री बलवंतराव मास्टर ने सभी कक्षाओं में ध्रुवपद सिखाने का काम चलाया है। यह उनका प्रिय विषय होने से लड़कों की ध्रुवपद गायकी में अब बहुत सुधार दिख रहा है। इसी प्रकार हेडमास्टर महोदय अपने निरीक्षण कार्य के अतिरिक्त सुभान खाँ की कक्षा को सहायता देते रहे हैं, परिणामतः इस कक्षा के लड़के अब सुर में आ गए हैं। उनमें से कुछ को तो स्वरज्ञान हो भी गया है।

**तवायफ स्कूल** : इस शाला में दो सीनियर व छः जूनियर लड़कियाँ परीक्षा के लिए थीं। सीनियर लड़कियों को स्वरज्ञान अच्छा हुआ है। वह छोटी चीजें व राग गाती हैं। तथापि उनका शिक्षण अभी भी ठीक पद्धति से नहीं चल रहा है, ऐसा कहना पड़ता है। बड़े ख्यालों की तालीम व गायकी उन्हें अभी तक नहीं मिली। यह काम यहाँ के दोनों

शिक्षक महोदयों से शीघ्र पूरा हो सकेगा, ऐसा प्रतीत नहीं होता। बड़े ख्याल व उनकी गायकी सेंट्रल स्कूल के शिक्षकों के अतिरिक्त अन्य कोई शिक्षक लड़कियों को नहीं सिखा सकता, ऐसा मुझे लगता है। सीनियर लड़कियों को क्रमवार तालीम न होने से वे उल्टे-सीधे राग व चाहे जैसी तानें गाती हैं। यह ढंग बदलकर प्रथमतः नियमित कोर्स का कार्य पूर्ण करने पर बचे हुए समय में पाठ्यक्रम के बाहर के गीत उन्हें सिखाना हितकर होगा। ठुमरियाँ आदि गाना उन्हें आना ही चाहिए, परन्तु कोर्स के ध्रुवपद ख्याल सिखाना भी इष्ट है। यदि सेंट्रल स्कूल के एक शिक्षक वहाँ जाकर सिखाने लगें तो दोनों विद्यालयों का लाभ होगा। सीनियर लड़कियाँ शीघ्र ही अच्छा गाने लगेंगी, ऐसा लगता है।

जूनियर छः लड़कियों से स्वरों पर अच्छी मेहनत ली गई है। यह लड़कियाँ स्वर पहचानने लगी हैं। बाहर की चीजें भी गाती हैं। क्रमिक प्रथम पुस्तक उनसे यदि अभी ही तैयार करवाई गई तो ठीक होगा। यह कराये बिना अन्य चीजें न सिखाई जायँ। सीनियर लड़कियों को बलवन्तराव जी ध्रुवपद बताते हैं। अतः यह कार्य अब ढंग से होगा। इस बार सीनियर शिक्षक ने मेहनत अच्छी की है। परन्तु शिक्षा का कोई क्रम व पद्धति न रहने से कार्य नियमित नहीं हुआ। इस प्रकार का रिमार्क हेडमास्टर ने भी बार-बार दिया है। अब वे क्रमानुसार कार्य करने के लिए तैयार हैं। वार्षिक परीक्षा के लिए 'दूसरी क्रमिक पुस्तक' तैयार चाहिये।

वि. ना. भातखंडे

Examiner

पं० वि० ना० भातखण्डे, बी० ए० एल० एल० बी०,
हाईकोर्ट वकील (रिटा०)

शांताराम हाउस
मलबार हिल,
बम्बई नं० ६

क्र० ९२४
११-१-१९२६

शिविर : नौतलाब गेस्ट हाउस,
लश्कर,
दिनांक : ३०-१२-२५

मेहरबान रावसाहब जी० ह्वी० अंबडेकर,
सेक्रेटरी,
माधव संगीत विद्यालय,
लश्कर

मैं बम्बई से शुक्रवार दिनांक २० को चलकर यहाँ शनिवार की दोपहर में आ पहुँचा। दिनांक २३ सोमवार से विद्यालय की परीक्षा प्रारम्भ होनी थी। परन्तु उस दिन किंग जार्ज की मातुश्री के निमित्त सर्वत्र अवकाश दिया गया था। अतः परीक्षा दूसरे दिन अर्थात् मंगलवार दिनांक २४ से प्रारम्भ की गई। परीक्षा सात दिन तक चलकर आज तवायफ स्कूल की परीक्षा के बाद समाप्त हुई। इस वर्ष किस कक्षा से कितने-कितने लड़के बैठे तथा उन्होंने कैसा कार्य किया, यह वृत्तान्त से ज्ञात होगा। संक्षेप में शाला का कार्य ठीक चल रहा है। विद्यालय के शिक्षक श्री बापूराव अनेक दिन तक अस्वस्थ रहे तथा बाद में उनका देहान्त हो जाने से उनकी कक्षा के लड़कों का कार्य बहुत पिछड़ गया था। उनके स्थान पर श्री सदाशिवराव अग्निहोत्री ने कमी की पूर्ति करने का बहुत प्रयत्न किया। उसी प्रकार उच्च कक्षा में गायकी सहित कोर्स तैयार करने का क्रम प्रारम्भ किया गया है। भविष्य में सभी कक्षाओं का कार्य सुनियमित रूप से चलता रहेगा, ऐसा विश्वास है। अब सभी शिक्षक नई पद्धति से तालीम लेकर अच्छे शिक्षक हो जाने से सभी कार्य व्यवस्थित तथा शीघ्रता से होने में कोई कठिनाई न होगी।

इस वर्ष पाँचवीं कक्षा के लड़कों की तैयारी प्रमाणपत्र प्राप्त करने लायक हो चुकी है। तथापि उन्हें प्रमाणपत्र अभी न दिये जायँ, ऐसी सूचना मैं कर रहा हूँ। कारण वृत्तांत में स्पष्ट किए हैं, जिनकी ओर मेहरबान ध्यान दें। इसके अतिरिक्त नये वर्ष की कक्षाएँ, उनका कार्यक्रम आदि बातें सूचनाओं सहित वृत्तान्त के साथ सादर प्रस्तुत कर रहा हूँ। उन सूचनाओं पर विचार किया जाकर तदनुसार सम्पूर्ण व्यवस्था होगी, ऐसी आशा है।

भवदीय,

वि. ना. भातखंडे

## सन् १९२५ की वार्षिक परीक्षा के परिणाम तथा वृत्तान्त

**प्रिपरेटरी (बाल वर्ग)** : इस कक्षा में कुल अट्ठाईस लड़के हैं जिनमें से बीस परीक्षा में बैठे और बारह उत्तीर्ण हुए। बचे हुए आठ लड़कों का स्वरज्ञान कमजोर है। कुछ लड़कों के स्वरोच्चार अभी भी अच्छे नहीं हैं। इन बीस छात्रों के अतिरिक्त शेष आठ छात्र केवल शुद्ध स्वर ही पहिचानते हैं, परन्तु उन्हें कोई भी अलंकार या पल्टे सिखाये नहीं गये। कुछ लड़कों की आवाज मधुर है तथा उनमें से कुछ तो बहुत ही अच्छे हैं। कक्षा का कार्य ठीक चल रहा है। यह कक्षा विद्यालय के नियमित पाँच वर्ष के अभ्यासक्रम के अतिरिक्त है। इसमें नयी भरती पाए हुए लड़कों को कुछ ही महीनों में स्वर में लाकर स्वरज्ञान कराते हुए प्रथम वर्ष की कक्षा में बैठने लायक बना देना, इतना ही उद्दिष्ट है। इस कक्षा में लड़के छोटी आयु के हैं तथा बराबर अनुपस्थित रहते हैं. ऐसी शिकायत है। कक्षा के छात्रों का परीक्षा-परिणाम संलग्न है।

**सूचना** : इन अट्ठाईस लड़कों की कक्षा-व्यवस्था इस प्रकार हो। इन लड़कों के दो विभाग चौदह-चौदह लड़कों के बनाए जायें। तथा उनमें से 'अ' विभाग में बारह परीक्षोत्तीर्ण लड़के आवेंगे। उन्हें प्रथम वर्ष कक्षा के शिक्षक के आधीन कर दिया जाय। दूसरा 'ब' विभाग हेडमास्टर विष्णुबुआ को दिया जाय। इन दोनों विभागों में क्रमिक पहली पुस्तक प्रारम्भ करनी है। फिलहाल हेडमास्टर 'अ' विभाग पर देखरेख कर ही रहे हैं। ये सभी लड़के कम उम्र के हैं। अतः मेरी इस सूचना के अनुसार प्रथम वर्ष के कोर्स की जिम्मेदारी अनुभवी व्यक्ति पर रहेगी। छोटी आयु के लड़कों को अच्छा शिक्षक देने से लड़कों पर उनका प्रभाव रहता है तथा उन्हें अच्छा मार्ग भी मिलता है। लड़कों के स्वरोच्चार अच्छे हो जावेंगे और उन्हें मुंह बिगाड़ने की आदत नहीं लगेगी। हेडमास्टर पर सारे विद्यालय की देखरेख का दायित्व होने से पहले वर्ग का कार्य उनको सौंप दिया जाय, ऐसी सूचना करता हूँ।

और एक ऐसी ही आवश्यक सूचना करने का निश्चय मैंने किया है। हेडमास्टर साहब दफ्तर का अपना काम लड़कों के सामने अन्य शिक्षकों की मदद से न करें। यह काम उन्हें स्वयं ही करना चाहिए। शिक्षक लोग दफ्तर का कार्य शाला के अधिकांश समय में ही करते हैं जिससे गायकी तैयार होने में बाधा निर्माण होती है। इस प्रकार की शिकायतें छात्रों द्वारा मेरे पास आने से मैंने यह सूचना दी है। उनकी यह शिकायत मुझे अनुचित नहीं लगी। कार्यालय का काम सहायक शिक्षकों का नहीं है। कोई भी शिक्षक छात्रों के पढ़ाई के काम में बाधा लाते हुए कार्यालय का कोई कार्य न करें, इस प्रकार का लिखित आदेश एक बार जारी किया जाना चाहिए। ऐसा होने पर सब ठीक हो जायगा। शाला के समय में लड़कों की तालीम के अतिरिक्त अन्य कोई भी काम न करना ही हितप्रद है। दफ्तर का सारा पत्र व्यवहार स्वयं हेडमास्टर महोदय अपने बचे हुए समय में करें।

**प्रथम वर्ष** : इस सत्र में इस कक्षा से आठ लड़के परीक्षा में बैठे, जिनमें से छह उत्तीर्ण हुए। किन्तु उनका अभ्यास ठीक नहीं गाया गया। केवल स्वरज्ञान ही हुआ है।

कक्षा में तीन छात्रों का अभ्यास क्रम पूर्ण नहीं हुआ था। ऐसा ज्ञात हुआ कि, ये लड़के कक्षा में देरी से भर्ती हुए थे। इस बार कक्षा में विद्यार्थियों की संख्या इतनी कम देखकर आश्चर्य होता है। ऐसा होने का वास्तविक कारण ज्ञात किया जाकर उसे सुधारने का प्रयत्न किया जाय।

**सूचना** : इस बार प्रिपरेटरी वर्ग के लड़कों में जो अनुत्तीर्ण हुए हैं, उनमें बहुत से अच्छे हैं। उन्हें विद्यालय छोड़ने न दिया जाय। हेडमास्टर साहब ने आगामी वर्ष की अपनी कक्षा में उन्हें रख लेना इष्ट होगा। इस कक्षा में पहली पुस्तक पूर्ण की जाय तथा छोटी-छोटी तानें सिखाने का क्रम रखना है। ऐसी तानें किसी छोटे ख्याल को शोभा देने लायक होनी चाहिए। ये तानें गले से ठीक साध्य हो जाने पर आगामी वर्ग में उनका छोटे ख्यालों में उपयोग होगा, यह उद्देश्य है। इन तानों की जाँच यदि राजाभैया स्वयं करते हुए शिक्षकों को देंगे तो अधिक सुविधाजनक होगा। आगामी वर्ष में यह वर्ग तात्या के पास रखना ठीक होगा। इस कक्षा में लड़कों के स्वरस्थानों तथा अच्छी-बुरी आदतों की ओर शिक्षकों को पूर्ण ध्यान देना है। स्वरस्थान उत्तम रीति से सम्हालकर तानों का अभ्यास करवाना चाहिए।

**द्वितीय वर्ष** : इस कक्षा में केवल आठ लड़के परीक्षा में बैठे और वे सभी उत्तीर्ण हुए। कक्षा का कार्य अत्यन्त संतोषप्रद है। कोर्स के सभी दस राग गायकी सहित उत्तम तैयार हुए हैं। अपनी नूतन शिक्षा पद्धति के अनुसार शिक्षकों को अब ऐसा ही कार्य करना है। प्रत्येक वर्ष के अभ्यासक्रम में जो राग होंगे उन्हें गायकी सहित तैयार कराना, यह अपना नियम है। जिन लड़कों की गायकी पाठ्यक्रम के अनुसार नहीं है, उन्हें ऊपर न चढ़ाया जाय; ऐसा स्थायी नियम होना चाहिए। श्री नारायण के कक्षा का परीक्षाफल बहुत अच्छा है। इस कक्षा में जिन लड़कों का अभ्यास गायकी सहित नहीं हुआ था, उन्हें परीक्षा में नहीं बैठने दिया। एक दृष्टि से यह ठीक ही हुआ, ऐसे चार लड़के थे।

**सूचना** : आगामी सत्र के लिए इस कक्षा में नीचे की प्रथम वर्ष कक्षा से छह लड़के आयेंगे। वे तथा श्री नारायण के स्वयं अपनी कक्षा के परीक्षा में न बैठे हुए—ऐसे सभी छात्र रहेंगे। इस वर्ष के लिए गायकी सहित क्रमिक दूसरी पुस्तक के दस राग नियुक्त हैं। प्रत्येक राग में एक सरगम, एक लक्षण गीत, एक बड़ा ख्याल अथवा दो छोटे ख्याल, एक ध्रुवपद, एक धमार तथा गायकी—इतना काम कक्षा में तैयार होना चाहिए। इसके अतिरिक्त दूसरी पुस्तक में दी हुई थिअरी, श्लोक, दोहे, मंजरी के श्लोक आदि तो हैं ही। यही क्रम प्रत्येक पुस्तक के लिए समझना है। इस दूसरे वर्ष की कक्षा में श्री सदाशिवराव अग्निहोत्री की नियुक्ति हो। वास्तव में श्री तात्या कार्यालय की दृष्टि से वरिष्ठ हैं। परन्तु इस वर्ष यह कक्षा श्री सदाशिव की ओर ही रखी जाय, ऐसी सूचना है। ऐसा होने पर भी श्री तात्या की ज्येष्ठता में बाधा आने की सम्भावना नहीं। यह कक्षा की सुविधा का प्रश्न है। श्री गुणे को तीसरे साल की कक्षा देने पर अच्छा ही होगा। अर्थात् आज श्री गुणे के पास जो लड़के हैं, वे आगामी वर्ष में तीसरी कक्षा में भी उन्हीं के पास रहेंगे। उनके द्वितीय कक्षा के रिक्त स्थान पर श्री सदाशिव आयेंगे। श्री गुणे ने इस वर्ष क्रमिक दूसरी पुस्तक

की गायकी सिखाई है। उनकी ताजी मेहनत का लाभ अगले वर्ष में अन्य किसी वर्ग के लड़कों को होगा। अतः इस कक्षा पर श्री सदाशिव के नियुक्ति की सूचना की है।

**तृतीय वर्ष** : इस वर्ष इस कक्षा से आठ लड़के परीक्षा में बैठे। जिनमें से पाँच उत्तीर्ण हुए। परीक्षाफल को देखते हुए यह कक्षा तथा इसके ऊपर की कक्षाएँ पुराने नियमों से संचालित होने से अनेक योग्य व अयोग्य कारणों से पिछड़ी हुई है। उन कारणों का पता लगाने की आज आवश्यकता नहीं है। इस कक्षा के विद्यार्थी गायकी तैयार किये बिना उत्तीर्ण होते आये थे। यही एक प्रमुख कारण कहा जा सकता है। इस तृतीय कक्षा में पाठ्यक्रम पूर्ण करके श्री सदाशिव राव ने सभी रागों की अब गायकी तैयार करवायी है। कक्षा का समुचित काम अच्छा हुआ है, इसमें संदेह नहीं। वास्तव में इन सब विद्यार्थियों के पच्चीस राग गायकी सहित तैयार होने चाहिए तथा ऐसा प्रयत्न किया भी है।

**सूचना** : आगामी सत्र के लिए इस कक्षा में क्रमिक पुस्तक का तीसरा भाग संपूर्ण तैयार हो जाना चाहिए। इस कक्षा पर श्री गुणे की नियुक्ति की जाय। इस कक्षा में उत्तीर्ण होकर आये हुए आठ छात्र तथा श्री सदाशिव की कक्षा के अनुत्तीर्ण तीन, ऐसे कुल ग्यारह लड़के हो जावेंगे। आगामी वर्ष की कक्षा में तीसरी पुस्तक गायकी सहित तैयार चाहिए।

**चतुर्थ वर्ष** : यह कक्षा भी पुरानी व्यवस्था से आज तक चल रही थी। इसके सभी छात्र केवल तीन वर्ष से शाला में हैं। अर्थात् नाम मात्र के लिए चौथा वर्ग होने पर भी लड़के तीन वर्ष की शिक्षा के ही हैं। अब चालू वर्ष में वे फाइनल (पंचम वर्ष) की कक्षा में जावेंगे।

इस वर्ष वार्षिक परीक्षा में आठ लड़के बैठे, जिनमें पाँच उत्तीर्ण हुए। कक्षा में कोर्स नियमित बीस रागों का पूर्ण हो कर गायकी केवल तेरह रागों की हुई थी। पिछली कक्षा के यही तेरह राग श्री अग्निहोत्री की कक्षा में तैयार करा लेने से भास्करराव को इस वर्ष चौथी कक्षा का काम देना सुलभ हुआ था। श्री भास्करराव ने अपनी नई कक्षा में बिना गायकी के तेरह राग तैयार कर देने पर चौथे वर्ष के अंत में लड़कों के गायकी सहित सभी राग हो जावेंगे। अतः इस सत्र में भास्करराव के सभी छात्र चौथे वर्ष के लिये उन्हीं के पास रखे जायँ। अर्थात् उनके पास जो आठ लड़के हैं वे तथा श्री अग्निहोत्री की कक्षा से उत्तीर्ण हुए पाँच ऐसे कुल तेरह लड़के होंगे। इस कक्षा में दो भिन्न-भिन्न अभ्यासक्रम के लड़के एकत्रित हो रहे हैं, यह सच है। परन्तु योग्य रागों की योजना करके भास्करराव इन सभी लड़कों के हित की राग-व्यवस्था करा लें। इस कक्षा में क्रमिक चौथी पुस्तक आरंभ होती है।

**पंचम वर्ष** : इस पंचम वर्ष की कक्षा में चौदह विद्यार्थी परीक्षा में बैठे थे। इन विद्यार्थियों का पाठ्यक्रम प्रायः पूर्ण हो चुका है। परन्तु गायकी अपूर्ण हुई है। गायकी के तीस राग हुए हैं तथा शेष तीसरी पुस्तक के भी कुछ राग हुए हैं। अपने विद्यालय के नियमानुसार क्रमिक पुस्तक के ४५ राग गायकी सहित तैयार हुए बिना प्रमाण-पत्र दिया नहीं जाता। जिनके तीस राग तैयार हैं तथा शेष राग तैयार होने जा रहे हैं, ऐसे प्रमाण-पत्र देने योग्य पाँच विद्यार्थी हैं।

उपर्युक्त विद्यार्थियों के पन्द्रह राग गायकी सहित तैयार होना शेष हैं। अतः मैं ऐसी सूचना करता हूँ कि इन लड़कों को ये राग तैयार किये बिना प्रमाण-पत्र अथवा डिप्लोमा न दिया जाय। ये पन्द्रह राग उत्तम तैयार होने के लिये चार माह लगेंगे, ऐसा राजाभैया का मत है, जिससे मैं भी सहमत हूँ। आगामी अप्रैल माह की भर्ती के समय इन लड़कों से ये राग सुनकर उन्हें डिप्लोमा दिया गया तो सभी बातें ठीक हो जावेंगी।

इस कक्षा में.....नाम का एक विद्यार्थी है। उसका भी कोर्स पूर्ण होकर गायकी तीस रागों की हुई है। परीक्षा में ऐसा पाया गया कि उसके स्वर-स्थानों में कुछ कमजोरी है तथा तान ज़ितनी साफ और खूबसूरत चाहिये वैसी नहीं है। बचे हुये पन्द्रह राग व गला तैयार करने के लिये उसे छह माह की अवधि चाहिये। आगामी निरीक्षण के समय इन रागों की कड़ी परीक्षा लेकर यदि उसने अपनी सारी तैयारी बताई तथा तानें जल्द, साफ़ व सुरीली गाईं तो उसे जून अथवा जुलाई में सर्टिफिकेट दिया जाय। यह फाइनल के विद्यार्थी हैं। उनके अच्छे-बुरे गायन पर तथा तैयारी पर लोकमत बनने की संभावना है। अतः उन्हें फिलहाल प्रमाण-पत्र देना उचित न होगा। अपने विद्यालय के संबंध में अब लोगों का मत ऊँचा है। उसका स्टेंडर्ड जितना ऊँचा रहेगा उतना ठीक है, ऐसा मेरा मत है।

श्री राजाभैया की कक्षा का काम बहुत अच्छा हुआ है।

उनकी कक्षा में विभिन्न तैयारी के लड़के हैं। जिनके उन्होंने तीन समूह बनाकर परीक्षा के लिये तैयार किया था। उनके लिये यह भूषणास्पद है।

**सूचना :** इस पाँचवीं कक्षा में जो चौदह लड़के हैं उन्हें आगामी एक वर्ष के लिये उसी कक्षा में रखा जाय। प्रमाण-पत्र दिये जाने पर यह संख्या घटकर आठ या नौ रह जायगी। यही आठ-नौ लड़के आगामी वर्ष में डिग्री की परीक्षा में बैठेंगे। इस संख्या में यदि कुछ कमी हो गई तो राजाभैया ने भास्करराव की कक्षा से एक दो होनहार लड़के अपनी कक्षा में लेना चाहिये। इस प्रकार की अड़चनें अब केवल एक वर्ष तक ही रहेंगी। तीसरे वर्ष के लड़के अपना सारा अभ्यासक्रम गायकी सहित तैयार करके एक बार चौथे वर्ष में आ जाने पर सभी काम सुनियमित चलने लगेगा। क्रमिक चौथी पुस्तक गायकी सहित इन चार वर्षों में तैयार कराके महफिल का रंगदार, मोहक तथा शास्त्रकला युक्त गायन सीखने के लिये पाँचवें वर्ष में लड़कों को प्रविष्ट कराना यह उद्देश्य है।

## विशेष सूचना

संगीत विद्यालय के उच्च श्रेणीय छात्रों को नानाविधि अर्थात् भिन्न-भिन्न प्रकार के गायन अथवा वादन सुनने का अवसर मिलना चाहिये। अपने यहाँ शागिर्द पेशा में उस्ताद.....एक सुविख्यात सरोदवादक हैं। यदि सप्ताह में एक बार उन्हें तथा किसी अन्य कलाकार को निमंत्रित किया गया और ऐसे अवसरों पर अपने विद्यालय में आकर छात्रों के समक्ष उन्होंने अपनी कला का प्रदर्शन किया तो इसमें छात्रों का हित ही होगा। उस्ताद.....को इस कार्य के उपलक्ष में, आवश्यक प्रतीत होने पर, अल्प-सा वेतन भी शिक्षा विभाग से दिया जावे। उनका सरोद-वादन सुनने से छात्रों के गायन में भींड व

गमक बिना प्रयास से आ जावेगी। यथाक्रम से बढ़नेवाला राग का विस्तार, जो अब उनकी गायकी में आना आवश्यक है, वह भी साध्य होगा। गायकी का सारा जोर इस समय जो तानों पर है उसमें वैचित्र्य आना आवश्यक है। छात्रों के गायन में तान वैसे तो चाहिए ही, परन्तु केवल तानों का गायन कुछ समय पश्चात् नीरस हो जाता है। अतएव उनकी गायकी में मींड-गमक-युक्त उत्तम व मधुर आलाप का होना नितान्त आवश्यक है। केवल म्यूजिकल जिम्नास्टिक से ही आनन्द नहीं आता।

इस विषय में मैं सूचित करना चाहता हूँ कि,·····की यह नियुक्ति प्रारम्भ में एक वर्ष के लिए ही की जावे। विद्यालय में नियमितता से आकर मुक्त हृदय से अपनी कला छात्रों के सामने यदि वे प्रदर्शित करते रहे, तथा इसका उपयोग छात्रों के लिए लाभ-प्रद हो रहा है, ऐसा शिक्षकों को प्रतीत हुआ तो ही यह नियुक्ति प्रत्येक बार एक-एक साल के लिये बढ़ाई जाय। तात्पर्य केवल इतना ही है कि, स्थायी रूप से यह नियुक्ति अनुभवों पर ही की जाय। विद्यालय में प्रति सप्ताह उस्ताद को कौन-सा राग बजाना है, इसकी सूचना उन्हें श्रीमान् हेडमास्टर साहब व श्री राजाभैया ने पूर्व से ही देना चाहिये, ताकि वे सारे राग उस्ताद घर से ही देखकर आ सकेंगे। इस प्रदर्शन में उच्च तीन कक्षाओं को ही प्रारंभ में सम्मिलित किया जाय। शागिर्द पेशा के गुणीजनों से विद्यालय के कार्य में सहयोग लेने की यह कल्पना कोई अश्रुतपूर्व नहीं है। इस प्रकार की व्यवस्था श्रीमंत गायकवाड़ सरकार के साथ जब मैं उटकमंड में था, तब उनकी आज्ञा से बड़ौदे के विद्यालय में करवाई थी। मेरी वह सूचना उन्हें अत्यधिक पसंद आई। आज लगभग पाँच वर्षों से उनके यहाँ बड़ा वेतन पानेवाले श्रेष्ठ व गुणी मुसलमान गायक बड़ौदा स्कूल आफ म्यूजिक में प्रतिदिन न्यूनतम दो घंटे तक काम करते हैं। वहाँ पर रशियन सज्जन भी हैं। उन्हें ६००) मासिक वेतन दिया जाता है, इतना ही नहीं पर वे बड़ौदे के एक कलाकार हैं और वहाँ के विद्यालय में यूरोपीय स्टाफ नोटेशन से आजकल पढ़ाते हैं। शागिर्द पेशा के गुणीजनों का गायन-वादन यदा-कदा ही होता है। अतः उनके पास पर्याप्त समय शेष रह जाता है। परिणामस्वरूप अपना गाना-बजाना किसी को न सुनाने की प्रवृत्ति उनमें बढ़ी हुई कई रियासतों में मैंने अनुभव की है। उन विद्वानों से यदि ऐसा कराया गया तो उनकी अपनी कला परिष्कृत रहकर जनता भी उनसे लाभ उठा सकेगी। अपने यहाँ तो स्वयं सरकारी विद्यालय को ही उनका लाभ होगा, अतः मेरी यह नम्र सूचना विचारार्थ प्रस्तुत है।

दूसरी सूचना मेरी इस प्रकार है। अपने यहाँ से उपाधि प्राप्त करने वाले छात्रों को थोड़ी-थोड़ी संख्या में किसी शिक्षक के साथ भेजकर निकटवर्ती रियासतों के दरबारी गायक-वादकों का गाना-बजाना सुनने का अवसर यदि दिया गया तो अच्छा होगा। संगीत कला का उत्कर्ष गुणी लोगों को सुनने से ही अधिक समाधानकारक रीति से होता है। उदाहरण के लिए, इन्दौर-बड़ौदा तथा रामपुर आदि शहरों में अच्छे गुणी लोग रियासत की सेवा में रखे जाते हैं। इन स्थानों में वहाँ की सरकार से अनुमति प्राप्त कर थोड़े-थोड़े भिन्न-भिन्न छात्रों को किसी ज्येष्ठ शिक्षक के साथ इन गुणीजनों को सुनने हेतु भेजा गया तो छात्रों का हित होगा। यह काम बहुत बड़े खर्च का प्रतीत नहीं होता। मुझे तो लगता है कि उन

रियासतों को इसमें समाधान ही होगा। इसमें से कुछ रियासतें तो हमारे विद्यालय के ज्येष्ठ शिक्षकों का सहर्ष स्वागत करेंगे तथा एक-दो दिन उनके भोजन व निवास का प्रबंध भी कर देंगे। बड़ौदा व इन्दौर रियासतों को ऐसी व्यवस्था अच्छी ही लगेगी, ऐसा मेरा अनुमान है। परन्तु इसी प्रकार की व्यवस्था अपनी रियासत में भी करनी पड़ेगी। अपना विद्यालय देखने के लिए जब वहाँ के छात्र व शिक्षक आवेंगे, तब आगे चलकर उनका भी आदर-सत्कार हमें करना होगा।

यह व्यवस्था आज ही व्यवहार में लाई जाय, ऐसा मेरा आग्रह नहीं है। परन्तु ऐसा होना अतिआवश्यक है, इतना ही मेरा कहना है। अपने छात्रों को अन्य स्थानों पर कला की प्रगति कैसी हो रही है, उनकी कूप-मण्डूकता नष्ट हो जावे, उनमें गायकों के सर्व साधारण दोष न आने पावें व साथ ही साथ विनय एवं पात्रता बनी रहकर उनकी कला में उत्तरोत्तर वृद्धि होती रहे, ऐसी मेरी अभिलाषा है। योग्य समय पर सूचना का उचित विचार किया जाय।

तीसरी सूचना ऐसी करना चाहता हूँ कि, अब अपने विद्यालय में वाद्य सिखाने की कक्षाएँ प्रारंभ की जानी चाहिए। अपने वाद्य अर्थात् बीन, सितार व पखावज। सितार-पखावज बजानेवाले विद्वान् अपनी रियासत में सेवारत है, ऐसा मुझे ज्ञात हुआ है। उन्हें शिक्षा-विभाग की ओर से वेतन देकर कक्षाओं में सिखाने का काम दिया गया तो बहुत लाभ हो सकेगा। अपने यहाँ बहुत से नागरिक सितार सीखने के लिए तैयार हैं, ऐसा मेरा अनुमान है। जिन छात्रों का कण्ठ मधुर नहीं है, उन्हें वाद्य सीखने का अवसर मिलेगा। पखावज वादकों में प्रसिद्ध मृदंगाचार्य श्री सुखदेवप्रसाद के वंश के लोग यहाँ हैं। उनकी 'बोलपरन' आदि कला रियासत के विद्यालय में ही अपने छात्र संपादित कर सकेंगे। सम्भव होने पर इस सूचना का विचार किया जाये। बड़ौदे में सितार, तबला, सारंगी, बीन, पखावज व शहनाई आदि की नियमित कक्षाएँ होती हैं, जिनमें वहाँ के कलाकार शिक्षा देते हैं। ग्वालियर में अब पुनः संगीत का उद्धार हो रहा है, इसलिये यह सूचना दी है। चतुर्थ सूचना मेरी ऐसी है कि, शक्य होनेपर अपनी रियासत के महत्वपूर्ण ऐसे दो-तीन जिलों में माधव संगीत विद्यालय की शाखाएँ स्थापित की जायँ। मेरा अंतिम ध्येय यही है कि, ग्वालियर एक संगीत की यूनिवर्सिटी बन जाये। ऐसा होने में यदि कुछ समय लग गया तो भी यह अपना एक ध्येय होना चाहिये। संगीत अत्यन्त महत्व का विषय है और वह अपनी संस्कृति का अटूट अंग है। उज्जैन जैसे जिले के व भारी जनसंख्या वाले शहर में ऐसी शाखा स्थापित की जाये, ऐसा मेरा मत है। एक प्रधान शिक्षक व अपने विद्यालय की शिक्षा-प्राप्त एवं तैयार ऐसे दो तरुण युवक वहाँ भेजने पर उज्जैन में विद्यालय अच्छा चलेगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

पाँचवीं सूचना नगर के तवायफ स्कूल के विषय में है। इस विद्यालय का कार्य समाधानकारक नहीं है। आज तक मैं वहाँ का कार्य देखता आया हूँ। वहाँ की लड़कियों को उनके अपने गायन के अतिरिक्त उच्च प्रकार का शिक्षण मिले, वे लिखना-पढ़ना सीखें, उन्हें अपनी उन्नति का मार्ग मिल जाय, अपने तथा अपने आश्रितों के भरण-पोषण का सामर्थ्य प्राप्त हो जाय—ऐसा मूल उद्देश्य इस विद्यालय के लिए था। परन्तु इतने वर्षों के

अनुभव से मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि इस विद्यालय पर होनेवाले व्यय की अपेक्षा वहाँ शास्त्र व कला की प्रगति कोई उल्लेखनीय नहीं हुई। इन्सपेक्टरों ने अनेक बार आलोचनाएँ कीं, उपयुक्त सूचनाएँ भी दीं। परन्तु उसका कोई उपयोग नहीं हुआ।

सात-आठ साल तक दिया हुआ इस विद्यालय की लड़कियों का शिक्षण देखने पर वह अत्यंत निम्नस्तरीय प्रतीत हुआ। स्वयं उनकी कही जानेवाली कला का शिक्षण भी अन्य स्थानों की अपेक्षा कोई बहुत प्रशंसनीय नहीं ज्ञात हुआ। यह स्कूल भविष्य में शिक्षा-विभाग से संबंधित रहने में अब मुझे कोई औचित्य नहीं लगता। उसे पुनः शागिर्द पेशे में लौटाया जाय तो ठीक होगा। उच्च ख्याल, ध्रुवपदों की शिक्षा से उनके नित्य गायन में बाधा होती है, ऐसा कहनेवालों को तब कोई अवसर नहीं रहेगा। स्कूल का कार्य समाधान-कारक नहीं है। इस विषय में एक अन्य कारण यह भी हो सकता है कि वहाँ की लड़कियाँ जड़-बुद्धि की हैं। परन्तु यह भी असत्य नहीं है कि वहाँ के शिक्षकों में इन लड़कियों को शिक्षा देने का सामर्थ्य नहीं है। सारांश इस स्कूल का संबंध अपने शिक्षा-विभाग से इसी प्रकार जारी रखना योग्य नहीं है, ऐसा मैं समझता हूँ। वहाँ पर होनेवाले व्यय से ही शिक्षा-विभागीय प्रमुख संगीत विद्यालय में वाद्यों की कक्षाएँ प्रारंभ की जा सकेंगी।

वि. ना. भातखंडे

Examiner

नौतलाब गेस्ट हाउस,
लश्कर
२९-४-१९२६

मेहरबान रावसाहब जी० व्ही० अंबडेंकर,

आनरेरी सेक्रेटरी श्री माधव संगीत विद्यालय, लश्कर की सेवा में आपके आज्ञा-पत्र के अनुसार मैं बम्बई से दिनांक २२ अप्रैल गुरुवार को रवाना होकर दिनांक २३ अप्रैल शुक्रवार को अपरान्ह ग्वालियर आ पहुंचा। इसी रोज विद्यालय जाकर छमाही निरीक्षण का कार्य शुरू किया। कार्य कल सायंकाल अर्थात् दिनांक २८ को पूर्ण हुआ। जो बातें ध्यान में आईं, उनका विवरण निम्नानुसार है।

प्रथमतः पंचम वर्ष का अभ्यासक्रम जिन विद्यार्थियों का तैयार हो चुका है व जिन्हें अब प्रमाण-पत्र वितरित करना है, उनका निरीक्षण किया; जो शुक्रवार तथा शनिवार को सम्पन्न हुआ। फाइनल परीक्षा उत्तीर्ण इन छात्रों ने अपना निर्धारित काम कर लिया है, ऐसा ध्यान में आया। बचे हुए गायकी के राग भी तैयार कर लिए हैं। उनके गायन में चमक, सफाई अर्थात् महफिली रंग जितना चाहिए था, उतना प्रतीत नहीं हुआ। जिसके लिए प्रमुख कारण ठीक ऐसे समय पर श्री राजाभैया का अवकाश पर चले जाना है। राजाभैया की गैरहाजिरी में उनके क्लास का काम श्री भास्करराव करते हैं। वे यथाशक्ति परिश्रम कर रहे हैं। परन्तु स्वयं राजाभैया की देख-रेख में जिस प्रकार कार्य होता वैसा नहीं हुआ, ऐसा कहना पड़ता है। इनमें से कुछ लड़के अच्छे गाते हैं, यह सच है। परन्तु फाइनल के सभी छात्र अच्छे गानेवाले हों, यह अपना ध्येय है। फाइनल के इन कुछ लड़कों के गायन में अभी भी सुधार होना है। परन्तु इस सुधार के लिए उनके प्रमाण-पत्र अधिक समय तक रोकने की अब आवश्यकता नहीं है। उनमें से अधिकतर छात्र ग्वालियर के ही हैं। उनकी आयु भी अल्प है। अतः राजाभैया पुनः उपस्थित होते ही और कुछ दिन तक उनकी निगरानी में अपनी गायकी सुधार लें, ऐसी मेरी सूचना है। राजाभैया ने भी गत चार माह में अपनी कक्षा को दुर्लक्षित कर लड़कों का नुकसान किया है। अतः इन प्रमाण-पत्र प्राप्त विद्यार्थियों की भारी त्रुटियां निवारण करना उचित है। इस विद्यालय में गोवा-निवासी और भी एक सज्जन हैं। उनके विषय में पिछली बार मैंने विशेष आलोचना की थी। उन्होंने भी यथाशक्ति परिश्रम करके अपना काम पूर्ण किया है। अतः उन्हें भी प्रमाण-पत्र दिया जा सकता है। उनका गला उनकी अवस्था के अनुसार सरलता से नहीं घूमता है। उनके सहपाठियों की अपेक्षा उनका गायन उतना आकर्षक नहीं है। परन्तु

शाला का नियत कार्य उन्होंने पूर्ण किया है। अतः उन्हें प्रमाण-पत्र देने की मैं सिफारिश करता हूँ।

आगामी वर्ष से फाइनल परीक्षा उत्तीर्ण विद्यार्थियों की प्रथम व द्वितीय इस प्रकार से श्रेणियाँ घोषित की जायँ। जिससे सभी लड़के समान स्तर के हैं, ऐसा कहने के लिए गुंजाइश न रहेगी। ऐसी श्रेणियाँ बी० ए०, एम० ए० आदि परीक्षाओं में होती हैं। यही व्यवस्था संगीत में भी की जाय। उनकी श्रेणियाँ प्रमाण-पत्रों में अंकित हों। ऐसा करने पर उच्च श्रेणी प्राप्त करने के लिए लड़के परिश्रम करेंगे।

**प्रिपरेटरी विभाग**

१. **श्री हेडमास्टर का वर्ग** : यहाँ पन्द्रह लड़के हैं। जिनमें से छह लड़के जाँच हेतु उपस्थित किये थे। शेष सभी कमजोर हैं, ऐसा ज्ञात हुआ। यह छः लड़के अच्छे हैं। उनके स्वरस्थान तथा स्वरज्ञान भी अच्छा है। वे अब कोर्स का काम कर रहे हैं। उन्हें अब तानों का शिक्षण मिले, इस दृष्टि से प्रथम वर्ष कक्षा में भेजा जाय। इनमें से कुछ वार्षिक परीक्षा में भी उत्तीर्ण हो सकेंगे। ये लड़के, आगे की कक्षा में जाने पर प्रिपरेटरी विभाग दो की कक्षा के दस लड़के, जिनके अलंकार अच्छे हुए हैं, हेडमास्टर महोदय को अपनी कक्षा में लेने चाहिए। उनकी कक्षा इस प्रकार बीस लड़कों की रहेगी। हेडमास्टर की निगरानी में लड़कों के स्वरस्थान अच्छे होते हैं, ऐसा मुझे प्रतीत हुआ।

**प्रिपरेटरी विभाग २** : कक्षा में तीस-पैंतीस लड़के हैं। प्रतिदिन की उपस्थिति पच्चीस है। दस लड़कों को थाट व स्वर कुछ-कुछ समझ में आने लगे हैं। कक्षा के सम्बन्ध में विशेष लिखने लायक कुछ भी नहीं है। कक्षाध्यापक नियमित काम करते हैं, ऐसा प्रतीत हुआ। इस कक्षा के दस विद्यार्थी विष्णुबुआ को देने हैं।

**प्रथम वर्ष** : कक्षा में कोर्स का काम पूर्ण होकर अब तानें बताई जा रही हैं। इन छोटे बच्चों को तानें लिखा देने के लिए पिछली बार राजाभैया को सूचित किया था, परन्तु यह काम नहीं हुआ है। किसी छोटे चलती लय के ख्याल की तानें जैसी गाई जाती हैं, वैसी ही; किन्तु सरल एवं सीधी तानें इस कक्षा के लिए होनी चाहिए। लड़कों के गले सहज में घूमें, उनके स्वरस्थान न बिगड़ें, उनका गायन श्रोताओं को मधुर लगे; यही लक्ष्य होना चाहिए। कुछ लड़कों के स्वर-स्थान अच्छे नहीं थे। तानें गाकर पुनः ताल में कठिनाई से आ पाते हैं। इस कक्षा में तान को अधिक महत्व नहीं है। तानें कम होने पर भी चलेगा। परन्तु स्वरज्ञान व स्वर-स्थानों की ओर सर्वाधिक ध्यान रहे। शिक्षक ने अपना काम ठीक किया है, परन्तु वस्तुतः लड़कों की ओर उन्होंने अब अधिक ध्यान देना चाहिए।

**द्वितीय वर्ष** : इस कक्षा में छः माही का कोर्स ठीक हुआ है। गायकी भी ठीक है। ख्याल अभी भी अच्छी तरह गाने नहीं आता। मात्राएँ गिनकर गाने जैसा लगता है। इसकी ओर शिक्षक का ध्यान रहे। कुछ लड़कों के स्वर-स्थान ठीक नहीं हैं। बड़े ख्याल गाकर तानें लेते समय ताल की ओर ध्यान नहीं रहता, इस पर भी शिक्षक ध्यान दें। इस कक्षा में लड़कों को ख्याल-गायन का प्रसंग नवीन होने से आरम्भ में कुछ दोष रहना अपरिहार्य ही है। परन्तु उन्हें पहले से ही अच्छे मार्ग पर चलाना हितकर होता है। चीजों

की संख्या बढ़ाने की अपेक्षा स्वरस्थान, शब्दोच्चार, स्वरोच्चार, गाने का ढंग, तालसाधन आदि की ओर इसी कक्षा से ध्यान देना ठीक होगा। महीने में एक बार इस कक्षा की गायकी की ओर राजाभैया ने ध्यान देना चाहिए तथा कक्षाध्यापक को उनकी सलाह से अपना काम करना चाहिए, तब सब ठीक होगा।

**तृतीय वर्ष :** इस कक्षा के छात्रों ने छः माह का अपना पाठ्यक्रम पूर्ण किया है। कक्षा का काम अन्य एक शिक्षक अस्थाय रूप से देख रहे हैं। कारण यहाँ के नियत कक्षाध्यापक ऐसे ही समय में अवकाश पर चले गये हैं। शिक्षक की अनुपस्थिति का परिणाम लड़कों को भुगतना पड़ रहा है। चीजें कण्ठस्थ हो चुकी हैं। परन्तु गायकी में मोहकता नहीं है। ग्वालियर की खास गायकी का रंग भी उनके गायन में नहीं दिखाता। तानों की सुसंगतता तथा उन्हें स्थायी से जोड़ना, स्वरस्थान, स्वर और शब्दों का उच्चार आदि बातों में बहुत त्रुटियाँ हैं। राजाभैया व भास्करराव ने गायकी के पाठ जो लिखकर रखे हैं, उसे इन सभी विद्यार्थियों को प्रथमतः तैयार करना चाहिए। वह हो जाने पर शिक्षक ने यदि नये-नये राग बताये तो हितकारक होगा। शाला के शिक्षण में एक-सूत्रता रहना इष्ट है। वह साध्य होनेपर आगे का विशेष अभ्यास कराना शिक्षकों के उत्साह व कुशलता पर रहेगा।

सारांश नियत कक्षाध्यापक पुनः उपस्थित होने पर राजाभैया अथवा भास्करराव को कक्षा में बीच-बीच में बुलाकर, अपनी गायकी व बड़े ख्यालों का काम कैसे चल रहा है, यह उन्हें दिखाना चाहिए जो बहुत हितकर होगा। कारण ये छात्र बाद में उन्हीं शिक्षकों के पास जायेंगे। महफिली रंग का गायन लड़कों को इसी कक्षा से सिखाना है, यह सदा ध्यान में रखा जाय। शिक्षक ने बार-बार कक्षा में चीजें गाकर सुनानी चाहिए, तथा लड़कों को भी हूबहू वैसी ही गाकर शिक्षक को सुनानी चाहिए। ऐसा नित्य का शिक्षण-क्रम रहने से समस्त साध्य हो जाता है।

**चतुर्थ वर्ष :** इस कक्षा में भास्करराव के स्थान पर नवनियुक्त शिक्षक काम करते हैं। वे नये व अननुभवी होने से जो लाभ भास्करराव से होता वह नहीं हो रहा है; यह स्पष्ट ही है। नये शिक्षक ने लड़कों का छः माह का कोर्स करवा लिया है। कुछ रागों की गायकी भी बताई है। लड़के बड़ा ख्याल अभी अच्छी तरह गा नहीं पाते। तान लेने में तथा लेकर पुनः ताल के साथ स्थायी के मुखड़े पर आने में बहुत कसर है। स्वर-स्थान, शब्दोच्चार आदि जैसे चाहिए वैसे सुन्दर नहीं हैं। इन सारी बातों की ओर बीच-बीच में भास्करराव ध्यान दें। यही लड़के आगामी वर्ष फाइनल परीक्षा में बैठनेवाले हैं। अतः इसी कक्षा में उनका गायन अच्छा हो जाना चाहिए। राजाभैया की गैरहाजिरी का इस कक्षा पर भी परिणाम हुआ है, ऐसा निरीक्षण के समय प्रतीत हुआ। इधर कुछ दिनों से थियरी की ओर शिक्षकों का ध्यान जितना चाहिए उतना नहीं जा रहा है। आगामी छः माह में थियरी उत्तम तैयार होगी, ऐसा शिक्षक प्रयत्न करें। कक्षाध्यापक अपनी बुद्धि के अनुसार मन लगाकर काम करते हैं। परन्तु पढ़ाने का अनुभव उन्हें थोड़ा ही होने से कुछ त्रुटियाँ रहना स्वाभाविक है। इस कक्षा में कुछ लड़के अच्छे होनहार हैं। उनकी ओर ध्यान देने पर वे शाला को अच्छा यश देंगे। इस कक्षा में तथा तीसरे वर्ष की कक्षा में ख्याल गायन

प्रौढ़ तथा सुडौल होना चाहिए। इन बातों को साध्य करने का उपाय यही है कि राजाभैया तथा भास्करराव ने समय-समय पर नीचे की कक्षाओं में जाकर वहाँ की गायकी पर ध्यान देना चाहिए। एक बार ढंग बिगड़ जाने पर वह अन्त तक बाधक होता है। केवल चीजें किसी तरह नोटेशन के अनुसार याद करने पर सारा काम हो गया, ऐसा समझना गलत है। नोटेशन तो केवल तालीम मात्र है। रागों की भिन्न-भिन्न प्रकार की खूबियाँ श्रोताओं के सामने प्रकट करना—यह गायकी है। तालीम पूर्ण हो जाने पर गायकी का काम हाथ में लेना है। चीजें जैसी महफिल में गायी जाती हैं, उसी तरह गाने के लिए सिखाना शिक्षक का काम है। इस पर ज्येष्ठ शिक्षकों का जितना ध्यान रहेगा उतना अच्छा ही है।

**पंचम वर्ष :** इस कक्षा में लगभग नौ-दस विद्यार्थी हैं। जो आगामी नवम्बर में सर्टिफिकेट यानी फाइनल की परीक्षा में बैठेंगे। इस कक्षा में राजाभैया के स्थान पर भास्कर राव काम कर रहे हैं। नियत शिक्षक से लड़कों को जो लाभ होता है, वह अस्थायी रूप में काम करने वाले व्यक्ति से नहीं होता, यह स्पष्ट ही है। इस कक्षा को चार महीने से राजाभैया की देखभाल व तालीम न होने से इनका बहुत नुकसान हुआ है। लड़कों की गायकी पर इस कक्षा में महफिल के गायन का रंग जो आना चाहिए, वह नहीं आया। शब्दोच्चार, स्वरोच्चार में भी पर्याप्त त्रुटियाँ दिखाई दीं। पाठ्यक्रम की चीजें याद हो चुकी हैं। गायकी भी कुछ रागों की हुई है, परन्तु इतना ही पर्याप्त नहीं है। वापस आने पर राजाभैया ने अधिक परिश्रम करके सारी त्रुटियाँ दूर करनी चाहिए। थियरी का काम भी यथायोग्य रीति से नहीं हुआ है। आगामी छः माह तक ऐसा ही चलता रहा तो ये लड़के प्रमाण-पत्र पाने योग्य नहीं होंगे—ऐसी शंका है।

### विशेष सूचना

इस बार विशेष सूचना करने लायक कुछ प्रतीत नहीं हुआ। तथापि दो-तीन सूचनाएँ यहाँ पर कर देता हूँ।

(१) लड़कों का जितना ध्यान, चीजें याद करने की ओर तथा गला घुमाने की ओर जा रहा है, उससे अधिक गायन की वास्तविक कला संपादन करने की ओर जाना चाहिए।

(२) शनिवार की बैठकों में शिक्षकों का गायन उच्च तीन कक्षाओं को सुनवाने में यह उद्देश्य है कि, ज्येष्ठ शिक्षकों का तथा हेडमास्टर महोदय का गायन बारबार सुनने का उन्हें अवसर मिले तथा उनका अनुकरण भी वे कर सकें। मुझे ज्ञात हुआ कि शनिवार की बैठक में राजाभैया व भास्करराव कभी-कभी गाते हैं, परन्तु हेडमास्टर कदापि नहीं। हेडमास्टर महोदय ने प्रत्येक बार ध्रुवपद का अपना गायन लड़कों को सुनाना ही चाहिए। अन्य शिक्षकों की भाँति उनके पास परिश्रम व महत्व का ऐसा कोई काम नहीं है। विशेष परिश्रम करते हुए प्रति सप्ताह उन्हें उच्च कक्षा के छात्रों को ध्रुवपद सुनाना चाहिए। प्रति शनिवार को उन्हें महल में जाना पड़ता है, यह भी ज्ञात हुआ। यदि ऐसा है तो बैठक का दिन ही बदल दिया जाय। इन बैठकों को मैं बहुत महत्व देता हूँ।

जिनमें सीनियर शिक्षकों के पीछे जूनियर शिक्षक बैठकर गायन में मदद करें। बैठक में प्रमुख महत्व सीनियर शिक्षकों के गायन का है।

(३) राजाभैया व भास्करराव को नीचे की कक्षाओं में समय-समय पर जाकर वहाँ की ख्यालगायन शैली तथा तानें सुसंगत लेने का ढंग छात्रों को सिखाना चाहिए। जूनियर शिक्षकों को अभी इतना अनुभव नहीं है। ये लड़के चाहे जैसा गाकर उच्च कक्षा में आये तो फिर उन्हें सुधारना कठिन होगा। लड़कों के ख्यालगायनों में अभी बहुत सुधार की आवश्यकता प्रतीत होती है।

(४) श्री बलवन्त ने सभी कक्षाओं में ध्रुवपद बताने का काम अच्छा किया है। उनकी मेहनत से लड़कों को लय-ज्ञान अच्छा हुआ है। सीनियर लड़कों को काम अधिक रहता है। उन्हें तानों सहित ख्याल उत्तम गाना है। अतः समय कम रहता है, यह ध्यान में रखते हुए चतुर्थ व पंचम वर्ष ध्रुवपद का काम चुना हुआ सीमित ही सिखाया गया तो भी ठीक है। परीक्षा उत्तीर्ण होने पर इच्छानुसार ये विद्यार्थी आगे का काम तैयार कर सकते हैं।

(५) कक्षाओं में थियरी का शिक्षण सावधानी से कराना चाहिए। प्रत्येक छात्र से थियरी तैयार करायी जाय। मैं अब ऐसी भी योजना करने वाला हूँ कि, फिलहाल केवल उच्च तीन कक्षाओं में थियरी की परीक्षा लिखित रूप से हो। दो घण्टे का प्रश्न-पत्र देकर उनके उत्तर लिखित रूप से लड़के दें। अर्थात् वार्षिक परीक्षा अब लिखित व मौखिक दोनों रूप से कराने का समय आया है। इस योजना से लड़कों का ज्ञान पक्का होगा तथा इस विषय पर वे लिख भी सकेंगे।

(६) शिक्षक लम्बी छुट्टी पर अपनी इच्छानुसार चले जाते हैं जिससे कक्षा का बहुत नुकसान होता है। इसपर भी जब एक ही साथ दो शिक्षक अवकाश पर चले जाते हैं तब तो बहुत ही बाधा उत्पन्न होती है। योग्य कारणों के सिवाय शिक्षक अवकाश न लें। शाला के कार्य की ओर दुर्लक्ष्य न करें, ऐसा मेरा मत है। उपरोक्त बातों से इस छमाही में लड़कों का बड़ा नुकसान हुआ है।

वि. ना. भातखंडे

प्राचार्य

स्व० श्री मालचन्द्र सीताराम सुकथनकर

स्व० श्री शंकरराव कारनाड़

स्व० प्रो० प्रेमवल्लभ जोशी

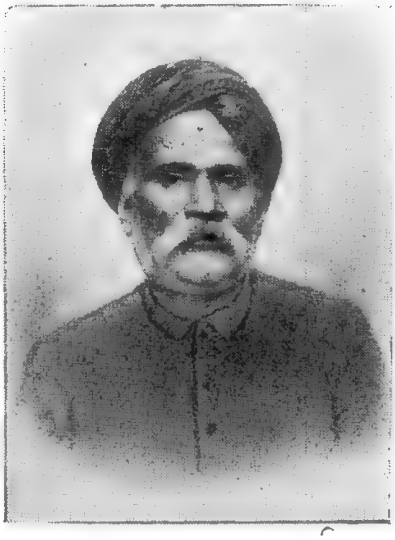

स्व० श्री नारायण गोविन्द रातांजनकर

स्व० श्री ब्रिजकिशन कौल

राय उमानाथ बली

स्व० राय राजेश्वर बली

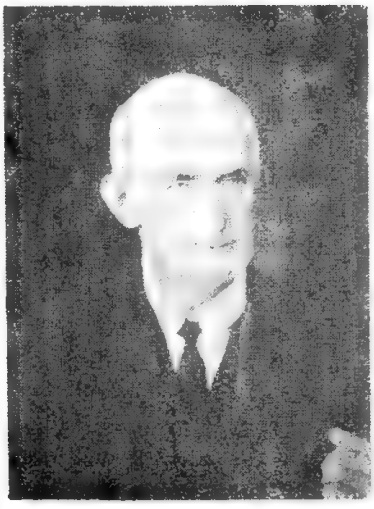

स्व० सर विलियम सिक्लेअर मैरिस

नौतलाब गेस्ट हाउस,
दि० १९ नवम्बर १९२६,
लश्कर

**सन् १९२६ के वार्षिक परीक्षा का विवरण**

मेहरबान रावसाहब जी० व्ही० अंबडेकर,

सेक्रेटरी,

श्री माधव संगीत विद्यालय

आपके आज्ञापत्रानुसार मैं दिनांक १०-११-२६ बुधवार को यहाँ आ पहुँचा। तथा दिनांक ११ नवम्बर गुरुवार से श्री माधव संगीत विद्यालय की वार्षिक परीक्षा प्रारम्भ की। परीक्षा का काम कल सम्पूर्ण हुआ। परीक्षाफल संलग्न है। जिससे प्रत्येक कक्षा सम्बन्धी विस्तृत जानकारी ज्ञात होगी।

(२) सभी बातों को देखते हुए विद्यालय का कार्य अच्छा प्रतीत हुआ। विशेषतः तीसरी व चौथी कक्षा के लड़कों का काम अधिक संतोषजनक रहा।

(३) इस वर्ष फाइनल अर्थात् पाँचवें वर्ष की कक्षा में पाँच विद्यार्थी थे। परन्तु परीक्षा के पूर्व उन्होंने एक ऐसा लिखित पत्र दिया कि अनेक कारणों से उनकी गायकी का काम तैयार नहीं हो पाया तथा इस त्रुटि के कारण इस वर्ष वे परीक्षा में बैठना नहीं चाहते। उनके इस पत्र के कारण उनकी परीक्षा नहीं ली गई। उनको दी जाने वाली छात्र-वृत्ति इस वर्ष बन्द हो जायगी, ऐसा उन्हें समझा दिया है। इस वर्ष उपाधि का अन्यत्र बहुत आदर होने से उत्तम रीति से अभ्यास न किये हुए विद्यार्थी यदि परीक्षा में न भी बैठे तो कोई अनुचित नहीं, ऐसा मुझे प्रतीत होता है।

(४) मैं अब एक ऐसी सूचना करता हूँ कि, प्रतिवर्ष अक्टूबर माह में हेडमास्टर व राजाभैया फाइनल के विद्यार्थियों की जाँच करें तथा इससे जो विद्यार्थी अच्छी प्रकार से उत्तीर्ण होंगे, उन्हें ही नवम्बर की परीक्षा में बैठने की अनुमति दी जाय।

(५) भविष्य में और भी एक बात की ओर ध्यान देना आवश्यक होगा। अपने विद्यालय से फाइनल परीक्षा उत्तीर्ण हुए विद्यार्थी उचित व्यवसाय के अभाव में अपने गायन की मेहनत छोड़ देते हैं तथा गला बिगड़ने न देने की ओर ध्यान नहीं देते। अब भविष्य में भिन्न-भिन्न शहरों में संगीत की कक्षाएँ प्रारम्भ करने का समय आनेवाला है। अतः फाइनल उत्तीर्ण तथा मधुर और तैयार गले के विद्यार्थी इस काम के लिये उपलब्ध होते रहना इष्ट होगा। यही अपना साध्य होने के कारण एक ऐसा नियम करना हितकर

होगा कि, फाइनल परीक्षा उत्तीर्ण हो जाने पर वह विद्यार्थी और एक वर्ष अथवा छः माह तक श्री राजाभैया की निगरानी में अच्छी मेहनत करते हुए उनका प्रशस्ति-पत्र प्राप्त कर ले। ऐसा प्रशस्ति-पत्र प्राप्त करने पर ही उन्हें उनका डिप्लोमा दिया जाय। जो विद्यार्थी बाहर से आये हुए होंगे तथा जिन्हें सालभर यहाँ रहना सम्भव न होगा, उनके लिए यह नियम लगाने की आवश्यकता नहीं। परन्तु अपने राज्य में नियुक्ति करते समय इस प्रकार प्रशस्ति पत्र प्राप्त किए हुए विद्यार्थियों को प्राथमिकता दी जाने में कोई बाधा प्रतीत नहीं होती। विलायत में बैरिस्टर की परीक्षा पास करने पर एक वर्ष तक किसी अच्छे प्रसिद्ध बैरिस्टर की देखरेख में काम किये बिना फाइनल सर्टिफिकेट न देने का नया नियम अब हुआ है। ऐसे नियमों से विद्यालय का तथा शिक्षा-विभाग का हित ही होगा, ऐसी मेरी धारणा है। विद्यार्थियों की परीक्षा पुनः लेने की आवश्यकता नहीं। वे योग्य मेहनत किए हुए हैं, ऐसा प्रशस्ति-पत्र केवल प्राप्त कर ले। यह सूचना जब भी उचित हो कार्यान्वित की जाय।

**प्रिपरेटरी प्रथम विभाग** : इस कक्षा में नवीन प्रविष्ट विद्यार्थी स्वरों को लगाने के उद्देश्य से रखे जाते हैं। वार्षिक परीक्षा के लिए इस कक्षा में छब्बीस लड़के थे। जिनमें से कुछ परीक्षा में नहीं बैठे तथा कुछ कच्चे हैं। केवल ग्यारह लड़के प्रथम वर्ष की कक्षा में चढ़ाये जाकर जनवरी के प्रारम्भ में उनकी पुनः जाँच की जाय। जो लड़के स्वर में हों उन्हें ऊपर चढ़ाया जाय। लगभग पाँच लड़के ऊपर चढ़ाने से पहले वर्ष के दोनों विभागों में लड़कों की संख्या समान हो जायगी। "ए" विभाग में सभी अच्छे लड़के व "बी" में कमजोर, ऐसा हो जाने पर हेडमास्टर की कक्षा से कुछ अच्छे लड़के "बी" विभाग में रख दिए जायँ तथा उनके स्थान पर प्रिपरेटरी से आये हुए लड़के रखे जायँ। दोनों कक्षाओं में पहले वर्ष का पाठ्यक्रम पूरा करना है। अतः ऐसा करने में कोई बाधा नहीं। प्रिपरेटरी की कक्षा में लड़कों को बारह-बारह माह तक डाले नहीं रखना चाहिए। लड़के स्वर में आ जाने पर उन्हें ऊपर की दोनों कक्षाओं में बाँट दिया जाय। बाँट देने की यह व्यवस्था जनवरी के अन्त तक की जाय। इन नये लड़कों के कारण कोर्स के विद्यार्थियों का नुकसान न हो, इस ओर मात्र ध्यान दिया जाय। इस समय पहले वर्ष के "बी" विभाग पर जो शिक्षक काम करते हैं वे अस्थायी होने से श्री खण्डेराव के लौट आने तक "बी" विभाग का काम करते रहेंगे। श्री खण्डेराव ऊपर किले में चले जाने पर उनकी यह कक्षा श्री तात्या को सौंप दी जाय। आगे चलकर तात्या को उज्जयिनी में संगीत कक्षा प्रारम्भ करने के लिए यदि भेजा गया तो श्री बलवन्तराव को पहले वर्ष का "बी" विभाग दिया जाय। बलवन्तराव सभी कक्षाओं में सप्ताह में एकबार जाकर ध्रुवपदों की विशेष तालीम दें। ध्रुवपद का प्रारम्भिक एवं सरल काम कक्षाध्यापक स्वयं करें। जिन कक्षाओं पर ध्रुवपद के लिए वे जावेंगे, उन कक्षाओं के शिक्षकों ने बलवन्तराव की कक्षा का काम चलाना चाहिए। बलवन्तराव अनुभवी शिक्षक होने से ऐसी योजना सुझाई है।

इस बार पहले वर्ष की कक्षा में गायकी कच्ची रही। अतः ऐसी सूचना करता हूँ कि, एक वर्ष के लिए श्री बालाजी पाठक जैसे होनहार विद्यार्थी को, जो गत वर्ष उत्तीर्ण हुआ है, प्रतिमाह दस रुपये की विशेष छात्रवृत्ति देकर उसे इस कक्षा की गायकी तैयार

करने के लिए कक्षाध्यापक को सहायता प्रदान करने का काम सौंप दिया जाय। यदि ऐसी छात्रवृत्ति की उसे आवश्यकता न हो तो प्रतिदिन डेढ़ घण्टे अन्य आवश्यक काम दिया जाय। ऐसे विद्यार्थियों से यह भी निश्चित कर लिया जाय कि वे राजाभैया के सामने प्रतिदिन प्रातः दो घण्टे गायन की मेहनत करें, वर्षान्त बाद उनका प्रशस्ति-पत्र प्राप्त करें तथा विद्यालय में प्रतिदिन घण्टे डेढ़ घण्टे काम भी करें। ऐसा होने से विद्यार्थी का तथा विद्यालय का हित होगा।

**प्रिपरेटरी द्वितीय विभाग** : इस कक्षा की स्थिति प्रिपरेटरी प्रथम विभाग से कुछ आगे की है, ऐसा नहीं समझना चाहिए। इस कक्षा में पहली क्रमिक पुस्तक सम्पूर्ण सिखाना है। कक्षा के लड़के वर्षान्त के बाद दूसरे साल की कक्षा में जायेंगे, यह सदा ध्यान में रखना है। इस बार इस कक्षा का काम बहुत पिछड़ गया है। कक्षा में अप्रैल से नियमित शिक्षक के अभाव में जो एक नये शिक्षक काम करते थे वे कक्षा को ठीक तरह तैयार नहीं कर पाये। अतः बाद में उनके स्थान पर श्री रामजी ने परिश्रम करके लड़कों से कुछ काम तैयार करवा लिया। ये नवनियुक्त शिक्षक सेन्ट्रल स्कूल में कोई भी कक्षा ठीक तरह सँभाल पायेंगे, ऐसा प्रतीत नहीं होता। इस सम्बन्ध में मैं ऐसी सूचना करता हूँ कि, उन नये शिक्षक को अपने पूर्व स्थान पर भेज दिया जाय तथा श्री तात्या मास्टर को पहले वर्ष की कक्षा सौंप दी जाय। आज जो लड़के इस कक्षा में हैं उन्होंने बारह माह पूर्ण नहीं किए हैं, ऐसा ज्ञात हुआ। वे अब हेडमास्टर के पास जायेंगे और इस कक्षा में प्रिपरेटरी कक्षा से उत्तीर्ण हुए लड़के आ जावेंगे।

**प्रथम वर्ष** : इस कक्षा से कुल इक्कीस विद्यार्थी परीक्षा में बैठे थे। जिनमें चार अत्यंत कमजोर हैं। अतः उन्हें ऊपर की कक्षा में न भेजा जाय। अर्थात् सत्रह लड़के इस कक्षा से ऊपर जावेंगे। इनमें से कुछ लड़के होनहार भी हैं। लड़कों का स्वरज्ञान अच्छा प्रतीत हुआ। जिसका श्रेय श्री हेडमास्टर महोदय को है। कक्षा में पहिले साल की गायकी जैसी होनी चाहिये, वैसी तैयार नहीं थी। परन्तु आगामी कक्षा में पुनः ये ही दस राग तैयार कराने हैं। गायकी के लिये भी वहाँ समय मिलेगा, ऐसा समझकर उन्हें ऊपर की कक्षा में भेजने में मुझे कोई आपत्ति नहीं है। तथापि इन लड़कों की कमजोरी से ऊपर की कक्षा के शिक्षक का कार्य किंचित् बढ़ जायगा, इसमें संदेह नहीं। प्रथम वर्ष की गायकी की उत्तम तानें श्री राजाभैया के पास तैयार हैं। जिन लड़कों की तानें तैयार न होंगी, उन्हें ऊपर की कक्षा में चढ़ाया नहीं जायगा, ऐसी ताकीद पहले से ही देनी चाहिये। कक्षा का काम ठीक प्रतीत हुआ। गायकी का प्रारंभ अब इस कक्षा से किया जाता है। अतः शिक्षक इस ओर दुर्लक्ष्य न करें।

**प्रथम वर्ष (ब)** : परीक्षा में बीस लड़के थे। जिनमें से प्रायः सभी स्वर में आ चुके हैं। कुछ लड़कों का स्वरज्ञान भी अच्छा हुआ है। कक्षा में चार लड़के एक दम कच्चे हैं। उन्हें ऊपर चढ़ाने में कोई अर्थ नहीं। शेष सोलह लड़के (अ) विभाग में भेजने हैं। इस क्लास के संबंध में शिक्षकों की कुछ भ्रान्त धारणा हो रही है, ऐसा मुझे प्रतीत होता है।

**द्वितीय वर्ष** : इस कक्षा से परीक्षा में कुल नौ विद्यार्थी सम्मिलित हुये, जिनमें केवल सात ऊपर की कक्षा में भेजने लायक प्रतीत हुए। इनके अतिरिक्त इस कक्षा में और भी

पाँच-छः लड़के हैं। परन्तु उनकी तैयारी न होने से उन्हें परीक्षा में सम्मिलित नहीं किया गया, ऐसा मालूम हुआ। लड़कों ने कोर्स के गीत तैयार किये हैं, परन्तु उनकी गायकी समाधानकारक प्रतीत नहीं हुई। दो साल की दृष्टि से लड़कों के गले तैयार नहीं पाये। यह त्रुटि शिक्षक के ध्यान में लाई गई है। भविष्य में वे अधिक ध्यान देंगे, ऐसी मुझे आशा है। कुछ लड़के ताल भी ठीक सँभाल नहीं पाते हैं। समय-समय पर तबले के साथ उन्हें गवाकर तबले के बोलों का परिचय भी करा देना हितकर होगा। यह दोष कुछ प्रमाण में वरिष्ठ कक्षाओं में भी मैंने पाया। लड़के केवल अपने हाथ के ताल को ही ध्यान में रखते हुए गाते हैं, यह अच्छा नहीं। तबले के बोल पहिचान कर उसके अनुसार गायन करने का अभ्यास नीचे की कक्षा से ही कराना इष्ट होगा। थियरी की ओर भी कक्षा में अच्छा ध्यान नहीं दिया गया।

**तृतीय वर्ष** : इस कक्षा में केवल पाँच ही विद्यार्थी हैं। वे सभी परीक्षा में बैठे थे। इनमें से चार उत्तीर्ण हुए। उन्हें अब ऊपर की कक्षा में चढ़ाया जाय। एक विद्यार्थी का अभ्यास अभी तक अच्छा नहीं हुआ है। कक्षा में कम लड़के होने का कारण ऐसा बताया गया कि चार-पाँच लड़के अन्य स्थानों के थे, जो वापस नहीं आये। कक्षा का काम अच्छा हुआ है।

**चतुर्थ वर्ष** : इस कक्षा से कुल दस विद्यार्थी परीक्षा में बैठे थे। जिनमें से आठ अच्छ पास हुए। अब उन्हें पाँचवें वर्ष में अर्थात् श्री राजाभैया की कक्षा में चढ़ाया जाय। कक्षा का काम बहुत अच्छा हुआ है।

नये बजट में एक हारमोनियम शिक्षक, एक सितार शिक्षक व एक तबला शिक्षक ऐसे स्थान स्वीकृत हुए हैं, ऐसा मुझे ज्ञात हुआ। मेरी ऐसी नम्र सूचना है कि विद्यालय में फिलहाल हारमोनियम चालू न किया जाय। पेटी की कक्षा आरंभ करने से अच्छे पेटी-वादक तो निकलेंगे ही नहीं, परंतु गायन की कक्षाओं में बाधा उत्पन्न होगी। विद्यार्थियों को हारमोनियम सुलभ प्रतीत होकर वे गायन की ओर दुर्लक्ष्य करेंगे। योग्य स्वरज्ञान के अभाव में उन्हें हारमोनियम भी अच्छा नहीं आयेगा।

सितार शिक्षक रखने की जल्दबाजी आज ही करने की आवश्यकता मुझे प्रतीत नहीं होती। आगे चलकर हिन्दुस्तान में प्रसिद्धि पाया हुआ तंतकार यदि कोई मिला तो दो साल के लिये अपने विद्यालय में रखकर उत्तम स्वरज्ञान प्राप्त किये हुए विद्यार्थियों के लिये एक कक्षा आरंभ की जा सकती है। मुझे लगता है, शागिर्द पेशे में मरहूम बाबू खाँ के पुत्र नौकर हैं। आवश्यकता प्रतीत होने पर कुछ भत्ता देकर उसे सितार शिक्षण का काम दिया जा सकता है। निम्न कोटि का तंतकार रखने की अपेक्षा बिलकुल ही न रखना अच्छा, ऐसा मेरा अनुभव है। अपने वहाँ और भी सितारिये नौकर हैं। उन्हें लिखित आदेश होने पर वे भी सितार सिखा सकेंगे। उनकी कला का प्रदर्शन विद्यार्थियों के सामने बीच-बीच में होना चाहिये, ऐसी सूचना प्रत्येक रिपोर्ट में मैं करता आया हूँ। उसपर भी इस बार विचार हो, ऐसी प्रार्थना है।

मुझे अब ऐसा भी मालूम हुआ है कि, शागिर्द पेशा खाते में अन्य दो कुशल गायकों की नियुक्ति हुई है। मेरे पिछले रिपोर्टों में मैं सूचना करता आया हूँ कि, माधव संगीत

विद्यालय के उच्च तीन कक्षाओं के विद्यार्थियों को विभिन्न रंग-ढंग का गायन सुनने की संधि मलने पर उनका बहुत हित होगा। जब सुदैव से ऐसा योग आया है तो मेरी प्रार्थना है कि, उपरोक्त दोनों गवैयों को सप्ताह में दो बार माधव संगीत विद्यालय में जाकर गाने का लिखित आदेश दिया जाय। जिससे लड़कों की गायकी तुरंत सुधर जायगी, ऐसा मुझे विश्वा है। इतना ही नहीं, इन दोनों गवैयों ने अपने साथ एक अथवा दो सीनियर लड़कों को लेकर बैठना चाहिये। यह विद्यालय सरकारी है तथा गवैये भी सरकारी नौकर हैं। अतः मेरी सूचना सहज अमल में लाने योग्य प्रतीत होती है। अभी तक शागिर्द पेशे में गवैये नहीं थे। जिससे यह प्रार्थना मान्य होने में विलंब हुआ। कै० श्रीमन्त महाराज ने यह प्रार्थना मान्य किया हुआ मेरे स्मरण में है। शाला में जाकर कम से कम घंटे भर लड़कों को सुनाना, यह उनकी इच्छा पर छोड़ना नहीं चाहिये। उन्हें लिखित आदेश विभाग की ओर से दिया जाने पर सब ठीक होगा। मेरी ऐसी भी सूचना है कि प्रति वर्ष दस रुपये की एक स्कालरशिप फाइनल में जो प्रथम आयेगा उस विद्यार्थी को दी जाय। स्कालरशिप एक वर्ष के लिये ही हो। कालेजों में फैलोशिप होती है। उसी प्रकार की यह भी होगी। ऐसा विद्यार्थी न मिलने पर उसके नीचे का चुना जाय। अपने अभ्यास में प्रगति करते हुए शाला में जो भी काम दिया जायगा वह उसे करे, ऐसा उससे आश्वासन लिया जाय।

और भी एक सूचना ऐसी करना चाहता हूँ कि, अब सरकारी नौकरी में···तथा··· हैं। उनकी भिन्न-भिन्न कलाएँ अपने विद्यालय के विद्यार्थियों को प्राप्त हों, इसलिये इन दोनों कलावन्तों के पास अपनी शाला के दो-दो होनहार विद्यार्थी, जिन्हें वे पसन्द करेंगे; भेज दिये जायँ। इन विद्यार्थियों ने ख्यालगायन में निपुणता संपादन करना चाहिये। अन्य शब्दों में ऐसा कहा जाय कि ये विद्यार्थी प्रारंभिक गायकी अथवा कला संपादन करके उसमें ही विशेषता प्राप्त करें। जो आगे चलकर संगीत व्यवसाय करना पसंद करेंगे, ऐसे ही विद्यार्थी अधिक उपयुक्त होंगे। इसी प्रकार दो विद्यार्थी·····के पास उनकी कला प्राप्त करने के लिये दिये जायँ। इन विद्यार्थियों को कहाँ व कब भेजना, इसका निर्णय अधिकारी करें।

**तवायफ स्कूल** : इस शाला की परीक्षा में पाँच लड़कियाँ बैठी थीं। इनमें दो लड़कियाँ ठीक हैं। ये लड़कियाँ शाला में चार-पाँच वर्ष से पढ़ रही हैं। अतः उनको स्वरज्ञान अब हो गया है। छः-सात रागों के ख्याल गायकी सहित हो जाना कोई आश्चर्यजनक नहीं है। इतना काम सेंट्रल स्कूल के लड़के दो साल में तैयार कर लेते हैं। इन लड़कियों की गायकी व ख्याल गाने के ढंग में भी बहुत-सा सुधार होना है। शाला पर होने वाले व्यय को देखते हुए किया हुआ कार्य बहुत ही अल्प प्रतीत होता है। वहाँ पर नियत अध्यापक की सहायता के लिये एक···गवैया भी है। उसका काम लड़कियों के गायन में कुछ भी व्यक्त नहीं हुआ। ऐसा मुझे कहा गया कि वे ईदूखाँ के घराने के हैं। कक्षा सिखाने की कला उन्हें शायद अभी तक मालूम नहीं है। मेरी सूचना है कि गायक महोदय को दो-तीन महीने सेंट्रल स्कूल में हेडमास्टर की निगरानी में क्लास सिखाने की कला साध्य करने के लिये भेजा जाय तथा उनके स्थान पर कुछ दिनों के लिये·····को भेजा जाय। ·····भी उसी विभाग में नौकर हैं। अतः यह तबादला किया जा सकता है। ·····दो-तीन वर्षों से

प्रिपरेटरी वर्ग सिखाते हैं। अतः तवायफ स्कूल की छोटी लड़कियों को स्वर में लाने का काम वह तुरंत करेंगे।···सेन्ट्रल स्कूल में काम सीखेंगे तथा विद्यार्थियों को गायकी कैसी सिखाई जाती है, इस पर ध्यान देंगे। उसी प्रकार शिक्षकों की शनिवार की बैठक में गाने की उन्हें आदत भी पड़ेगी। और भी एक सूचना है कि·····और·····इन दो लड़कियों को सेन्ट्रल स्कूल के सीनियर लड़के ख्याल व गायकी कैसे गाते हैं, यह देखने के लिये माह में एक-दो बार सेन्ट्रल स्कूल में भेजा जाय।

कक्षा में शिक्षक गायकी कैसे सिखाते हैं व लड़के कैसे गाते हैं, यह सारा इन लड़कियों के समझ में आयगा। ऐसे समय पर नियत शिक्षक की उपस्थिति इष्ट होगी। समय व स्थल हेडमास्टर निश्चित करें। तवायफ स्कूल के मास्टर शिक्षकों की बैठक में गाते नहीं, इसलिये ख्याल तथा उसकी गायकी वे योग्य रीति से पढ़ा नहीं पाते हैं। ऐसा आक्षेप आज पाँच वर्षों से मैं सुन रहा हूँ। और उसमें तथ्य भी है। मेरी उपर्युक्त सूचना-पालन से इन आक्षेपों को स्थान न रहेगा। ·····को ख्याल व उसकी गायकी प्रत्यक्ष सुनकर एवम् शिक्षकों में बैठकर गाये बिना सिखाना नहीं आयेगा, वह स्पष्ट ही है। अतः ऐसा करने के लिये उन्हें आदेश होना हितकर है। लड़कियों को यदि ख्याल-ध्रुवपद का गाना सिखाना है तो वह काम योग्य अधिकारी के द्वारा योग्य प्रकार से ही होना चाहिये। सारांश इस तवायफ स्कूल में अच्छा सुधार करने का अब समय आया है। यदि ऐसा न हुआ तो परिणाम कुछ भी न होकर सभी व्यर्थ होगा, ऐसी मुझे शंका है। यदि ख्याल-ध्रुवपद का गायन इन्हें न सिखाकर इनका खास गायन अर्थात् ठुमरी, दादरा इत्यादि सिखाने का निश्चित हुआ तो स्कूल में भेजने की आवश्यकता न रहेगी। प्रारंभ में दो वर्ष स्वरज्ञान इत्यादि करा देना पर्याप्त है।

V. N. Bhatkhande
Examiner

नौतलाब, लश्कर

दिनांक ६ नवंबर १९२७

मेहरबान रावसाहब जी० व्ही० अंबर्डेकर बी० ए०,
सेक्रेटरी,
माधव संगीत विद्यालय,
लश्कर

की सेवा में,

आपके पत्र के आदेशानुसार संगीत विद्यालय की इस साल की वार्षिक परीक्षा लेने हेतु दि० २८ अक्टूबर, शुक्रवार को मैं यहां आकर उपस्थित हुआ। दूसरे दिन अर्थात् शनिवार दि० २९ को परीक्षा कार्य आरंभ किया, जो प्रायः सप्ताह भर चलता रहा। कक्षाओं में छात्रसंख्या अधिक होने से प्रातः व सायं दोनों समय पर परीक्षा कार्य चालू रहा। कुल मिलाकर एक सौ लड़के विभिन्न कक्षाओं से परीक्षा में बैठे थे। इस बार फाइनल अर्थात् पंचम वर्ष में ग्यारह लड़के परीक्षा में बैठे। जिनमें छः उत्तीर्ण हुए। उनके नाम रिपोर्ट में लिखे हैं। इस वर्ष उन्हें प्रमाण पत्र दिये जायें, ऐसी मेरी सिफारिश है। शेष लड़कों के अभ्यासक्रम के राग व उनकी गायकी जैसी चाहिए, वैसी तैयार नहीं थी। अतः उन पर बाद में विचार किया जाय।

(अग्रिम अंश पूर्णतः खण्डित है)

इस वर्ष प्रिपरेटरी के तीन विभाग हैं। इनमें लड़कों को स्वरज्ञान नहीं हुआ है। इन कक्षाओं में दो-दो वर्षों के कुछ लड़के हैं, ऐसा ज्ञात हुआ। अर्थात् इन तीनों विभागों में स्वरज्ञान की ओर शिक्षकों ने योग्य ध्यान नहीं दिया। प्रथम दो विभागों में लगभग तीस लड़कों में से पाँच भी शीघ्रता से स्वर नहीं पहचान सके, यह देखकर आश्चर्य लगता है। तथापि प्रथम वर्ष की कक्षा में पुनः ये ही राग सिखाए जाते हैं, अतः कुछ लड़कों को ऊपर की कक्षा में भेजने की सूचना रिपोर्ट में की है। इसी प्रकार स्वरोच्चार व स्वरस्थान की ओर भी दुर्लक्ष्य हुआ है। इस ओर हेडमास्टर का ध्यान जा सकता था। कक्षा के प्रत्येक लड़के की ओर ध्यान न दिया जाने से उनका स्वरज्ञान हो नहीं पाया।

(अग्रिम ८ पंक्तियाँ खण्डित हैं)

इस विषय में ऐसा कहा गया है कि कक्षा के शिक्षकों के तबादले होते रहे। फलतः यह वर्ग एक ही शिक्षक के पास पूरे वर्ष भर नहीं था। यदि ऐसा हुआ हो, तो कक्षा की संपूर्ण जिम्मेदारी उन पर न रहेगी। तथापि कक्षा के लड़के कच्चे रहकर उन्हें ऊपर चढ़ा देने से ऊपर की कक्षा के शिक्षक का काम बढ़ जायगा, इसमें शंका नहीं। अब नीचे से

ऊपर आने वाले लड़के नये हैं तथा प्रारम्भ से ही उस शिक्षक के पास रहेंगे। इनके शिक्षण का सारा भार उन्हीं पर होगा। इस संबंध में ऐसी सूचना है कि आगामी जनवरी माह के अन्तिम सप्ताह में प्रिपरेटरी व प्रथम वर्ष इन दो वर्गों की परीक्षा हेडमास्टर व राजाभैया ने अच्छी तरह लेनी चाहिये। जिसकी रिपोर्ट वरिष्ठों को सादर किया जाय। यदि प्रथम वर्ष का काम कम हुआ हो, तो इस शिक्षक को किले की कक्षा दी जाय तथा श्री तात्या को इनके स्थान पर रखा जाय।

(अग्रिम भाग खण्डित है)

तीसरी, चौथी व पाँचवीं कक्षाओं का अर्थात् श्री सदाशिव, श्री नारायण व श्री राजाभैया की कक्षाओं का काम एकदम संतोषकारक रहा। इस संबंध में अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं।

अब आगामी वर्ष के लिए प्रिपरेटरी व फर्स्ट ईयर कक्षाओं की व्यवस्था कैसी की जाय, इस विषय में एक-दो सूचनाएँ करना चाहता हूँ।

(१) प्रिपरेटरी कक्षा में एक-एक दो-दो वर्षों तक लड़कों को डाल रखना किसी भी दृष्टि से योग्य नहीं होगा। इस कक्षा में नवीन प्रवेश के लड़के आने पर उन्हें स्वर में लाया जाय। अल्प स्वरज्ञान दो-तीन माह में करवाकर उन्हें प्रथम वर्ष का अभ्यासक्रम सिखाना चाहिए। यह बात पिछले वर्षों की रिपोर्टों में मैंने लिखी थी। ऐसा कहना ही पड़ता है कि, चालू वर्ष में इस कक्षा का काम बिल्कुल ठीक नहीं हुआ। अतः ऐसी सूचना है कि, इस कक्षा के शिक्षक को इस वर्ष जनकगंज शाला में भेजा जाय। तथा वहाँ काम करने वाले शिक्षक को इधर बुलाकर उन्हें इस कक्षा का काम सौंपा जाय।

(अग्रिम भाग खण्डित है)

लय व स्वर न पहिचानने वाले चौदह लड़के इस बार प्रिपरेटरी में हैं। उसी में अब नयी भर्ती के भी जायेंगे। इनमें कुछ अच्छे कंठ के होना संभव है। यदि ऐसा हुआ तो वहाँ भी दो विभाग करने पड़ेंगे।

(अग्रिम भाग खण्डित है)

इन दो विभागों में से पहिला विभाग श्री रामजी मास्टर को दिया जाय व दूसरा छात्रवृत्ति प्राप्त श्री राजूरकर को। वे प्रतिदिन एक घण्टा शाला में आकर सिखायें। श्री राजूरकर को स्कालरशिप देते समय उनसे यह निश्चित किया हुआ है, ऐसा मुझे ज्ञात हुआ। दूसरे विभाग में भर्ती होनेवाले लड़के आयु से छोटे हैं तथा अब सर्दी का मौसम होने से उन्हें एक घण्टा शिक्षण प्रतिदिन मिला तो पर्याप्त है। पहिले विभाग में लड़कों को अल्प स्वल्प स्वरज्ञान हुआ ही है तथा वे शीघ्र ही प्रथम वर्ष की कक्षा में उन्नत होंगे। वे उच्च कक्षा में चले जाने पर नवीन प्रवेश के लड़के श्री रामजी व राजूरकर इन परीक्षोत्तीर्ण शिक्षकों के पास रहेंगे।

आगामी जनवरी में प्रिपरेटरी कक्षा की परीक्षा लेकर हेडमास्टर महोदय निश्चित करें कि कौन-से व कितने लड़कों को ऊपर चढ़ाना है। आगामी प्रथम वर्ष के श्री विष्णुपंत की कक्षा में प्रिपरेटरी के दोनों विभागों से उत्तीर्ण ग्यारह लड़के व उनकी कक्षा में जो अनुत्तीर्ण हुए हैं ऐसे कुल मिलाकर अट्ठाईस लड़के होंगे। यह कक्षा काफी बड़ी होगी। अतः

इसके दो भाग किये जायँ। जिसमें से एक श्री रामजी को व दूसरा श्री राजूरकर को सौंप दिया जाय।

( अग्रिम भाग खण्डित है )

जनवरी माह में रामजी मास्टर की ओर से अच्छे स्वरज्ञान के दस-बारह लड़के उत्तीर्ण हुए तो पहिले वर्ष के दोनों विभाग अधिक से अधिक बीस-बीस के होंगे। ऐसा होने पर कोई आपत्ति नहीं।

एक सूचना और ऐसी करना चाहता हूँ कि, चतुर्थ वर्ष के स्थायी शिक्षक श्री भास्करराव को उनकी इस कक्षा के लिए उज्जयिनी से पुनः बुलाया जाय। वे अच्छे अनुभवी व दक्ष शिक्षक होने से तीन माह के लिए की हुई उनकी वहाँ की नियुक्ति समाप्त हो गई है। अतः उन्हें यहाँ बुलाना सेन्ट्रल स्कूल के हित में होगा, ऐसा मुझे लगता है। उज्जैन के उनके स्थान पर श्री·····अथवा इसी वर्ष उत्तीर्ण हुए श्री·····अथवा अन्य कोई जो वहाँ जाने के लिए तैयार है उसे भेजा जाय। परन्तु अपने विद्यालय में शिक्षा पाकर तैयार हुआ कोई उम्मीदवार न मिलने पर यदि बाहर का ही नियुक्त करना हो तो उसको अपने विद्यालय की पद्धति श्री राजाभैया से सीखनी चाहिए। ऐसा यदि हुआ तो ही उसे उज्जैन भेजा जाय। इस व्यक्ति को अनुभव कम होगा, इसलिए फिलहाल एक वर्ष के लिए रखा जाय। उस कक्षा का कार्य आगामी वार्षिक परीक्षा में ज्ञात हो जायगा। काम यदि अपने सेन्ट्रल स्कूल की पद्धति के अनुसार अच्छा रहा तो यह नियुक्ति स्थायी की जाय। उज्जैन से भास्करराव अपने नियमित स्थान पर उपस्थित होने पर तीसरे वर्ष की कक्षा श्री गुणे के पास आयगी। तथा दूसरे वर्ष की कक्षा श्री सदाशिव अग्निहोत्री के पास पुनः आयेगी। तब सभी कक्षाओं की व्यवस्था उत्तम हो जावेगी। इस योजना में उज्जैन के वे शिक्षक पुनः रिक्त स्थान हो जावेंगे। परन्तु उनकी नियुक्ति अस्थायी होने से ऐसा होना स्वाभाविक ही है। चूंकि उन्होंने सेन्ट्रल स्कूल में काम किया है तथा वह राजी हो तो उज्जैन को जाने की प्रथम संधि दी जाय तो ठीक होगा। मेरा मत ऐसा है कि, भविष्य में अपने सेन्ट्रल स्कूल की ओर मुख्यतः ध्यान देना इष्ट होगा। यहाँ सभी शिक्षक अच्छे कैसे हुए, चतुर ही रखना हितकर होगा। अपना सेन्ट्रल स्कूल अब प्रगति पथपर है। धीरे-धीरे वह एक आदर्श विद्यालय बन रहा है। इसी दृष्टि से यह सूचना की है।

चौथी सूचना है कि, श्री राजाभैया, भास्करराव व गुणे इनका कार्य प्रतिवर्ष अच्छा प्रतीत होने के कारण स्वीकृत हुई पदोन्नति उन्हें इस वर्ष से मेहरबान सरकार यदि प्रदान करें तो आनन्द की बात होगी। मेरे मत से ये शिक्षक उस पदोन्नति के पात्र हुए हैं। इसी प्रकार: हेडमास्टर के लिए स्वीकृत तरक्की दी जाना अच्छा ही है, ऐसी मेरी नम्र सूचना है। उसपर विचार करना शिक्षा विभाग पर निर्भर है।

तवायफ स्कूल में परीक्षा के लिए मैं गया था। कम उम्र की सात-आठ लड़कियाँ प्राथमिक शिक्षण की तथा एक पहिले की थी। स्कूल की तालीम में कोई खास बात प्रतीत नहीं हुई। यहाँ पर होने वाले व्यय के अनुमान में आज तक कुछ भी कार्य नहीं दिखाई दिया, ऐसा मैं प्रतिवर्ष कहता आया हूँ तथा इस वर्ष भी मेरा यही मत है। प्रशिक्षित एवं अनुभवी शिक्षकों के बिना वहाँ पर यश मिलने की सम्भावना बहुत कम है।

अभी-अभी प्रारम्भ की हुई तबला-पखावज-हारमोनियम की कक्षायें मैंने देखीं। उनका काम ठीक चल रहा है। इन कक्षाओं के विद्यार्थियों को अन्य व्यवसायों के कारण समय थोड़ा ही मिलता है। फिर भी उनका शिक्षण अभी तो ठीक ही चल रहा है। सभी प्राथमिक शिक्षण लिखित रूप से हो, ऐसा अपने विद्यालय का एक उत्तम नियम है। अतः इन वाद्यों के कक्षाध्यापकों ने अपनी-अपनी पुस्तकें लिखने का कार्य प्रारम्भ किया है जो ठीक ही है। और एक वर्ष के बाद पुस्तकें तैयार होकर सभी काम सुव्यवस्थित होगा, ऐसा शिक्षकों का कहना है। वह किस प्रकार होता है देखा जाय।

इस वार्षिक-परीक्षा का फल मय रिपोर्ट के साथ सादर प्रस्तुत है।

आपका

दिनांक ७-११-१९२७

वि. ना. भातखंडे

परीक्षक

नौ-तलाव गेस्ट हाउस,
लश्कर, दि० १९-११-२८

मेहरबान, रावसाहब जी० व्ही० अंबर्डेकर,
डे० इन्स्पेक्टर जनरल आफ एज्युकेशन,
ग्वालियर

की सेवा में,

आपके आज्ञापत्र दिनांक १५ अक्टूबर १९२८ के अनुसार माधव संगीत विद्यालय की वार्षिक परीक्षा लेने हेतु शनिवार दिनांक १० नवम्बर १९२८ को मैं लश्कर आ पहुंचा। विद्यालय की परीक्षा का कार्य सोमवार दिनांक १२ से प्रारंभ किया, और कल रविवार दिनांक १८ को वह समाप्त हुआ। परीक्षाफल इसके साथ प्रस्तुत कर रहा हूँ। इस वर्ष सब कक्षाओं का कार्य मुझे संतोषजनक प्रतीत हुआ। प्रथम वर्ष से छात्रों को छोटी-छोटी तानें सिखाने का उपक्रम अच्छा सधा हुआ है, ऐसा उनके कक्षा कार्य से दिखाई दिया। सारांश यह उपक्रम अच्छा सिद्ध होगा, यह स्पष्ट है।

(आगे की दस पंक्तियां खण्डित हैं)

क्रमिक पहली पुस्तक में से स्वरवाचन के कुछ पाठ नहीं पढ़ाये गये, यह मैंने शिक्षकों से पहिले ही बताया था। इन पाठों को तैयार करने से इस पुस्तक में दिये हुये रागों के अंग व स्वरस्थान अच्छे हो सकते हैं। परीक्षा में प्रथम वर्ष के छात्रों से ये पाठ मैंने पढ़वाये, किन्तु कुछ लड़कों से वे रटवाये नहीं गये अर्थात् उनका अभ्यास नहीं करवाया गया; ऐसा देखने में आया। ये पाठ बड़ी सोच समझ कर तथा जान बूझ कर पहिली पुस्तक में समाविष्ट किये हैं। उनका अस्खलित पठन होना चाहिए। और तो क्या, वे इस प्रकार तैयार हुए बिना लड़कों को तानें सिखाना व्यर्थ है, ऐसा मैं कहूँगा। वैसे ही कालसाधन यानी नोटेशन का पाठ भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। वह अच्छी प्रकार सधे बिना शिक्षकों को चीजें नहीं सिखानी चाहिए, ऐसा मुझे लगता है। प्रथम वर्ष में बहुत से छात्रों को उन पाठों के पढ़ने में कठिनाई प्रतीत हुई। इस पाठ के अन्तर्गत समस्त भाग शिक्षक ने उत्तम रीति से तथा शीघ्रता से पढ़कर सुनाना चाहिए तथा विद्यार्थियों से पढ़वाना चाहिए। कुछ लड़के होनहार तथा अच्छी आवाज वाले होते हैं, किन्तु अधिक गैरहाजिर रहने से उनकी तैयारी अधकच्ची रहती है। इस प्रकार की शिकायतें शिक्षकों की ओर से बारबार मेरे पास आती हैं। इस सम्बन्ध में मेरी यह सूचना है कि जो लड़के हमेशा गैरहाजिर रहते हैं या जिनकी उपस्थिति कम से कम कुल उपस्थिति की आधी नहीं होती, उनको वार्षिक परीक्षा में सम्मिलित न किया जाने का नियम बनाया जावे।

(आगे की ९ पंक्तियाँ पूर्णतः खण्डित हैं)

अपने विद्यालय में तबले की एक कक्षा है। उस कक्षा में निःशुल्क शिक्षा दी जाती है। इन विद्यार्थियों में से एक-दो विद्यार्थियों को गायन के दूसरे व तीसरे दर्जे में एकाध घंटा साथ-संगत के लिए यदि कहा जाय तो दोनों का ही हित होगा। तबला और मृदंग बजाने वाले विद्यार्थियों के लिए साथ-संगत करना, यह उनके शिक्षा का ही एक अंग है। इसलिए विद्यालय का यह कार्य वे स्वीकार करेंगे, ऐसा मुझे विश्वास है। यह कार्य विद्यार्थियों को नौकरी के तौर पर नहीं करना है। तबले के विद्यार्थियों को गायन की साथ-संगत के लिए भेजने से उन्हें साथ-संगत करने की संधि मिलेगी और गायन की कक्षाओं को भी तबले की संगत का लाभ होगा। इस प्रकार साथ-संगत करने वाले विद्यार्थियों का कार्य यदि हेडमास्टर को संतोषजनक दिखाई दिया तो वे उन्हें भविष्य में २) रुपये छात्रवृत्ति मिलने हेतु सिफारिश करेंगे। वस्तुतः साथ-संगत करना, यह शिक्षा का ही एक अंग होने से उसके लिए छात्रवृत्ति देने की कोई आवश्यकता नहीं है। जो विद्यार्थी इस प्रकार साथ-संगत करने के लिए तैयार नहीं होंगे, उन्हें विद्यालय में निःशुल्क शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार नहीं रहेगा; यह स्पष्ट है।

अपने विद्यालय में तबला व मृदंग की कक्षा है और वह जिस शिक्षक के तरफ है, उन्होंने आज दो वर्ष हो गये, परन्तु अपनी पाठ्यक्रम की पुस्तकें तैयार नहीं कीं।

(आगे की ११ पंक्तियां खण्डित हैं)

इस विद्यालय में प्रत्येक विषय की तालीम मौखिक एवं पुस्तक के माध्यम से दी जावे, ऐसा विद्यालय का नियम है। तालीम शिक्षकों के मर्जी पर रखने से विद्यालय का हित नहीं होता, यह मेरा अनेक वर्षों का अनुभव है। जो शिक्षक अपना अभ्यासक्रम पुस्तकरूप से प्रसिद्ध करने के लिए तैयार न हों, उन्हें इस विद्यालय में नियुक्त ही न किया जावे, यह मेरी नम्र सूचना है। तात्पर्य, तबला व मृदंग की दो क्रमिक पुस्तकें हेडमास्टर साहब को उनसे प्राप्त होने तक उन शिक्षकों को प्रमोशन न दिया जावे, यह मेरा सुझाव है।

इसी प्रकार यह नियम हार्मोनियम व सितार की कक्षाओं को भी लागू किया जाय, यह अलग से बताने की जरूरत नहीं। हार्मोनियम के शिक्षक ने अपनी पहिली क्रमिक पुस्तक मुझे बताई। उनका यह उपक्रम मुझे ठीक लगा। हार्मोनियम में ठुमरी, दादरे छोटे-छोटे गीत तथा चलती लय के ख्याल आदि अच्छे बजते हैं। अतः इस प्रकार के लोकप्रिय गीतों का समावेश पुस्तक में किया जाना इष्ट होगा। मि० माधवराव के लिए राजाभैया व चुन्नीलाल जी की मदद से इस प्रकार के गीतों का समावेश अपनी पुस्तक में करना हितकर होगा। उन्होंने अपनी पुस्तक में जो गीत दिए हैं, वे कुछ उच्च प्रति के मुझे प्रतीत नहीं हुए। उन्हें बदलने की सूचना मैंने दी है। चलती लय की चीजों का संग्रह मि० राजाभैया से प्राप्त कर लेना हित कर होगा। उन्हें ऐसा करने की संधि दी जाए।

(आगें का कुछ भाग खण्डित है)

तवायफ स्कूल के प्रिंसिपल भी नृत्य विषय पर अपनी कुछ पुस्तकें तैयार कर रहे हैं। पुस्तक का कुछ अंश उन्होंने मुझे दिखाया, जो मुझे अच्छा मालूम हुआ। पुस्तकें तैयार होने पर उनके मुद्रण की व्यवस्था विद्यालय द्वारा कराई जाय। इन पुस्तकों की माँग देश

के अन्य भागों में होगी। यदि ऐसा न हुआ तो भी इस विषय पर पुस्तकें प्रकाशित करने की प्रवृत्ति देश में बढ़ेगी और यह भी इष्ट होगा।

यहाँ मैं और एक सूचना करना चाहता हूँ, जो इस प्रकार है। चूंकि माधव संगीत विद्यालय यह सम्पूर्ण देश में एक ही प्रमुख विद्यालय होने जा रहा है, और उसमें से उत्तीर्ण हुए विद्यार्थियों की चारों ओर से माँग हो रही है। अब इस विद्यालय के लिए महाराजा सिन्धिया गोल्ड मेडल नाम से एक मेडल रखा जाय और प्रतिवर्ष विद्यालय की अंतिम परीक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होकर प्रथम स्थान प्राप्त करनेवाले विद्यार्थी को वह दिया जाय। इस प्रकार मेडल घोषित होने पर उसे प्राप्त करने के हेतु बाहर से भी विद्यार्थी आने लगेंगे। इस मेडल को देखकर नगर के बड़े-बड़े सरदारों के मन में भविष्य में मेडल देने की इच्छा होगी और उनके द्वारा भिन्न-भिन्न कक्षाओं में उत्तीर्ण होकर प्रथम स्थान पानेवाले विद्यार्थियों को रौप्य मेडल दिए जावेंगे। उन मेडल्स पर उन-उन सरदारों के नाम अंकित किये जायँ। ऐसा होते-होते भविष्य में ग्वालियर में ही संगीत का विश्वविद्यालय बनेगा, ऐसी मुझे आशा है।

(आगे की ११ पंक्तियाँ खंडित हैं)

मैं और एक सूचना करना चाहता हूँ, जो इस प्रकार है:—

विद्यालय में फायनल परीक्षा उत्तीर्ण विद्यार्थियों का एक वार्षिक जलसा आयोजित कर महाराजा मेडल इस जलसे में ही दिया जाय। इस जलसे से विद्यार्थियों का उत्साह बढ़ेगा और चारों ओर उनकी ख्याति होती रहेगी। फाइनल परीक्षा उत्तीर्ण छात्रों के नाम गजेट में प्रकाशित होते हैं अथवा नहीं, मैं नहीं जानता। उत्तीर्ण हुए विद्यार्थियों के लिये डिप्लोमा यानी एक प्रकार की अध्यापकों की सनद ही होने से उनके नाम सरकारी गजेट में जाहिर होना हित कर होगा। उनके नाम जाहिर होने से चाहे जो गायक 'हम ग्वालियर से शिक्षित हैं' ऐसा नहीं कह सकेंगे और डिप्लोमा भी नहीं बता सकेंगे। यदि यह सूचना अधिकारियों की दृष्टि से अमल में लाने योग्य हो तो उस सम्बन्ध में अनुकूल विचार किया जावे। मेरी एक सूचना यह है कि, मि० तांबे साहब व प्रो० बाजपेई साहब को दो अथवा तीन साल के लिए विद्यालय के आफिशियल व्हिजिटर्स नियुक्त किये जायँ। उनको इस विषय का ज्ञान होने से वे समय-समय पर विद्यालय में पधारकर शिक्षकों के कार्य का निरीक्षण करेंगे और उन्हें योग्य सलाह देंगे। विद्यालय की आवश्यकताएँ अथवा कमियों को सेक्रेटरी साहब के सम्मुख प्रस्तुत करेंगे। मुझे लगता है कि, उक्त दोनों सज्जन यह सूचना पसन्द करेंगे। विद्यालय पर इस प्रकार की देखभाल रहने से उसमें पर्याप्त सुधार होगा, ऐसा मुझे विश्वास है। अब विद्यालय में भिन्न-भिन्न कक्षाएँ प्रारम्भ हो जाने से उसका काम बढ़ गया है। हेडमास्टर साहब को अन्य कार्य होने से सब तरफ ध्यान देना कठिन होगा। यह सूचना योग्य प्रतीत होती हो तो उक्त दो व्हिजिटरों की नियुक्ति की जाय।

(अग्रिम अंश खण्डित है)

और एक सूचना करने की मेरी इच्छा है और वह तवायफ स्कूल के सम्बन्ध में है। इस स्कूल की गायकी के सम्बन्ध में मुझे प्रतिवर्ष अपनी रिपोर्ट में असमाधान व्यक्त करना

पड़ता है। इस वर्ष भी व्यक्त कर रहा हूँ। यदि तवायफ स्कूल अपने शिक्षा विभाग की एक स्थायी संस्था समझनी है तो उसकी ओर अधिक ध्यान देना क्रमप्राप्त है। इस स्कूल में जो दो स्त्रियाँ उच्च प्रति का गायन गाने योग्य हो गई हैं, उन्हें मैं सात-आठ वर्षों से देखता आया हूँ। वे पाँच-छः बड़े ख्यालों के अतिरिक्त ख्याल गायन में और कुछ भी नहीं गा सकतीं। स्त्रियों के गाने योग्य चीजें ठुमरी, गजल आदि वे गाती हैं। किन्तु अभी उन्हें ग्वालियर की वह प्रसिद्ध गायकी नहीं गाते बनती, जो मंगोबाई आदि स्त्रियाँ गाती हैं। वह गायकी सीखने की उन्हें प्रबल इच्छा है, ऐसा प्रतीत हुआ। यदि वे ग्वालियर के बाहर कहीं गाने के लिए गईं तो वहाँ उनका दर्जा बहुत ही नीचे का रहेगा, ऐसा मुझे लगता है। इन समस्त बातों को ध्यान में रखते हुए मैं ऐसा सूचित करना चाहता हूँ कि इस वर्ष अपने विद्यालय से उत्तीर्ण विद्यार्थियों में से एक स्कालर पसन्द करके उसे वहाँ के प्रिन्सिपल के नियन्त्रण में दिया जाय और इन दो स्त्रियों का ख्यालगायन उसे सौंप दिया जाय। वह शिक्षक इन सीनियर लड़कियों को हफ्ते में दो या तीन बार विलम्बित ख्यालों की शिक्षा दिया करें। ख्याल सिखाने का कार्य वहाँ के प्रिन्सिपल के तरफ देने में अब कोई अर्थ नहीं। यह कार्य उनसे निकाल लेने पर उन्हें सेन्ट्रल स्कूल के विद्यार्थियों को ठुमरी सिखाने का कार्य दिया जाय।

(अग्रिम कुछ पंक्तियाँ खंडित हैं)

अपने माधव संगीत विद्यालय में विद्यालय का पत्रव्यवहार सम्हालने हेतु अभी तक कोई लेखक नियुक्त नहीं किया गया है। उसका समस्त कार्य श्री राजाभैया को अपने निजी समय में करना पड़ रहा है। शायद काम अधिक न होने के कारण अभी तक लेखक नहीं दिया गया, ऐसा लगता है। फिर भी, चूंकि राजाभैया अपने निजी समय में यह कार्य करते आये हैं, इसलिये यदि उन्हें पाँच रुपये अतिरिक्त वेतन दिया गया तो न्यायोचित होगा। इस सूचना पर विचार किया जाना सम्भव हो तो वह अवश्य किया जाय।

सर्वसाधारण रूप से इस वर्ष विद्यालय का काम संतोषजनक दिखाई दिया। उसमें विशेष रूप से मि० विष्णुपन्त, मि० सदाशिवराव, मि० गुणे इनका कार्य अधिक संतोषप्रद रहा। फायनल में इस वर्ष आठ विद्यार्थी सर्टिफिकेट देने योग्य हुए देखे गये, जिनमें से एक की कुछ रागों की गायकी जितनी अच्छी होनी चाहिये उतनी नहीं हुई, ऐसा मि० राजाभैया से ज्ञात हुआ। अतः मेरी यह सूचना है कि, यद्यपि वे उत्तीर्ण हुए हैं, जब तक उन शेष रागों की गायकी तैयार कर राजाभैया का समाधान नहीं करते, तब तक उन्हें प्रमाणपत्र न दिया जाय। तैयार होने पर ही दिया जाय। शेष सात विद्यार्थियों को इस वर्ष प्रमाणपत्र दिये जायँ।

(अग्रिम भाग खंडित है)

### आगामी वर्ष की कक्षा-व्यवस्था आदि

इस बार प्रिपरेटरी कक्षा से इक्कीस लड़के परीक्षा में सम्मिलित हुए। उनमें से ग्यारह अच्छे स्वरज्ञान वाले ऊपर की कक्षा में चढ़ाने योग्य थे। इसके अतिरिक्त लगभग पंद्रह लड़के स्कालर शिक्षक के पास हैं। अतः अब पहिले वर्ष की कक्षा में उपरोक्त ग्यारह

लड़के व कुछ अनुत्तीर्ण हुए लड़के रहेंगे। चालू सत्र में पहली कक्षा के दो विभाग थे। इन दोनों विभागों से पाँच लड़के उत्तीर्ण हुए, जिन्हें मिलाकर पहले वर्ष के अभ्यासक्रम के लिये सोलह लड़के हो जावेंगे। स्कालर शिक्षक के पास पुराने व नये प्रवेश के लड़के बहुत हो जाने पर उन लड़कों के दो विभाग किये जायँ। एक स्कालर शिक्षक को दिया जाय व दूसरा हेडमास्टर रख लें। जनवरी के अन्त में पुनः स्वरज्ञान की परीक्षा लेकर जो लड़के अच्छे प्रतीत होंगे, उनका प्रथम वर्ष का और एक विभाग किया जाकर उसे स्कालर शिक्षक को सौंप दिया जाय। ऐसा करने से प्रथम वर्ष के पुनः दो विभाग हो जावेंगे। ऐसे दो-तीन विभाग रहना हितकर ही है। जो लड़के उत्तीर्ण होंगे, वे दूसरे वर्ष में जावेंगे।

(अग्रिम पंक्तियाँ खंडित हैं)

वि. ना. भालेराव

Examiner

नौतलाब गेस्ट हाउस,
लश्कर, दि० २१-११-२९

श्री माधव संगीत विद्यालय,
वार्षिक परीक्षा, नवंबर १९२९,
रिपोर्ट एवं रिजल्ट्स,

मेहरबान रावसाहब,
जी० व्ही० अंबर्डेकर,
की सेवा में

आपके पत्रानुसार दि० ८ नवंबर १९२९ को बंबई से रवाना होकर दूसरे दिन अर्थात् दिनांक ९ नवंबर शनिवार को ग्वालियर में उपस्थित हुआ। और सोमवार दिनांक ११-११-२९ से परीक्षा का कार्य प्रारंभ किया। विद्यालय में कक्षाएं अधिक होने के कारण और बीच में दो दिन मेरा स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण परीक्षा का कार्य आज समाप्त हुआ।

भिन्न-भिन्न कक्षाओं में जो बातें देखी गईं, उन्हें कक्षाओं के परीक्षाफल के पत्रों पर मैंने अंकित की हैं। इस वर्ष की परीक्षा में जो कुछ ज्ञात हुआ तत्सम्बन्ध में सूचनाएँ देने का यहाँ पर विचार है।

(१) यह खेद से कहना पड़ रहा है कि इस वर्ष नीचे की तीनों कक्षाओं का अर्थात् प्रिपरेटरी व प्रथम वर्ष की कक्षाओं का कार्य जितना ठीक होना चाहिये था, उतना संतोषप्रद नहीं हुआ। कक्षा के शिक्षकों में बार-बार परिवर्तन होना, यह एक तथा छात्रों की लापरवाही, यह दूसरा कारण बताया गया। प्रिपरेटरी कक्षा में स्वरज्ञान कराने का प्रयत्न नहीं हुआ, उसी प्रकार स्वरस्थानों पर भी योग्य ध्यान नहीं दिया गया। तात्पर्य इन कक्षाओं की देखभाल अच्छी नहीं हुई, यही कहना पड़ेगा। प्रथम वर्ष की कक्षा में अभ्यासक्रम पूर्ण कर कुछ बातें भी बताई गयी हैं, परन्तु तानें ताल को छोड़कर गायी जाती हैं, अतः प्रारंभ से ही तानें ठेके के साथ गाने की आदत डालना हितप्रद होगा। ठेका लगाने के लिये अब तबला कक्षा के विद्यार्थी हैं ही।

**द्वितीय वर्ष** : दूसरी कक्षा का बहुतांश अभ्यासक्रम गायकी सहित पूर्ण हुआ है। परंतु एक राग तोड़ी सिखाना शेष रह गया। उसी प्रकार ध्रुवपद का काम पिछड़ा हुआ देखा गया। श्री बलवंतराव के समय जो ध्रुवपदों की गायकी होती थी, वह अब पीछे पड़ जाना ठीक नहीं है। इसके अतिरिक्त अनेक छात्रों के स्वरस्थान बेढब और तानें ताल में नहीं थीं। इन छात्रों को भी शुरू से ठेके के साथ सिखाना लाभप्रद होगा। बड़े ख्याल विद्यार्थी अच्छी तरह नहीं गा सके। अतः हेडमास्टर का ध्यान इस बात पर जाना आवश्यक है।

**तृतीय वर्ष** : कक्षा तीसरी में दो राग नहीं सिखाए गए। अब यह कार्य आगामी वर्ष के कक्षाध्यापक को करना पड़ेगा, अर्थात् उसे पूर्ण करने में उसका समय व्यतीत होगा और अपना नियमित काम पिछड़ जायगा। इस कक्षा में बड़े लड़कों के भर्ती की ओर जितना अधिक ध्यान दिया जायगा, उतना हितप्रद होगा। ध्रुवपद के काम नहीं सिखाए गये। पाठान्तर ठीक हुआ है।

**चतुर्थ वर्ष** : कक्षा चौथी के विद्यार्थियों का पाठान्तर ठीक पाया गया। परन्तु ख्याल सुडौल रीति से प्रस्तुत करना, उसे भरना विद्यार्थियों को सिखाया हुआ नहीं देखा गया। विद्यार्थियों की तानें स्पष्ट थीं व बीच-बीच में लय ताल छोड़ जाती थीं। इस बाबत मैंने शिक्षकों को एवं हेडमास्टर को समझा दिया है।

**पंचम वर्ष** : फाइनल अर्थात् पंचम वर्ष कक्षा में प्रमाणपत्र देने योग्य विद्यार्थी इस वर्ष मुझे तीन ही दिखाई दिए। शेष दो की तैयारी उत्तम होने में अभी लगभग छः मास की अवधि है। आगामी अप्रैल माह में इनकी पुनः परीक्षा लेकर यदि योग्य तैयारी देखी गई तो सार्टीफिकेट देने बाबत विचार किया जा सकेगा। उसी कक्षा में और तीन छात्र हैं। उनकी तैयारी अच्छी न होने के कारण उन्हें आगामी वर्ष के लिए रखा जाय। एक छात्र की उपस्थिति तो केवल छब्बीस दिन पाई गई। फाइनल की इस कक्षा में थियरी बहुत कमजोर है। इस ओर शिक्षक ने विशेष ध्यान देना चाहिए।

## विशेष सूचना

विद्यालय के हेडमास्टर प्रतिवर्ष दो-चार माह तक श्रीमन्त महाराज साहब से साथ बाहर रहते हैं, ऐसा अनुभव से देखने में आया है। इसलिए मैं सूचित करना चाहता हूँ कि उनके पास हेडमास्टर का कार्य न रखते हुए अब राजाभैया को उक्त कार्य सौंपा जाये। अर्थात् भविष्य में राजाभैया की नियुक्ति हेडमास्टर के स्थान पर की जाय तथा उन्हीं पर पूरे विद्यालय की तालीम की जिम्मेदारी सौंप दी जाय। अनेक वर्षों से वे प्रथमवर्ष का कक्षा-कार्य कर रहे हैं। अतः ऐसी नियुक्ति में किसी प्रकार की अड़चन उत्पन्न होने की सम्भावना नहीं है। मुझे तो लगता है, राजाभैया को वह पद देना सर्वथा योग्य होगा।

इस प्रकार राजाभैया का दर्जा बढ़ा देने के कारण उन्हें वेतन वृद्धि देना क्रमप्राप्त ही है। इसलिए मेरी यह सूचना है कि हेडमास्टर नियुक्त करने पर उनका वेतन जो रुपये ५० है, वह रुपये ६० किया जाय। उनसे शिक्षा पाकर बाहर गये हुए विद्यार्थी प्रति माह १०० रुपये प्राप्त कर सकते हैं, ऐसा देखा गया है।

वर्तमान हेडमास्टर को इस प्रकार से पदमुक्त कर देने पर उन्हें संगीत विभाग का सुपरवाइजर बना दिया जाय, ऐसी मेरी सूचना है। वे विद्यालय के एक कमरे में अपना छोटा-सा आफिस रखें और जब ग्वालियर में हों, तब नियमित रूप से विद्यालय में उपस्थित होकर समस्त कक्षाओं के कार्य पर ध्यान दें। प्रत्येक कक्षा में जाकर छात्रों का ख्याल गायन सुनकर स्वरस्थान, ताल आदि बातों पर ध्यान दें व उस सम्बन्ध में श्री हेडमास्टर महोदय की सेवा में सुझाव पेश करें। इसके अतिरिक्त स्थानीय भिन्न-भिन्न जगहों में अथवा शहरों में खोले गये विद्यालयों को भी खुद जाकर देखें और सेक्रेटरी साहब को रिपोर्ट करें। इस

सुपरविज़न की एक डायरी रखें और उसमें रोज किया हुआ कार्य लिख रखें। यह डायरी सेक्रेटरी साहब की ओर भेजकर उस पर उनके हस्ताक्षर प्राप्त करें।

समस्त कक्षाओं में बड़े ख़्याल की गायकी का कार्य किस प्रकार चल रहा है, यह राजाभैया समय-समय पर जाकर देखें और उसमें सभी उचित सुधार तत्काल किया करें। विद्यालय की तालीम का समस्त उत्तरदायित्व उन पर ही रहेगा।

आजकल विद्यालयों में कार्यालय एक बड़ी अड़चन का विषय हो गया है। विद्यालय के समय में राजाभैया को यह कार्य करना पड़ता है, जिससे लड़कों का बहुत नुकसान हो रहा है। इस सम्बन्ध में मैं यह सूचित करूँगा कि, कार्यालय का काम अलग-अलग विभागों में बाँटा जाकर भिन्न-भिन्न शिक्षकों को सौंप दिया जाय। राजाभैया के पास केवल वार्षिक रिपोर्ट लिखने का कार्य दिया जाय। हेडमास्टर के नाते उनकी जवाबदारी अधिक बढ़ जाएगी, इसलिए उन्हें अन्य कार्य न दिया जाय।

सुपरवाइजर जब शहर में हों, तब वे भी कार्यालय का कुछ भार अपने ऊपर लें, जिससे अन्य शिक्षकों को अपने नियमित कार्य करने के लिए समय मिलता रहेगा।

तबला व मृदंग कक्षा के शिक्षक ने अभी तक अपनी पुस्तक तैयार नहीं की, जिससे कार्य में बहुत कठिनाई आ रही है। अपने विद्यालय में पुस्तक के माध्यम से शिक्षा देने की प्रथा होने से मेरी यह सूचना है कि, आगामी अप्रैल तक ये शिक्षक अपनी पुस्तकें तैयार कर हेडमास्टर को सादर करें। यदि उन्होंने ऐसा नहीं किया तो वरिष्ठ अधिकारी उन्हें इस कार्य के लिए बाध्य करे। साथ ही उन्हें आदेश दिया जावे कि, उनका सम्बन्ध विद्यालय के साथ होने से हेडमास्टर के हुकुम की तामील करना इष्ट है। शनिवार की बैठक का नियम उनकी कक्षा के लिए भी लागू है, यह उन्हें समझाया गया है। इस विषय में शिक्षकों की कुछ गलत धारणा हो गयी थी, यह ध्यान में आने के कारण जान बूझकर यह सूचना मैं दे रहा हूँ। शनिवार के दिन शिक्षक सीनियर लड़कों को अपना गायन सुनाते हैं, उस समय तबला शिक्षक उपस्थित रहें और हेडमास्टर के कहने पर शिक्षकों के साथ तबला अथवा पखावज पर संगत करें और उनके हिलमिल कर रहें।

विद्यालय में दो तबलची हैं। उन्हें चौथी और पाँचवीं कक्षा में भेजा जाय। निम्नस्तरीय कक्षाओं में तबला क्लास के लड़कों को बारी-बारी से उनकी तरफ भेजना हितकर होगा। ऐसा करने से तबला सीखने वाले विद्यार्थियों को साथ करने की संधि मिलेगी और उनका हित होगा। लड़के पसन्द करना हेडमास्टर पर सौंपा जाय। साथ करने के लिए यदि विद्यार्थी इन्कार करें तो उन्हें विद्यालय में शिक्षण न दिया जाय।

इस समय सितार की एक छोटी-सी कक्षा प्रारम्भ हुई है। और उस पर मि० मालवनकर की नियुक्ति हुई है। इस कक्षा में विद्यार्थियों की संख्या बढ़ने पर बाबू खाँ के नाती अहमद खाँ को शिक्षक नियुक्त करना अनुचित न होगा। किन्तु यह नियुक्ति छात्र-संख्या पर निर्भर रहेगी। यदि अहमद खाँ विद्यालय में नौकर हुए तो उनकी तालीम की पुस्तक तैयार करने के लिए मि० मालवनकर को कहा जाय।

विद्यालय की एक शाखा उज्जैन में दो साल से खोली गई है, उसकी स्थिति अपेक्षाकृत संतोषजनक नहीं है। इस सम्बन्ध में मेरा सुझाव है कि, सेन्ट्रल स्कूल के शिक्षकों

में से एक प्रौढ़ व अनुभवी शिक्षक कम से कम एक वर्ष के लिए उज्जैन भेजा जाय। ऐसा न करने से वह विद्यालय बन्द करने की परिस्थिति आ सकती है। इस सूचना पर शीघ्र विचार होना आवश्यक है।

भिन्न-भिन्न मोहल्लों में प्रथम वर्ष का अभ्यासक्रम पढ़ाने हेतु कक्षाएँ खोलना हितकर होगा। वैसा ही एक-दो प्रमुख शहरों में विद्यालय की शाखाएँ प्रारम्भ करने से संगीत की अभिरुचि बढ़ेगी और उसका प्रसार भी अच्छा होगा।

माधव संगीत विद्यालय को अब बारह वर्ष हो चुके हैं, और उसकी कीर्ति सम्पूर्ण देश में फैल गई है, यह कहने की आवश्यकता नहीं। इस विद्यालय से उत्तीर्ण ग्रेज्युएट्स अन्यत्र प्रोफेसर की हैसियत से कार्य कर रहे हैं, यह बात सर्वविदित है। सम्पूर्ण देश में कहीं भी अपने विद्यालय से अधिक उच्चतर का शिक्षण नहीं दिया जाता, यह मैं जानता हूँ। इसलिए मेरी नम्र सूचना है कि, अपने विद्यालय को अब 'माधव संगीत कालेज' यह नाम दिया जाय। कुछ समय बाद यदि पोस्ट ग्रेज्युएट कक्षा प्रारम्भ करनी पड़ी, तो वह चलाने के लिये आवश्यक साहित्य, पुस्तकें, अभ्यासक्रम आदि उपलब्ध हो सकेगा; किन्तु इस कक्षा की आज आवश्यकता नहीं है। लखनऊ मैरिस कालेज में भी अपने विद्यालय के अनुसार शिक्षा देने की वर्तमान योजना है।

अब धीरे-धीरे स्टेट के प्राथमिक व मिडिल स्कूल्स में संगीत विषय प्रारंभ किया जाना हितप्रद होगा। इस संबन्ध में अभ्यासक्रम आदि निश्चय हेतु तज्ञों की एक कमेटी बनाई जाय। इस काम में मेरे अनुभवों का कुछ उपयोग हो सकता हो तो कमेटी को अपनी राय और सहायता देने में मुझे आनन्द होगा। किन्तु यह कार्य पूर्ण विचार करने के पश्चात् ही हाथ में लेना ठीक होगा।

मेरी और एक सूचना इस प्रकार है कि, प्रत्येक माह के अन्त में विद्यार्थियों का उस माह के अभ्यास का एक डिमांस्ट्रेशन रखा जाय, जो समस्त संगीतप्रेमी लोगों के लिए खुला हो। इस अवसर पर शिक्षकों एवं पुराने छात्रों को भी अपनी कला का प्रदर्शन जनता के सम्मुख करने के लिए कोई प्रतिबन्ध न हो। इस प्रदर्शन के लिए सुपरवाइजर महोदय स्वयं जाकर प्रतिष्ठित सज्जनों को निमंत्रित करें।

शिक्षकगण विद्यालय में समय पर उपस्थित नहीं होते हैं और यदि होते भी हैं, तो पूर्ण समय तक शिक्षण कार्य नहीं करते हैं। प्रायः विद्यालय की छुट्टी समय के पूर्व ही करके घर चले जाते हैं। बातचीत में व्यर्थ समय बिताते हैं, इन बातों की ओर हेडमास्टर साहब बिलकुल ध्यान नहीं देते, यह बात मेरे कानपर उन विद्यार्थियों द्वारा आई थी, जो खासकर गाना सीखने के लिए ही बाहर गाँवों से ग्वालियर आये हुए हैं। इस समाचार में विशेष तथ्य नहीं होगा, ऐसी मुझे आशा है। फिर भी यदि ऐसा कुछ होता हो तो हेडमास्टर साहब ने समय पर ही ध्यान देना हितकर होगा। ठीक पाँच बजे समस्त शिक्षक विद्यालय में उपस्थित हैं अथवा नहीं, यह स्वयम् हेडमास्टर को ही जाकर देखना चाहिये। मस्टर पर उपस्थित के हस्ताक्षर करने की एवम् उपस्थिति का समय अंकित करने की प्रथा तो विद्यालय में होगी ही। यदि न हो तो प्रारम्भ की जाना हितप्रद होगा। सवा पाँच होने पर चपरासी ने मस्टर हेडमास्टर के टेबल पर लाकर रखना चाहिए, जिससे कौन-कौन

से शिक्षक आये हैं और कौन से नहीं, तुरन्त मालूम होगा। इस ओर सुपरवाइजर महोदय भी ध्यान दें, तो वह हितप्रद होगा।

गत वर्ष अपने सम्माननीय विजिटर श्री ताम्बे साहब व श्री बाजपेई साहब कितनी बार विद्यालय में पधारे, उन्होंने आकर क्या रिमार्क दिए और कौन सी सूचनाएँ दीं, उनमें से कौन-कौन-सी अमल में लाई गईं आदि बातें हेडमास्टर साहब ने मेरे सामने नहीं रखीं। उक्त सज्जन जब भी विद्यालय में पधारे, तब उनके सामने विजिटर्स बुक प्रस्तुत करना, यदि वे उचित समझें तो सूचनाएँ देने संबंध में उन्हें विनंति करना यह कार्य हेडमास्टर का है। बाहर के बड़े लोगों को विद्यालय का काम देखने हेतु आमंत्रित करने का कार्य सुपरवाइजर ही अच्छा कर सकते हैं। उसे वे ही करें तो ठीक होगा। मैं सोचता हूं कि, यह आमन्त्रण प्रत्येक माह में होनेवाले डिमांस्ट्रेशन के अवसर पर दिया जाना ठीक है। ऐसा करने से विद्यालय में किस प्रकार का कार्य चल रहा है, यह उन्हें विदित होकर उत्तरोत्तर उनकी सहानुभूति बढ़ती रहेगी। प्रत्येक डिमांस्ट्रेशन के दो दिवस पूर्व बोर्ड पर सूचना लगाई जाए।

विद्यालय में सिखाए जानेवाले ख्यालों की गायकी अर्थात् तानें आदि अब पूरी लिखी जा चुकी हैं। इन तानों की दो छोटी-छोटी पुस्तकें 'तान-मालिका' इस नाम से शासन की ओर से मुद्रित करना एक बड़ा कार्य होगा। ऐसी पुस्तक की माँग चारों ओर से हो रही है। यह कार्य थोड़े ही खर्च का और अति आवश्यक है। गायकी की इन पुस्तकों का देश की गायकी पर भी कुछ परिणाम होना सम्भव है। अपनी पुस्तकें प्रकाशित होने पर गायकी की और भी पुस्तकें देश में प्रकाशित होने लगेंगी। और ग्वालियर की गायकी का जोर से प्रचार होगा। अपनी आज की चार हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तकों में १५०० चीजें हैं। इन चीजों के लिए उपयुक्त गायकी प्रकाशित होना आवश्यक है। यह कार्य खुद राजाभैया ने कर रखा है। उन्हें ऐसा कहा जाने पर गायकी की पुस्तकें वे दो-तीन महीने में तैयार कर देंगे। उनकी इस मेहनत के लिए शासन की ओर से उचित पारिश्रमिक दिया जाना अनुचित नहीं होगा। तानमालिका पुस्तकों में क्रमिक पहिली, दूसरी, तीसरी और चौथी पुस्तकों की गायकी आनी चाहिए। पुस्तकें तैयार हो जाने पर उन्हें विद्यालय से क्रय करने की सुविधा सभी को मिलनी चाहिए। अल्पावधि में ही शासन ने किए हुए खर्च की भरपाई हो जावेगी। पुस्तक पर हेडमास्टर राजाभैया का नाम अंकित करने से पुस्तकों का प्रसार अधिक होगा। इसी प्रकार सितार, तबला, पखावज आदि की पुस्तकों का काम भी हाथ में लेने योग्य है। ग्वालियर कालेज की तालीम में कुछ त्रुटि न रहे, यही मुख्य उद्देश्य है। पुस्तकों के अभाव में संगीत कला की आज तक कितनी हानि हुई, यह कहने की अवश्यकता नहीं।

तबला और पखावज की कक्षाओं का कार्य ठीक चल रहा है। विद्यालय में ताल विषयक 'अभिनय तालमंजरी' के श्लोक पढ़ाए जाते हैं, यह अच्छा ही है। विद्यार्थियों से पर्याप्त मेहनत ली जा रही है, यह भी देखने में आया। इन तैयार हुए विद्यार्थियों को भिन्न-भिन्न कक्षाओं में ख्याल, ध्रुवपद, धमार आदि गीतों की साथसंगत मिलने से सबका हित होगा। आगामी वर्ष में इनके अभ्यासक्रम की पुस्तकें प्रकाशित हो जाने पर

कार्य अधिक सुलभ होगा और विद्यालय के यश में वृद्धि होगी। इन कक्षाओं के परीक्षाफल संलग्न हैं।

हार्मोनियम कक्षा का कार्य आस्ते-आस्ते, किन्तु ठीक चल रहा है। यह कक्षा शहर के वयस्क विद्यार्थियों के लिए होने के कारण और वे इस विषय को लगन से, किन्तु अल्प समय तक ही सीखते हैं; इस कारण यह शिक्षा उत्तम एवं अधिक आकर्षक होना कठिन है। फिर भी इस परिस्थिति में शिक्षक अपना कर्त्तव्य उत्साहपूर्वक करते हैं और सब कार्य लिखित रूप में तथा व्यवस्थित ढंग से कर रहे हैं, ऐसा देखा गया। परीक्षाफल संलग्न है। इन कक्षाओं में अपनी विद्यालय की पुस्तकों में से सरल चीजें व सरगमें सिखाना यदि वे उचित समझें तो सिखा सकते हैं।

इस वर्ष ध्रुवपद का काम पिछड़ गया है, यह मैंने कहा ही था। इस संबंध में यह सूचित करना चाहता हूँ कि, ध्रुवपद गायकी का कार्य आगामी वर्ष श्री बलवंतराव के पुत्र तात्या मास्तर जो मराठा बोर्डिंग में कार्य कर रहे हैं, उन्हें दिया जाए। वे ध्रुवपद की गायकी जानते हैं और वह सिखाने की उनकी इच्छा भी है, ऐसा ज्ञात हुआ है। मराठा बोर्डिंग का अपना कार्य सम्हालते हुए यह नया कार्य करने के लिए यदि वे तैयार हों तो भी प्रत्येक शिक्षक की ध्रुवपद संबंधी जिम्मेदारी समाप्त हुई, ऐसा न समझा जाय। यह तो उन शिक्षकों को अतिरिक्त सहायता के रूप में किया जा रहा है।

सितार की कक्षा बिलकुल नई होने के कारण उस संबंध में लिखना नहीं चाहता हूँ। इस कक्षा की पुस्तकें प्रकाशित होने पर उसमें विद्यार्थियों की संख्या बढ़ेगी और वे अपना कार्य शीघ्रता से करेंगे।

इस वर्ष के वार्षिक परीक्षा का वृत्तांत अंकित किया है और उचित सूचनाएँ भी दी हैं। उनमें से जो सूचनाएं उचित प्रतीत होगीं तथा अमल में लाने योग्य होगीं, उन्हें शीघ्र कार्यान्वित किया जावेगा, ऐसी आशा है।

वि. ना. भातखंडे

प्रतिनिधि

नौतलाब गेस्ट हाउस,
लश्कर-ग्वालियर,
दिनांक ११-११-१९३०

मेहरबान जी० व्ही० अम्बर्डेकर साहब,
सेक्रेटरी,
माधव संगीत कालेज,
की सेवा में,

गत मास में प्राप्त आपके आज्ञापत्र के अनुसार मैं दिनांक ३१ अक्टूबर १९३० को बंबई से रवाना हुआ और दिनांक १ नवंबर, शनिवार को ग्वालियर आकर उपस्थित हुआ। सोमवार दिनांक ३ से कालेज की वार्षिक परीक्षा का कार्य प्रारम्भ किया। रोज ४ से ७ तक ३ घंटे परीक्षा का कार्य चलता रहा और वह कल दिनांक १० सोमवार को समाप्त हुआ। परीक्षा के परिणाम इस रिपोर्ट के साथ संलग्न हैं। परीक्षा में जो-जो बातें देखी गईं, उन्हें निम्न प्रकार से प्रस्तुत कर रहा हूँ।

इस वर्ष प्रिपरेटरी तथा प्रथम वर्ष की दो कक्षाओं का कार्य संतोषप्रद प्रतीत नहीं हुआ। प्रिपरेटरी कक्षा में उन्नीस छात्र होते हुए केवल आठ प्रथम वर्ष कक्षा में भेजने योग्य देखने में आये। परंतु उनका भी स्वर-ज्ञान कोई अच्छा था, ऐसा नहीं। उनके स्वरस्थान अच्छे नहीं थे। ऐसा मालूम हुआ कि भरती के समय ५०-६० छात्रों ने प्रवेश प्राप्त किया था और उनमें से कम होते-होते उन्नीस छात्र परीक्षा में सम्मिलित करने योग्य शिक्षक की निगाह में आये। परीक्षा में कितने छात्र सम्मिलित नहीं किए और कुल हैं कितने, यह बात स्टेटमेन्ट से स्पष्ट नहीं हुई। प्रिपरेटरी कक्षाओं की दुर्दशा गत दो वर्षों से मेरी निगाह में आ रही है। इस कक्षा के प्रति बहुत ही लापरवाही हुई है। कक्षा पर जो शिक्षक नियुक्त हैं उन्हें न तो सिखाने का अनुभव है और न ही स्वरज्ञान कराने की तरकीबें मालूम हैं। यह कक्षा उनके अकेले के पास रखने से विद्यालय का हित नहीं होगा। नये भरती के छात्रों को शीघ्रता से स्वरज्ञान करवाकर उनका प्रथम वर्ष का पाठ्यक्रम प्रारम्भ कर दिया जाय, यह अपना उद्देश्य है। छात्रों का कण्ठ मधुर है और योग्य शिक्षक मिलने पर उन्हें स्वरज्ञान शीघ्र हो सकता है, ऐसा मैंने पाया। लड़कों को षड्ज में आवाज मिलाने में भी कठिनाई हुई, ऐसा देखने में आया। इस शिक्षक को दिसंबर तक और एक मौका दिया जाय। इस अवधि में लड़कों को अधिक तैयार कर ऊपर की कक्षा में चलने योग्य बना दें, और यदि उनकी ओर से यह नहीं हुआ तो उनके स्थान पर स्कालर की योजना की जावे, ऐसा मुझे लगता है।

प्रथम वर्ष की दोनों कक्षाओं का कार्य अपूर्ण एवं असंतोषजनक प्रतीत हुआ। विद्यार्थियों को तालज्ञान अच्छी प्रकार से नहीं हुआ था। उनकी तानें गले से साफ नहीं निकलती थीं तथा बीच-बीच में वे बेताल व बेलय होती हुई पाई गईं। प्रथम वर्ष की कक्षा तो अपनी पद्धति की नींव है। लड़कों के स्वरस्थान अनेक बार बहुत ही खराब मालूम हुए। कुछ विद्यार्थी तो हार्मोनियम का स्वर छोड़कर ही गाते थे। कुछ विद्यार्थियों को तार षड्ज में मिलते न बना। परिणामस्वरूप उनका गायन बेसुरा तथा रसहीन लगने लगा। कुछ लड़कों को ठेके के बोलों की पहिचान न होने के कारण ताल से बाहर गई हुई तानों को सुधारते न बना। लड़कों को ठेके के बोलों की अच्छी पहचान करा देना शिक्षक का आद्य कर्तव्य है। इस हेतु प्रारम्भ के एक-दो माह में प्रतिदिन कम-से-कम पंद्रह मिनट उस कार्य में लगाना इष्ट है। एक बार बेताल और बेसुरा गाने की आदत विद्यार्थियों को लगने दी तो वह आखिर तक बनी रहेगी, इस ओर शिक्षक अवश्य ध्यान दें। प्रथम वर्ष में चार ही ताल होने से उनके बोल मुखोद्गत कराते हुए बजाने को सिखाया गया तो वह अति हितकर होगा। इस पहिले वर्ष के दोनों विभागों से परीक्षा में केवल नौ-नौ छात्र सम्मिलित किये गये थे। बाद में मुझे यह ज्ञात हुआ कि, इन कक्षाओं में और भी विद्यार्थी हैं। किन्तु उनका अभ्यास शिक्षकों को संतोषप्रद प्रतीत न होने के कारण उन्हें परीक्षा में सम्मिलित नहीं होने दिया। वस्तुतः ऐसा करना अनुचित है, कारण ७५ प्रतिशत उपस्थिति रहने पर विद्यार्थी को परीक्षा में बैठने देना चाहिये था। ऐसा करने से उत्तीर्ण विद्यार्थियों का प्रतिशत-प्रमाण बढ़ा है, परन्तु विद्यार्थियों के साथ भी अन्याय हुआ है। प्रत्येक कक्षा में विद्यार्थियों की संख्या कम और उन पर होनेवाला व्यय अधिक, ऐसा दिखने का संभव है। आगामी वर्ष में ऐसा न हो।

**द्वितीय वर्ष** : दूसरे वर्ष की कक्षा में सर्वसाधारणतः कार्य ठीक पाया। परीक्षा में ग्यारह विद्यार्थी सम्मिलित हुए थे, उनमें से सात उत्तीर्ण हुए। उन्हें ऊपर की कक्षा में प्रवेश देने में कोई बाधा नहीं। कक्षा में प्रत्येक राग में पाँच-पाँच तानें बताई गई हैं, किन्तु वे जितनी साफ निकलनी चाहिये, उतनी नहीं निकलतीं। बहुत से विद्यार्थियों के स्वरस्थान खराब देखे गये, और उनकी तानें बीच-बीच में बेताल होती हुई दिखाई दीं। इस कक्षा में भी प्रारम्भ से ही ठेके की पहचान करानी चाहिये, क्योंकि सच्ची गायकी इसी कक्षा से प्रारम्भ होती है। तबले की कक्षा का कोई विद्यार्थी इस कक्षा में रोज एक घण्टे के लिये देना हितप्रद होगा। तिलवाड़ा और एकताल—ये ख्यालगायकों के मुख्य ताल माने जाते हैं। अतः उनकी अच्छी पहचान होना इष्ट है। लड़के हाथ से ताल देकर चीज गा सकेंगे, किन्तु तानें लेते समय ऐसा भली प्रकार से करना संभव नहीं। ताल के बोलों की ओर देखकर ही गाने की आदत उन्हें लगनी चाहिये। इस ओर श्री हेडमास्टर का ध्यान जाना चाहिये। लड़कों का पाठान्तर ठीक पाया।

**तृतीय वर्ष** : तीसरे वर्ष की कक्षा समाधानकारक नहीं थी। इस कक्षा से ग्यारह विद्यार्थी परीक्षा में सम्मिलित हुए और उनमें से सात उत्तीर्ण हुए। गायकी का कार्य संतोषजनक नहीं पाया। प्रत्येक राग में एक छोटा ख्याल, एक बड़ा ख्याल और एक ध्रुवपद मय गायकी के तैयार होने चाहिये। लड़के नीचे की कक्षा का कार्य पूर्ण किये हुए नहीं होते हैं, कक्षोन्नति हो जाने पर बार-बार अनुपस्थित रहते हैं, पाठान्तर नहीं करते हैं, अभ्यास

की ओर ध्यान नहीं देते आदि बहाने व्यर्थ हैं। प्रत्येक राग में दस-दस तानें होनी चाहिये। बजाय इसके पाँच-पाँच तानें तैयार करने के लिए कहा जाने पर भी कार्य अपूर्ण व असंतोष-प्रद रहे, यह शिक्षक के लिए भूषणास्पद नहीं है। तीसरी कक्षा में पंद्रह राग संख्या अधिक है, यह भी एक कारण कहा गया था। परन्तु यह कठिनाई इतने वर्ष तक न आते हुए अब ही निर्माण हुई, यह भी आश्चर्य है। इस वर्ष दो राग कम किये जायँ, ऐसी सूचना मैंने हेडमास्टर को दी है। ऐसा करने से कक्षा में तेरह राग सिखाए जा सकेंगे। वैसे ही कुछ धमार भी कम करने की अनुमति मैंने दी है। ग्वालियर की तारीफ ख्याल गायन के लिए है, अतः वे गायकी सहित उत्तम रीति से तैयार हों; यह उद्देश्य है। श्री व जौनपुरी—ये दो राग इस कक्षा में न लेते हुए वे चौथी कक्षा को सौंप दिये जायँ, यह सूचना मैंने दी है। इस कक्षा में भी गाते-गाते स्वर छूट जाना और एकाध समय तानें बेताल हो जाना आदि प्रकार देखने में आया। मैं समझता हूँ इस कक्षा पर राजाभैया ने बहुत ध्यान देना चाहिए। विद्यालय के कार्य की सच्ची जवाबदारी इस वर्ष से ही प्रारम्भ होती है। चार लड़के इसी कक्षा में रह जावेंगे। कभी-कभी कक्षा में पर्याप्त छात्रसंख्या न होने के कारण कमजोर लड़कों को ऊपर की कक्षा में चढ़ाना कोई भूषणास्पद तो नहीं, किन्तु कहीं-कहीं मुझे ऐसा करने के लिए बाध्य होना पड़ता है। भविष्य में हर महीने में कम से कम एक बार तो भी जाकर राजाभैया ने प्रत्येक कक्षा के विद्यार्थियों की तथा शिक्षकों की हाजिरी एवं विद्यार्थियों की गायकी देखना हितकारक होगा।

**चतुर्थ वर्ष** : चतुर्थ वर्ष की कक्षा के शिक्षक कर्तव्यपरायण एवं उत्साही हैं। इनकी कक्षा से इस वर्ष सात विद्यार्थी परीक्षा में सम्मिलित हुए। उनमें एक विद्यार्थी बहुत ही कमजोर देखा गया, अतः उसे प्रमोशन न दिया जाय। इस कक्षा में भी नीचे से आए हुए विद्यार्थी अपूर्ण कोर्स किए हुए तथा गायकी में कमजोर थे, ऐसा सुना। यह सच भी हो सकता है, परन्तु ऐसा नहीं होना चाहिए। ऐसा होने से ऊपर की कक्षा के शिक्षक का कार्य अकारण बढ़ता है यह सच है, तथापि कक्षाध्यापक अपना समय विद्यार्थियों को देने के लिए तैयार रहते हैं और पिछला काम उनसे ठीक करा लेते हैं, ऐसा सुनकर संतोष हुआ। आगामी वर्ष में उन्हें बारह राग सिखाने होंगे। कारण, तीसरी कक्षा में दो राग छोड़ने की अनुमति मैंने दी है।

**पंचम वर्ष** : पंचम वर्ष की फायनल की कक्षा का कार्य पूर्ण हुआ है। यद्यपि विद्यार्थियों का कोर्स और गायकी पूर्ण हो चुकी है, तथापि उनके गायन में परिपक्वता, ढंग, महफिल का रंग, तानों की सफाई आदि बातें, जो हमेशा होनी चाहिए, उतनी उच्च स्तर की नहीं पाई गयीं। सात विद्यार्थी परीक्षा में सम्मिलित हुए और पाठान्तर व गायकी तैयार होने से वे सब उत्तीर्ण हुए, किन्तु उनके गायन में चमक दमक जितनी चाहिए, उतनी अभी नहीं आई; ऐसा कहना पड़ेगा।

इनमें से पाँच विद्यार्थियों को आगामी जलसे में प्रमाणपत्र देने में कोई बाधा नहीं। एक विद्यार्थी गत वर्ष का ही है, गायकी अपूर्ण होने से उसे प्रमाण-पत्र नहीं दिया था। अब उसने अपनी गायकी पूर्ण की है, अतः उसे प्रमाणपत्र देने में कोई आपत्ति नहीं। अभी सर्टिफिकेट के जलसे को कुछ समय है। इस अवधि में उन पाँच विद्यार्थियों को अपनी

गायकी में सुधार करने हेतु पर्याप्त समय मिलेगा, उसका लाभ वे अवश्य उठावें; ऐसी मैं सिफारिश करता हूँ। शेष दो विद्यार्थी अच्छे बुद्धिमान हैं, किन्तु उनकी गायकी उच्च स्तर की होने के लिए चार-पाँच महीनों का समय पर्याप्त नहीं है। अतः उनके सर्टिफिकेट्स आगामी जलसे में न दिये जायँ। नवम्बर तक ये दोनों विद्यार्थी उत्तम तैयार हो जावेंगे, यह मुझे विश्वास है। उस समय तक प्रतीक्षा करने में इनका हित है। सर्टिफिकेट देने के पश्चात् विद्यालय में आने का और गायकी की कमी को पूर्ण करने का अधिकार नहीं रहता, यह स्पष्ट है। इन दो विद्यार्थियों का वह अधिकार कायम रहे, इसीलिए इन्हें सर्टिफिकेट न दिये जाने के सम्बन्ध में मैंने सूचना दी है।

मराठा बोर्डिंग की संगीत कक्षा से कुछ विद्यार्थी इस वर्ष परीक्षा में सम्मिलित हुए थे। इस कक्षा की ओर से यह पहला ही प्रयत्न था और उस दृष्टि से वह अच्छा रहा। उस कक्षा में मुझे कुछ विद्यार्थी होनहार दिखाई दिये। मुख्यतः विद्यार्थियों को पर्याप्त स्वरज्ञान हुआ दिखाई दिया। उनका इन्टोनेशन भी अच्छा था। एक साल के हिसाब से कार्य कम पाया गया। किन्तु इन विद्यार्थियों को संगीत विषय के लिए समय कम मिलने के कारण उनका कार्य सेन्ट्रल विद्यालय जैसा होना संभव नहीं था, यह स्पष्ट है। दूसरी बैच में बहुत से विद्यार्थी अभी कमजोर हैं। यह प्रयत्न इसी प्रकार जारी रहकर इस कक्षा में से भी धीरे-धीरे ग्रेज्युएट तक के विद्यार्थी निकलें, यह मेरी मनोकामना है। कुछ लड़कों के कण्ठ मधुर हैं व उचित प्रयत्न करने पर वे उत्तम रीति से गा सकेंगे, ऐसी मुझे उम्मीद है। इस कक्षा को जितना अधिक उत्तेजन मिलेगा, उतना अच्छा होगा। दूसरी बैच में से एक विद्यार्थी का अभ्यास अच्छा था। यद्यपि यह सब सच है, तथापि आपका ध्यान एक बात की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। मराठा बोर्डिंग की संगीत कक्षा में छात्र बहुत कम हैं। क्या इतने छात्रों के लिए अधिक वेतन प्राप्त करनेवाला शिक्षक रखना उचित होगा? एक कक्षा में कम से कम पंद्रह विद्यार्थी होने चाहिए, ऐसा अपना नियम है। यदि वे उतने न हों तो सेन्ट्रल स्कूल के शिक्षकों को बाहर भेजना सुविधाजनक नहीं होगा। इसलिए मुझे लगता है कि, यह कक्षा केवल मराठा बोर्डिङ्ग के विद्यार्थियों तक ही मर्यादित न रखते हुए, बाहर के समस्त छात्रों के लिये खुली रखी जानी ठीक होगा। बोर्डिंग के अधिकारियों को यदि यह सूचना ठीक प्रतीत हुई, तो उसे अमल में लाने का प्रयत्न किया जाय। अन्यथा मि० तात्या सांवले को पुनः सेन्ट्रल स्कूल में बुलाया जाकर उनके पास हेडमास्टर उचित कक्षा दें।

इस वर्ष तबला-पखावज कक्षा की परीक्षा मि० पर्वतसिंह के सुपुत्र की मदद से ली गई। उन्हें "एक्सपर्ट" के नाते सहायता के लिए आमंत्रित किया गया था। इस कक्षा में अभ्यासक्रम पूर्ण किए हुए दो विद्यार्थी देखने में आये। इन दो विद्यार्थियों को आगामी जलसे में सर्टिफिकेट देने में हर्ज नहीं। शेष विद्यार्थियों का कार्य ठीक चल रहा है।

इस वर्ष गायन की तीसरी, चौथी तथा पाँचवीं कक्षाओं की थियरी की लिखित परीक्षा के परिणाम संलग्न हैं। पेपर किस प्रकार लिखे जाते हैं, यह समझाया ही गया है।

आगामी वर्ष में तबला व पखावज कक्षा की परीक्षा भी लिखित व मौखिक होना निश्चित किया है और उसकी जानकारी शिक्षक एवं विद्यार्थियों को दी है।

सितार कक्षा का कार्य अभी तक संतोषप्रद नहीं है। इस कक्षा से केवल चार विद्यार्थी परीक्षा में दाखिल किए गए थे। समयावधि के प्रमाण में कार्य कम ही देखा गया। मेरे मत से सितार कक्षा में कम से कम बारह विद्यार्थी होने चाहिए। सितार "एक्सपर्ट" अभी तक विद्यालय को प्राप्त नहीं हुआ, यह स्पष्ट है। उसके प्राप्त होने तक यश मिलना सम्भव नहीं।

हार्मोनियम कक्षा में कुल चौदह विद्यार्थी परीक्षा में सम्मिलित हुए थे। उनमें से दो तृतीय वर्ष के, पाँच द्वितीय वर्ष के और सात प्रथम वर्ष के थे। तृतीय वर्ष के विद्यार्थी कुछ ठीक बजाते हैं, फिर भी उन्हें अभी तक हार्मोनियम का खास बाज साध्य हुआ नहीं दिखाई दिया। मेरा ख्याल है कि उन्हें अभी बहुत मेहनत करनी चाहिए।

### आगामी वर्ष के लिए कुछ सूचनाएँ

नए भरती के अनुसार स्कालर की नियुक्ति होनी चाहिए। उस स्कालर को चाहिए कि नये छात्रों को तीन माह में स्वर का ज्ञान कराकर, अलंकार सिखाकर, प्रथम वर्ष के कोर्स में दाखिल करा दें और यही इस प्रवेश कक्षा का ध्येय है। इस कक्षा में एक-एक दो-दो साल तक छात्रों को पिसवाना नहीं चाहिए। यदि वे नियमित रूप से न आते हों, तो हाजिरी रजिस्टर से उनके नाम कम किये जाकर हेडमास्टर सेक्रेटरी साहब को रिपोर्ट करें और उनकी आज्ञा के अनुसार कार्य करें।

परसों श्रीमन्त महारानी साहिबा से मैंने विनंति की कि, सितार सिखाने के लिए सरकारी नौकर को कुछ अतिरिक्त वेतन देकर हफ्ते में तीन दिन विद्यालय में सितार सिखाने की आफिशियल सूचना दी गई तो विद्यालय के सितार कक्षा का बहुत हित होगा। महारानी साहिबा को यह सूचना पसन्द आई और यह कल्पना मेम्बर साहब के सम्मुख रखने के लिए मुझे आज्ञा दी। उक्त महाशय को दरमाह रुपये १५) अलौंस पर हफ्तें में तीन बार बुलाया गया तो बहुत ही अच्छा होगा। महारानी साहिबा की ऐसी स्पष्ट इच्छा देखकर ही यह बात मेम्बर साहब के सम्मुख प्रस्तुत करते की मैं विनन्ति कर रहा हूँ।

श्रीमन्त महारानी साहिबा ने मुझे यह भीं कहा है कि, इसी प्रकार अलौंस देकर···का उपयोग यदि हार्मोनियम कक्षा के लिए हुआ, तो उन्हें पसन्द होगा।

V. N. Bhatkhande
Examiner